PRGI-CTHIN/26/A2900

मासिक पत्रिका

दर्शन बालोद

पत्रकारिता का नया युग प्रारंभ

✦ वर्ष-01 ✦ अंक-03 ✦ जुलाई -2026 ✦ बालोद से प्रकाशित ✦ पृष्ठ-52 ✦ मूल्य-150 रुपये

ना भूलें 'बलिदान उनका, जिनसे आज़ाद हैं हम,
आओ मिलकर करें प्रण, देश का मान बढ़ाएं हम।

आओ मिलकर प्रण करें, स्वच्छ, सशक्त और समृद्ध भारत का निर्माण करें।
प्रधानमंत्री
श्री नरेंद्र मोदी जी
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
श्री विष्णु देव साय जी
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ
INDIA
एक भारत श्रेष्ठ भारत सशक्त भारत समृद्ध भारत
उन वीरों को नमन, जिनकी शहादत से सुरक्षित है हमारा वतन, आओ मिलकर करें उनके सपनों का भारत और भी महान।
अमर जवान
प्लास्टिक मुक्त गाँव बनाएं, स्वच्छ और स्वस्थ भारत बनाएं।
गाँव में स्वच्छता बनाये रखें, स्वस्थ गाँव सुंदर गाँव।
बाल विवाह एक सामाजिक अपराध है, इसे रोकें, समाज को सशक्त बनाएं।
चेमन देशमुख
अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी
जिला बालोद (छ.ग.)
जय हिंद ! • वन्दे मातरम् !! भारत माता की जय !!!

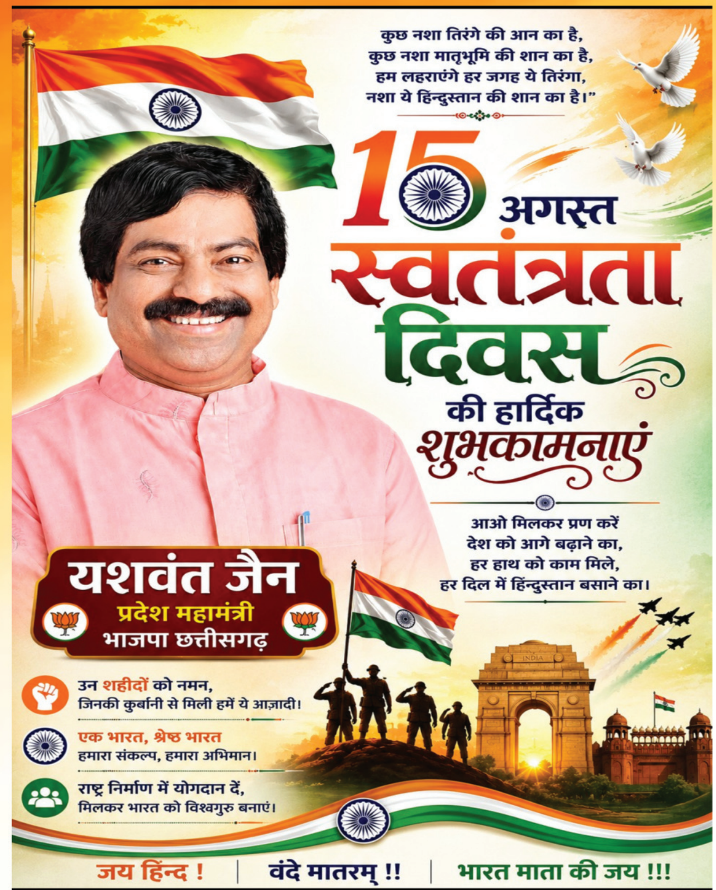

कुछ नशा तिरंगे की आन का है, कुछ नशा मातृभूमि की शान का है, हम लहराएंगे हर जगह ये तिरंगा, नशा ये हिन्दुस्तान की शान का है।"
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
आओ मिलकर प्रण करें देश को आगे बढ़ाने का, हर हाथ को काम मिले, हर दिल में हिंदुस्तान बसाने का।
यशवंत जैन
प्रदेश महामंत्री
भाजपा छत्तीसगढ़
उन शहीदों को नमन, जिनकी कुर्बानी से मिली हमें ये आज़ादी।
एक भारत, श्रेष्ठ भारत
हमारा संकल्प, हमारा अभिमान।
राष्ट्र निर्माण में योगदान दें, मिलकर भारत को विश्वगुरु बनाएं।
जय हिंद ! | वंदे मातरम् !! | भारत माता की जय !!!

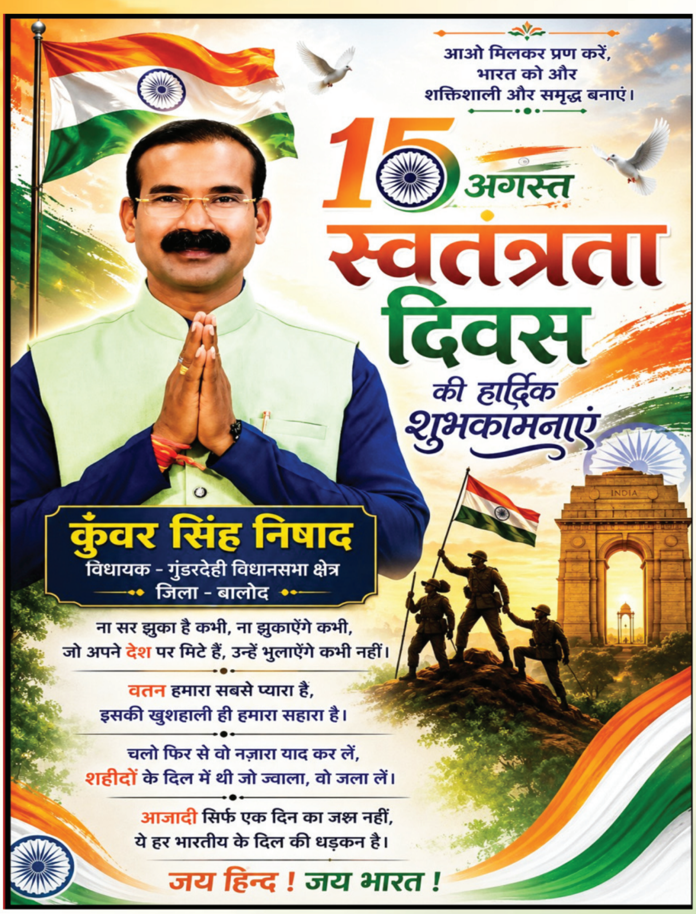

आओ मिलकर प्रण करें, भारत को और शक्तिशाली और समृद्ध बनाएं।
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
INDIA
कुंवर सिंह निषाद
विधायक - गुंडरदेही विधानसभा क्षेत्र
जिला - बालोद
ना सर झुका है कभी, ना झुकाएंगे कभी, जो अपने देश पर मिटे हैं, उन्हें भुलाएंगे कभी नहीं।
वतन हमारा सबसे प्यारा है, इसकी खुशहाली ही हमारा सहारा है।
चलो फिर से वो नज़ारा याद कर लें, शहीदों के दिल में थी जो ज्वाला, वो जला लें।
आजादी सिर्फ एक दिन का जश्न नहीं, ये हर भारतीय के दिल की धड़कन है।
जय हिन्द ! जय भारत !

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
15th August
INDEPENDENCE DAY
अनिला भेड़िया
विधायक
डौंडीलोहारा
विधानसभा क्षेत्र
अनिल लोढ़ा, प्रदेश प्रतिनिधि
छत्तीसगढ़ कांग्रेस कमेटी

दर्शन बालोद मासिक पत्रिका
पत्रकारिता का नया युग प्रारंभ

स्वामी एवं प्रकाशक : माधुरी यादव

संपादक

माधुरी यादव

प्रधान संपादक-दीपक यादव

सलाहकार संपादक	तीरथ राज फूटान
विधिक सलाहकार	अधिवक्ता नीतू सोनवानी

ब्यूरो/ संवाददाता

बालोद -	संतोष कुमार साहू, अरुण साहू, चित्ररेखा साहू
दल्लीराजहरा -	गुंजा डेविड(मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव)
जुंगेरा -	लेखराम साहू
भरदाकला (अर्जुंदा)	क्रांति भूषण साहू
रेंगाडबरी (डौंडीलोहारा)	नेमन साहू
डौंडीलोहारा	धर्मेंद्र निषाद
डौंडी	विक्की जायसवाल
खेरथाबाजार(देवरी बंगला)	यशस्वी कटझरे
गुंडरदेही	प्रेम प्रकाश साहू
घोटिया (डौंडी)	शशिकांत निषाद, खेमलता सोरी
करहीभदर	दीपक मसीह
निपानी	ईश्वर लाल गजेंद्र
सिकोसा (हल्दी)	रूपचंद जैन
लाटाबोड़	कुलेश्वर प्रसाद आसनिक
गुरुर ब्लॉक	सूर्यकांत साहू,वीरेंद्र साहू
पुरूर (फागुनदाह)	अनिल साहू
डूंडेरा (अर्जुंदा)	छबि लाल कोर्राम
घीना (सुरेगांव)	रूपसिंह रावटे
डंगनिया (अंडा)	संजय कुमार साहू , उदय साहू

स्वामी एवं प्रकाशक माधुरी यादव एवं मुद्रक संदीप तिवारी राज द्वारा छत्तीसगढ़ प्रिंटर्स एन्ड पब्लिशर्स, अनंत विहार कॉलोनी दलदल सिवनी मार्ग मोवा- रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492014 से मुद्रित कर वार्ड क्रमांक-13 जगन्नाथपुर, सांकरा आबादीपारा-बालोद, छत्तीसगढ़ -491226. जिला - बालोद (छ.ग.) से प्रकाशित।

संपादक- माधुरी यादव

*पी.आर.बी.एक्ट के तहत समस्त समाचार/लेखों के चयन के लिए जिम्मेदार

मोबाइल- 9755235270, 7067077434

Email ID darshanbalodnews@gmail.com

*(सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र बालोद होगा)

वर्ष-01 | अंक- 03 | जुलाई-2026

PRGI-CTHIN/26/A2900

3

सेनानी से संत बने रामलाल उर्फ शरणानंद की स्मृतियां आज भी बरही की धरती पर जीवंत

9

बालोद की धरती के उस कर्मयोगी की कहानी, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर ...

13. शिक्षक बने देशभक्ति के प्रहरी, जंगलों में घूमकर जलाए..
15. दुर्ग जिले के पहले गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी थे दाऊ ढालसिंह दिलीवार
17. धमतरी में गांधीजी को कंधे पर उठाकर मंच तक पहुंचाने वाले थे..
19. जब शिक्षक ने अंग्रेजों के खिलाफ उठाई आवाज, नौकरी छोड़ी ..
23. कंगला मांझी: बालोद की धरती से उठी वह आवाज, जिसने ...
27. गुरु पूर्णिमा विशेष: सेवा, साधना और समर्पण की मिसाल हैं नाड़ी ..
29. जीते जी चिकित्सा सेवा, जाते-जाते देहदान: डॉ. विनीता ध्रुवे ने मानवता ...
31. हेपेटाइटिस को लेकर जागरूकता ही बचाव का सबसे ...

विशेष सूचना : दर्शन बालोद मासिक पत्रिका के प्रत्येक अंक को घर बैठे प्राप्त करने के लिए हमारी संस्था की सदस्यता जरूर ग्रहण करें। जिसके तहत आपको 1000 प्रति वर्ष अग्रिम शुल्क जमा करना होगा। जिसके एवज में हम आपको हर महीने का अंक आप तक घर पहुंचा कर देंगे और आपकी खबरें भी इसमें प्रमुखता से प्रकाशित की जाएगी। बालोद जिले के अन्य बड़े-बड़े क्षेत्र में भी संवाददाता नियुक्त किए जाने हैं। किसी भी सुझाव और लेख, अपनी कहानी प्रकाशन के लिए हमें 9755235270 पर वाट्स एप या कॉल करें.

आजादी की अनसुनी गाथाएं: बालोद की मिट्टी के गुमनाम सेनानियों को नमन

प्रिय पाठकों,

देश की आजादी का इतिहास केवल बड़े नेताओं, प्रसिद्ध आंदोलनों और इतिहास की किताबों में दर्ज नामों तक सीमित नहीं है। भारत की स्वतंत्रता की नींव उन अनगिनत ज्ञात, अल्पज्ञात और गुमनाम वीरों के संघर्ष, त्याग और बलिदान से मजबूत हुई, जिन्होंने अपने समय में देश के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया। इन वीर सपूतों में अनेक ऐसे लोग भी थे, जिनकी कहानियां इतिहास के पन्नों में दर्ज होने के बावजूद आज हमारी स्मृतियों से धीरे-धीरे ओझल होती जा रही हैं। दर्शन बालोद मासिक पत्रिका का ये अंक 'आजादी विशेषांक' इसी भूली-बिसरी विरासत को सामने लाने का एक विनम्र प्रयास है। इस विशेषांक के माध्यम से हमारा उद्देश्य बालोद जिले की उस ऐतिहासिक विरासत को पाठकों के सामने लाना है, जिसमें हमारे गांवों, कस्बों और ग्रामीण अंचलों से निकलकर स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान देने वाले उन सेनानियों की गाथाएं छिपी हैं, जिनके नाम शायद आज की पीढ़ी बहुत कम जानती है। उपलब्ध अभिलेखों में रामलाल उर्फ शरणानंद जैसे संतो का नाम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में दर्ज होना इस बात का महत्वपूर्ण प्रमाण है कि बालोद-दुर्ग अंचल के ग्रामीण क्षेत्रों ने भी देश के स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी। उनका जीवन हमें यह समझने का अवसर देता है कि आजादी की लड़ाई केवल दिल्ली, मुंबई, कोलकाता या बड़े शहरों में नहीं लड़ी गई थी। यह संघर्ष गांव-गांव और कस्बे-कस्बे तक पहुंचा था। सत्याग्रह, जेल यात्रा, आंदोलन और त्याग के माध्यम से देश के सामान्य नागरिकों ने भी स्वतंत्रता की लड़ाई को मजबूती प्रदान की थी। लेकिन सवाल यह है कि हम अपने इन स्थानीय नायकों के बारे में कितना जानते हैं? कितने ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं, जिनके संघर्ष की कहानी उनके परिवारों, गांवों या पुराने दस्तावेजों तक सीमित होकर रह गई है? कितने ऐसे नाम हैं, जिन्हें आने वाली पीढ़ियां शायद कभी जान ही नहीं पाएंगी?

दीपक यादव
दर्शन बालोद
प्रधान संपादक

इतिहास का सबसे बड़ा सौंदर्य यही है कि वह केवल उन लोगों का नहीं होता, जिनके नाम इतिहास की किताबों में बड़े अक्षरों में लिखे गए हैं। इतिहास उन अनगिनत लोगों का भी होता है, जिन्होंने बिना किसी पद, प्रसिद्धि या पुरस्कार की अपेक्षा के देश के लिए संघर्ष किया। हमारे अल्पज्ञात और गुमनाम नायक भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि उनकी सामूहिक भागीदारी ने ही स्वतंत्रता आंदोलन को जनआंदोलन का स्वरूप दिया था।

बालोद सहित पूरे छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े ऐसे अनेक सेनानी रहे होंगे, जिनकी जीवनगाथाएं आज भी उनके परिवारों, गांवों और स्थानीय स्मृतियों में सुरक्षित हैं। कहीं पुराने संदूक में रखा कोई जेल प्रमाण पत्र, कहीं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मान से जुड़ा दस्तावेज, कहीं जिला गजेटियर के पन्नों में दर्ज कोई नाम और कहीं किसी बुजुर्ग की स्मृतियों में जीवित कोई कहानी—ये सभी हमारे इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं।

आज आवश्यकता है कि इन दस्तावेजों और स्मृतियों को खोजा जाए, सुरक्षित किया जाए और व्यवस्थित रूप से दस्तावेजीकृत किया जाए। बालोद जिले के गांव-गांव में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी स्मृतियों की खोज हो, स्थानीय इतिहास पर शोध हो और ऐसे सेनानियों की जीवनगाथाओं को सामने लाया जाए, तो निश्चित रूप से जिले के इतिहास का एक ऐसा महत्वपूर्ण अध्याय सामने आएगा, जो आने वाली पीढ़ियों को गौरव और प्रेरणा दोनों देगा।

स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान केवल उनकी जयंती और पुण्यतिथि मनाने तक सीमित नहीं होना चाहिए। उनके संघर्षों और विचारों को विद्यालयों, महाविद्यालयों, पुस्तकालयों, स्थानीय संग्रहालयों और सार्वजनिक आयोजनों के माध्यम से नई पीढ़ी तक पहुंचाना भी हमारी जिम्मेदारी है। इतिहास तभी जीवित रहता है, जब समाज उसे याद रखता है और अगली पीढ़ी को सौंपता है।

दर्शन बालोद का यह आजादी विशेषांक इसी जिम्मेदारी की दिशा में एक छोटा-सा प्रयास है। हमारा प्रयास है कि बालोद जिले की मिट्टी से जुड़े उन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की कहानियां सामने आएं, जिनका योगदान इतिहास के किसी कोने में दब गया है। हम चाहते हैं कि हमारे पाठक अपने गांव, अपने क्षेत्र और अपने परिवार से जुड़े ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों की जानकारी साझा करें, ताकि उनकी गाथाओं को संजोकर समाज और नई पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके।

रामलाल उर्फ शरणानंद जैसे सेनानियों का संघर्ष हमें याद दिलाता है कि आजादी किसी एक व्यक्ति, एक आंदोलन या एक दिन की देन नहीं थी। यह अनगिनत लोगों के संघर्ष, त्याग, साहस और बलिदान की अमर विरासत है। आज हम जिस स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं, उसके पीछे उन असंख्य लोगों की तपस्या है, जिन्होंने अपने वर्तमान को देश के भविष्य के लिए समर्पित कर दिया।

आइए, इस आजादी के अमृत काल में हम अपने जिले की मिट्टी में छिपी उन वीर गाथाओं को खोजें। उन ज्ञात, अल्पज्ञात और गुमनाम स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद करें, उनके इतिहास को संजोएं और उनकी कहानियों को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाएं।

क्योंकि आजादी केवल एक तारीख नहीं है—आजादी अनगिनत संघर्षों, त्यागों और बलिदानों से निर्मित वह अमर विरासत है, जिसे याद रखना और सुरक्षित रखना हम सभी का नैतिक दायित्व है।

सेनानी से संत बने रामलाल उर्फ शरणानंद की स्मृतियां आज भी बरही की धरती पर जीवंत

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

भारत की स्वतंत्रता केवल बड़े शहरों, राजनीतिक आंदोलनों और प्रसिद्ध नेताओं के संघर्ष का परिणाम नहीं थी। देश की आजादी की इस महान यात्रा में गांवों, वनांचलों और दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले अनेक ज्ञात, अल्पज्ञात और गुमनाम स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने भी अपना सर्वस्व न्योछावर किया। छत्तीसगढ़ की धरती भी ऐसे वीरों की कर्मभूमि रही है, जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध संघर्ष करते हुए जेल यात्राएं कीं और स्वतंत्रता आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बालोद अंचल की स्वतंत्रता संग्राम की विरासत भी इसी गौरवशाली परंपरा का हिस्सा है। इस क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों और उनके संघर्षों का इतिहास आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। 'दर्शन बालोद' के आजादी विशेषांक के माध्यम से ऐसे वीर सेनानियों की स्मृतियों और संघर्षों को जनमानस तक पहुंचाने का यह एक विनम्र प्रयास है।

सेनानी से साधु-संत तक का सफर : रामलाल उर्फ शरणानंद

बालोद जिले के बरही क्षेत्र से जुड़ा एक महत्वपूर्ण नाम रामलाल उर्फ शरणानंद का है। स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान देने वाले रामलाल ने जीवन के एक पड़ाव पर सेनानी की भूमिका निभाई और बाद के वर्षों में आध्यात्मिक जीवन को अपना लिया। उनका जीवन संघर्ष, त्याग और आध्यात्मिक साधना का अनूठा संगम रहा। उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार उनका जन्म सन् 1901 में हुआ था और उनके पिता का नाम रामसिंह बताया जाता है। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े दस्तावेजों में उनका नाम सेनानी के रूप में दर्ज है। उनका पूर्व स्थायी निवास फरसबोड़, पोस्ट धमधा, जिला दुर्ग बताया जाता है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उन्होंने दुर्ग के प्रसिद्ध अधिवक्ता घनश्याम सिंह गुप्त के नेतृत्व में हुए सत्याग्रह में भाग लिया। आंदोलन के दौरान वे अपने साथियों के साथ गिरफ्तार हुए और रायपुर जेल भेजे गए। उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार उन्होंने 21 फरवरी 1932 से 15 जुलाई 1932 तक कारावास भोगा। उनके स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होने के संबंध में केंद्रीय जेल रायपुर द्वारा 26 जून 1974 को प्रमाण पत्र जारी किए जाने का उल्लेख भी मिलता है। इस प्रकार रामलाल उर्फ शरणानंद का जीवन स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष से लेकर आध्यात्मिक साधना तक की एक प्रेरणादायी यात्रा के रूप में सामने आता है।

बरही की गुफाओं में साधना और आश्रम की स्थापना

आजादी के आंदोलन के बाद रामलाल उर्फ शरणानंद का जीवन आध्यात्मिक साधना की ओर मुड़ गया। दक्षिण के वनांचल क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए वे बरही के समीप स्थित गुफाओं और कंदराओं तक पहुंचे। यहां की प्राकृतिक सुंदरता, हरियाली, पक्षियों का कलरव और झरने की मधुर ध्वनि ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने इसी स्थान को अपनी साधना स्थली बना लिया। खोलडोंगरी वन आश्रम समिति बरही के पूर्व अध्यक्ष और ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष नरेन्द्र सिन्हा ने बताया कि कहा जाता है कि शरणानंद जी ने चट्टानों के बीच धूनी रमाई और गुफा में रहकर साधना करने लगे। प्रकृति के प्रति उनका गहरा लगाव था। धीरे-धीरे आसपास के ग्रामीण उनके पास आने लगे और उनके भजन-कीर्तन तथा आध्यात्मिक विचारों को सुनने लगे। समय के साथ उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैलती गई। ग्रामीण उन्हें विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक अवसरों पर आमंत्रित करने लगे। बाद में उन्होंने गुफा के भीतर ही अपनी कुटिया बनाई और सामने भगवान की पाषाण प्रतिमा स्थापित की। इस स्थान ने धीरे-धीरे एक आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक धरोहर का रूप ले लिया। रामलाल उर्फ शरणानंद का निधन 25 सितंबर 1997 को हुआ, लेकिन बरही क्षेत्र में उनकी स्मृतियां आज भी जीवित हैं। जिस प्राकृतिक स्थल को उन्होंने अपनी साधना से पहचान दी, वह आज क्षेत्र की महत्वपूर्ण विरासत के रूप में देखा जाता है।

यहां अखबार नहीं, इतिहास के पन्ने पूजे जाते हैं!

भारत माता के मंदिर में होती है अखबारों की पूजा, 100 साल से गांधी और राष्ट्रभक्ति की परंपरा कायम

गंगरेल डैम की डुबान के बीच बसे सटियारा गांव में अंग्रेजों के जमाने से आजादी के दौर तक के अखबार आज भी श्रद्धा से सुरक्षित

प्रधान संपादक दीपक यादव की कलम से , बालोद/धमतरी।

क्या आपने कभी ऐसा गांव देखा है, जहां अखबार सिर्फ पढ़े नहीं जाते, बल्कि पूजा भी की जाती है? जहां पुराने अखबारों के पन्नों को महज कागज नहीं, बल्कि देश की आजादी की लड़ाई की जीवित धरोहर माना जाता है? जहां अंग्रेजी हुकूमत के दौर में प्रकाशित समाचार पत्रों से लेकर स्वतंत्रता आंदोलन के समय की खबरों तक को आज भी श्रद्धा और सम्मान के साथ सहेजकर रखा गया है? अगर नहीं, तो बालोद जिले के अंतिम छोर पर गंगरेल डैम की डुबान के बीच बसे धमतरी जिले के सटियारा (छठियारा) गांव की यह कहानी आपको जरूर हैरान करेगी। यहां अखबारों की पूजा होती है। जी हां, वही अखबार जिन्होंने कभी अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जनमत तैयार किया, देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना जगाई और स्वतंत्रता आंदोलन की खबरों को गांव-गांव तक पहुंचाया। सटियारा में ऐसे पुराने अखबारों को आज भी बेहद श्रद्धा के साथ देखा जाता है। यहां अखबार के पन्ने केवल खबरों का संग्रह नहीं, बल्कि उस दौर के संघर्ष, आंदोलन और देशभक्ति की निशानी माने जाते हैं। गंगरेल डैम की अथाह जलराशि, पहाड़ों और जंगलों के बीच बसा यह छोटा-सा वनवासी गांव अपने भीतर इतिहास का एक ऐसा अध्याय समेटे हुए है, जिसकी जानकारी शायद बहुत कम लोगों को है। यहां स्थित भारत माता मंदिर में राष्ट्रभक्ति केवल एक भावना नहीं, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही आस्था और परंपरा है।

जब अखबार बन गए आजादी के दस्तावेज

आज हम मोबाइल फोन पर कुछ सेकंड में देश-दुनिया की खबर पढ़ लेते हैं। लेकिन एक समय था जब अखबार ही जनता तक देश और दुनिया की खबर पहुंचाने का सबसे बड़ा माध्यम हुआ करते थे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में अखबारों ने अंग्रेजी हुकूमत की नीतियों के खिलाफ आवाज बुलंद करने और आम जनता में राष्ट्रीय चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसीलिए सटियारा गांव में पुराने अखबारों को लेकर एक अलग तरह की श्रद्धा देखने को मिलती है। अंग्रेजी शासन काल और आजादी के दौर में प्रकाशित अखबारों की प्रतियों को यहां इतिहास की धरोहर के रूप में संभालकर रखने की परंपरा रही है। इन पुराने पन्नों में स्वतंत्रता आंदोलन, महात्मा गांधी के आंदोलनों और कंडेल नहर सत्याग्रह जैसे महत्वपूर्ण घटनाक्रमों की खबरों की स्मृतियां जुड़ी हुई हैं। इन अखबारों को देखकर ऐसा लगता है मानो इतिहास के पन्ने हमारे सामने जीवित हो उठे हों। उन पीले पड़ चुके कागजों में दर्ज शब्द आज भी उस दौर की कहानी कहते हैं, जब देश गुलामी की बेड़ियों से आजाद होने के लिए संघर्ष कर रहा था।

अखबारों के प्रति ऐसी आस्था कि होती है पूजा!

सटियारा की सबसे बड़ी खासियत यही है कि यहां अखबारों को केवल सूचना का माध्यम नहीं माना जाता। अखबारों को उस संघर्ष का प्रतीक माना जाता है, जिसने देश को आजादी की राह दिखाई। यही कारण है कि पुराने अखबारों को सम्मान दिया जाता है और भारत माता के मंदिर से जुड़ी इस परंपरा में उन्हें विशेष स्थान प्राप्त है। यह परंपरा पत्रकारिता के इतिहास के लिहाज से भी बेहद महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जब अंग्रेजी शासन के खिलाफ लिखना आसान नहीं था, तब पत्रकारों और समाचार पत्रों ने जोखिम उठाकर जनता तक सच्चाई पहुंचाने का काम किया। कई समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय आंदोलन को आवाज दी और लोगों में स्वतंत्रता की भावना को मजबूत किया। आज जब सटियारा में इन पुराने अखबारों के प्रति श्रद्धा दिखाई जाती है, तो यह केवल अखबार का पूजन नहीं, बल्कि उन पत्रकारों, लेखकों और स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष को नमन भी है, जिन्होंने अपनी कलम को आजादी की लड़ाई का हथियार बनाया।

भारत माता यहां देवी हैं, अखबार उनकी स्मृतियों के साक्षी

सटियारा में भारत माता को देवी के रूप में पूजने की परंपरा भी इस गांव को देशभर से अलग पहचान देती है। चैत्र और शारदीय नवरात्र में यहां भारत माता के नाम से मनोकामना ज्योत प्रज्वलित की जाती हैं। हर वर्ष 100 से अधिक ज्योतें जलने की बात कही जाती है। वनवासी समाज के लिए भारत माता केवल एक प्रतीक नहीं, बल्कि जीवंत आस्था हैं। यहां राष्ट्र और प्रकृति को एक-दूसरे से जुड़ा हुआ माना जाता है। उनका विश्वास है कि देश सुरक्षित रहेगा तो जंगल, जल, जमीन और जीवन भी सुरक्षित रहेंगे। इसी भारत माता मंदिर परिसर में अखबारों का सुरक्षित रहना और उन्हें सम्मान मिलना इस पूरे स्थल को और भी विशिष्ट बना देता है। एक ओर भारत माता की आराधना, दूसरी ओर महात्मा गांधी की प्रतिमा और तीसरी ओर स्वतंत्रता आंदोलन की यादों को संजोए पुराने अखबार—तीनों मिलकर सटियारा को राष्ट्रभक्ति की एक अनोखी पहचान देते हैं।

1920 के कंडेल नहर सत्याग्रह की स्मृति भी जुड़ी

मंदिर परिसर में स्थापित महात्मा गांधी की एकाश्म पत्थर से बनी प्रतिमा भी इस स्थान के ऐतिहासिक महत्व को बढ़ाती है। स्थानीय मान्यता के अनुसार, वर्ष 1920 में कंडेल नहर सत्याग्रह के दौरान महात्मा गांधी के धमतरी आगमन से प्रेरित होकर आसपास के ग्रामीणों ने गांधीजी की प्रतिमा स्थापित कर उस दौर की राष्ट्रीय चेतना को जीवित रखने का प्रयास किया था। यानी सटियारा में आज भी केवल भारत माता की पूजा नहीं होती, बल्कि गांधीजी की स्मृतियां और स्वतंत्रता आंदोलन की पत्रकारिता भी एक साथ जीवित हैं।

हर शुभ काम से पहले भारत माता के दरबार में हाजिरी

गांव में आज भी किसी शुभ कार्य की शुरुआत भारत माता के मंदिर में अर्जी लगाने के बाद करने की परंपरा बताई जाती है। शादी-विवाह, मुंडन, सामाजिक आयोजन या किसी नए कार्य से पहले लोग यहां पहुंचकर भारत माता का आशीर्वाद लेते हैं। चुनाव के समय प्रत्याशियों द्वारा भी यहां पहुंचकर जीत की कामना करने की परंपरा बताई जाती है। इस तरह यह मंदिर गांव के लिए केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और लोकतांत्रिक आस्था का केंद्र भी बन गया है।

गंगरेल की डुबान में छिपा राष्ट्रभक्ति का अनोखा पर्यटन स्थल

गंगरेल डैम के प्राकृतिक सौंदर्य के बीच स्थित सटियारा का भारत माता मंदिर इतिहास और राष्ट्रभक्ति के साथ पर्यटन की दृष्टि से भी बेहद महत्वपूर्ण हो सकता है। यहां एक ओर विशाल जलराशि और प्राकृतिक सुंदरता है, तो दूसरी ओर स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी स्मृतियां, गांधीजी की प्रतिमा और पुराने अखबारों की धरोहर। यदि इन ऐतिहासिक अखबारों और दस्तावेजों को सुरक्षित रखने के लिए एक व्यवस्थित 'स्वतंत्रता संग्राम एवं पत्रकारिता संग्रहालय' विकसित किया जाए, तो यह स्थान छत्तीसगढ़ में अपनी तरह का अनूठा पर्यटन केंद्र बन सकता है।

अखबारों को बचाना यानी इतिहास को बचाना

आज डिजिटल दौर में पुराने अखबार तेजी से नष्ट हो रहे हैं। कागज

समय के साथ खराब होता है और यदि इन ऐतिहासिक दस्तावेजों का संरक्षण नहीं किया गया तो आने वाली पीढ़ियां इस अनमोल विरासत से वंचित हो सकती हैं। इसलिए सटियारा में सुरक्षित पुराने अखबारों का वैज्ञानिक तरीके से संरक्षण और डिजिटलीकरण किया जाना जरूरी है। क्योंकि यहां रखे अखबार सिर्फ पुराने कागज नहीं हैं। वे उस समय की आवाज हैं, जब भारत गुलाम था। वे उन पत्रकारों की कलम की गवाही हैं, जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपनी भूमिका निभाई। वे उन लोगों की स्मृति हैं, जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए संघर्ष किया। गंगरेल डैम की डुबान के बीच सटियारा की धरती पर आज भी जब भारत माता के नाम की ज्योत जलती है और पुराने अखबार श्रद्धा से देखे जाते हैं, तो ऐसा लगता है मानो इतिहास खुद कह रहा हो—"आजादी को केवल याद मत करो, उसे समझो उसके संघर्ष को जानो और उन पन्नों को संभालकर रखो, जिन्होंने कभी पूरे देश को जगाने का काम किया था।" सटियारा की कहानी इसलिए खास है, क्योंकि यहां अखबार पढ़े ही नहीं जाते—यहां अखबारों में दर्ज इतिहास को पूजा जाता है।

वर्तमान में इस नए स्वरूप में नजर आता है रेलवे स्टेशन

विकास की नई रफ्तार में बालोद रेलवे स्टेशन

वर्षों पुरानी समस्याओं से मिली आजादी, अमृत भारत स्टेशन योजना से बदली तस्वीर

17 जुलाई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअल लोकार्पण कर देश को समर्पित किया पुनर्विकसित बालोद स्टेशन

करीब 6 करोड़ की लागत से आधुनिक सुविधाओं से हुआ कायाकल्प

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

देश जब स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आजादी के संघर्ष और विकास की गौरवशाली यात्रा को याद करता है, तब बालोद रेलवे स्टेशन का बदला हुआ स्वरूप 'विकास की नई आजादी' की एक तस्वीर प्रस्तुत करता है। कभी यात्री सुविधाओं और आधुनिक व्यवस्थाओं की कमी से जूझने वाला बालोद रेलवे स्टेशन अब अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होकर विकास के नए दौर में प्रवेश कर चुका है। करीब 6 करोड़ रुपये की लागत से किए

पहले बालोद रेलवे स्टेशन ऐसा था

गए व्यापक पुनर्विकास के बाद स्टेशन की तस्वीर बदल गई है और वर्षों पुरानी समस्याओं से यात्रियों को काफी हद तक राहत मिली है। 17 जुलाई 2026 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से देशभर के 75 पुनर्विकसित रेलवे स्टेशनों का लोकार्पण एवं राष्ट्र को समर्पण किया। इसी क्रम में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रायपुर मंडल के बालोद एवं सरोना रेलवे स्टेशनों का भी वर्चुअल लोकार्पण किया गया। प्रधानमंत्री द्वारा लोकार्पित यह स्टेशन अब बालोद जिले में आधुनिक रेल सुविधाओं और विकास की नई कहानी लिखने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

आजादी के अमृत काल में विकास की नई तस्वीर

स्वतंत्रता दिवस हमें यह याद दिलाता है कि आजादी केवल अंग्रेजी शासन से मुक्ति का नाम नहीं, बल्कि देश के प्रत्येक नागरिक तक विकास और सुविधाओं को पहुंचाने की सतत यात्रा भी है। इसी भावना के साथ अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। बालोद रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास भी इसी विकास यात्रा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।आजादी के बाद देश ने विकास के अनेक पड़ाव पार किए हैं और अब छोटे शहरों तथा ग्रामीण अंचलों में भी आधुनिक सुविधाओं का विस्तार हो रहा है। बालोद रेलवे स्टेशन का नया स्वरूप इसी बदलाव का प्रतीक है। यात्रियों की वर्षों पुरानी परेशानियों से राहत और आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता को एक तरह से विकास की नई आजादी के रूप में देखा जा सकता है।

आधुनिक सुविधाओं से बदली स्टेशन की तस्वीर

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत बालोद स्टेशन पर आधुनिक स्टेशन भवन, विस्तृत सर्कुलेटिंग एरिया, नया प्रवेश क्षेत्र, सुव्यवस्थित प्रवेश एवं निकास द्वार, आधुनिक फुट ओवर ब्रिज, चार नए प्लेटफॉर्म शेल्टर, दिव्यांगजन अनुकूल सुविधाएं, आधुनिक यात्री सूचना प्रणाली, समर्पित पार्किंग क्षेत्र और ऊर्जा दक्ष एलईडी प्रकाश व्यवस्था विकसित की गई है। स्टेशन परिसर में यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बेहतर प्रतीक्षालय, स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित परिसर, उन्नत शौचालय और बैठने की पर्याप्त व्यवस्था भी की गई है। आधुनिक यात्री सूचना प्रणाली यात्रियों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराने में सहायक होगी, जबकि बेहतर प्रकाश व्यवस्था और सुरक्षा संबंधी सुविधाओं से स्टेशन परिसर अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक बनेगा। स्टेशन के सौंदर्यीकरण में छत्तीसगढ़ की लोककला एवं सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाले आकर्षक भित्तिचित्र भी विकसित किए गए हैं। इससे आधुनिक सुविधाओं के साथ बालोद और छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान की झलक भी यात्रियों को देखने को मिलेगी।

बालोद के विकास में मील का पत्थर साबित होगा आधुनिक रेलवे स्टेशन

सांसद भोजराज नाग ने कहा कि अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत बालोद रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास क्षेत्र के लिए बड़ी सौगात है। आधुनिक स्टेशन भवन, विस्तृत सर्कुलेटिंग एरिया, बेहतर प्रवेश एवं निकास व्यवस्था, प्लेटफॉर्म शेल्टर, दिव्यांगजन अनुकूल सुविधाएं, आधुनिक यात्री सूचना प्रणाली और पार्किंग जैसी सुविधाओं से यात्रियों को बेहतर यात्रा अनुभव मिलेगा। बालोद स्टेशन का इतिहास क्षेत्र के औद्योगिक विकास से जुड़ा हुआ है और इसका आधुनिकीकरण जिले के विकास को नई गति देने वाला महत्वपूर्ण कदम है। आधुनिक रेलवे सुविधाओं से बालोद के पर्यटन, व्यापार और स्थानीय

स्वतंत्रता दिवस पर संदेश—आजादी के साथ विकास भी जरूरी

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जब हम देश की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले वीर सपूतों को नमन करते हैं, तब यह भी याद रखना जरूरी है कि उनके सपनों का भारत केवल स्वतंत्र ही नहीं, बल्कि समृद्ध, आधुनिक और विकसित भारत भी हो। बालोद रेलवे स्टेशन का यह नया स्वरूप उसी सपने की दिशा में बढ़ते कदमों की तस्वीर है। 17 जुलाई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्चुअल लोकार्पण के बाद आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित बालोद रेलवे स्टेशन अब विकास की नई रफ्तार का साक्षी बन चुका है। वर्षों पुरानी यात्री सुविधाओं की चुनौतियों से राहत पाकर यह स्टेशन अब आधुनिक रेल यात्रा की ओर बढ़ रहा है। आजादी के अमृत काल में बालोद रेलवे स्टेशन का यह कायाकल्प एक संदेश देता है—देश की आजादी की विरासत को सहेजते हुए विकास की नई मंजिलों की ओर बढ़ना ही सच्चे अर्थों में विकसित भारत की यात्रा है।

आधुनिक सुविधाओं के साथ स्थानीय संस्कृति की झलक भी दिखेगी

भाजपा जिला अध्यक्ष चेमन देशमुख ने कहा कि बालोद रेलवे स्टेशन का कायाकल्प

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। वर्षों से यात्रियों को जिन सुविधाओं की आवश्यकता महसूस होती थी, उनका अब आधुनिक रूप में विस्तार किया गया है। स्टेशन पर बेहतर यात्री सुविधाओं के साथ छत्तीसगढ़ की लोककला और सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाले भित्तिचित्र विकसित किए गए हैं, जो आधुनिकता के साथ हमारी स्थानीय पहचान को भी दर्शाते हैं। इस विकास से बालोद जिले में आने-जाने वाले यात्रियों के साथ-साथ व्यापारियों और पर्यटकों को भी काफी सुविधा मिलेगी।

यात्री सुविधाओं के विस्तार से पर्यटन और व्यापार को मिलेगा बढ़ावा

प्रदेश भाजपा महामंत्री **यशवंत जैन** ने कहा कि अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत

रेलवे स्टेशनों का विकास केवल भवन निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि यात्रियों को सुरक्षित, सुगम और आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराने की व्यापक सोच के साथ किया जा रहा है। बालोद रेलवे स्टेशन का आधुनिकीकरण इसी सोच का उदाहरण है। आधुनिक यात्री सूचना प्रणाली, बेहतर प्रकाश व्यवस्था, सुव्यवस्थित यातायात एवं पार्किंग, दिव्यांगजन अनुकूल सुविधाएं और बेहतर प्लेटफॉर्म व्यवस्था यात्रियों के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी। बेहतर रेल संपर्क और आधुनिक स्टेशन क्षेत्रीय पर्यटन, व्यापार और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में भी सहायक होंगे।

बालोद के लोगों और यात्रियों को मिलेगी बड़ी राहत

जनसेवक संजारी बालोद **राकेश यादव** ने कहा कि बालोद रेलवे स्टेशन का आधुनिक

स्वरूप जिले के लोगों के लिए खुशी और गर्व का विषय है। स्टेशन पर यात्रियों के लिए बेहतर प्रतीक्षालय, स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित परिसर, प्लेटफॉर्म शेल्टर, पार्किंग, आधुनिक सूचना प्रणाली और सुरक्षा संबंधी सुविधाओं का विकास होने से आम यात्रियों को काफी राहत मिलेगी। बालोद जिले में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं और आधुनिक रेलवे स्टेशन पर्यटकों के लिए जिले का एक महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार साबित हो सकता है। स्टेशन का विकास निश्चित रूप से बालोद के सामाजिक और आर्थिक विकास को नई दिशा देगा तथा क्षेत्र में रोजगार और व्यापार के अवसरों को भी बढ़ावा मिलेगा।

अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलेगा।

आधुनिक स्टेशन बनेगा पर्यटन और व्यापार का प्रवेश द्वार

बालोद जिला प्राकृतिक सुंदरता, कृषि और औद्योगिक महत्व के लिए जाना जाता है। दल्लीराजहरा की लौह अयस्क खदानें, तांदुला जलाशय तथा जिले के प्राकृतिक और धार्मिक पर्यटन स्थल लोगों को आकर्षित करते हैं। आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित रेलवे स्टेशन जिले में आने वाले पर्यटकों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार साबित हो सकता है। बेहतर रेल सुविधाओं से पर्यटन स्थलों तक पहुंच आसान होने के साथ ही स्थानीय व्यापार, होटल व्यवसाय, परिवहन और रोजगार के अवसरों को भी गति मिलने की संभावना है। स्टेशन का आधुनिकीकरण क्षेत्रीय संपर्क को मजबूत करने के साथ बालोद के सामाजिक और आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बालोद के औद्योगिक इतिहास से जुड़ा है स्टेशन

बालोद रेलवे स्टेशन का इतिहास क्षेत्र के औद्योगिक विकास और भिलाई स्टील प्लांट की स्थापना से भी जुड़ा हुआ है। वर्ष 1955 में सोवियत संघ के सहयोग से भिलाई स्टील प्लांट की आधारशिला रखे जाने के बाद दल्लीराजहरा की खदानों से लौह अयस्क की आपूर्ति के लिए दल्लीराजहरा-भिलाई रेल लाइन का निर्माण किया गया। इसी महत्वपूर्ण औद्योगिक रेल मार्ग के बीच बालोद रेलवे स्टेशन विकसित हुआ, जो आज भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और औद्योगिक परिवहन की महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है।

बालोद की धरती के उस कर्मयोगी की कहानी, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर शिक्षा, मंदिर निर्माण और खेल मैदान के लिए भी दिया अपना अमूल्य योगदान

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

भारत की आजादी का इतिहास केवल बड़े नेताओं और प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्षों से नहीं लिखा गया, बल्कि देश के कोने-कोने में ऐसे अनगिनत राष्ट्रभक्तों ने भी अपना जीवन देश की स्वतंत्रता के लिए समर्पित किया, जिनके योगदान की कहानी आज भी स्थानीय इतिहास के पन्नों में सुरक्षित है। ऐसे ही राष्ट्रभक्त, समाजसेवी और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे स्व. दाऊ सरयू प्रसाद अग्रवाल, जिन्होंने छात्र जीवन से ही स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई और देश की आजादी के लिए जेल की यातनाएं भी सहीं। स्वतंत्रता के बाद भी उनका जीवन समाजसेवा और जनहित के कार्यों के लिए समर्पित रहा।

आजादी की लड़ाई में सक्रिय भूमिका, जेल में भी नहीं झुके

स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के दौरान सक्रिय भागीदारी के कारण उन्हें अंग्रेजी शासन की कार्रवाई का सामना करना पड़ा और जेल जाना पड़ा। भारतीय दंड विधान अधिनियम की धारा 26(1) डी.आई.आर. के अंतर्गत उन्हें रायपुर केंद्रीय जेल में 3 अक्टूबर 1942 से 4 जून 1943 तक डिटेन्यू के रूप में रखा गया। इसके बाद 4 जून 1943 को उन्हें नागपुर जेल स्थानांतरित किया गया। जेल में रहते हुए भी उनके भीतर देशभक्ति और स्वाभिमान की भावना अडिग रही। जेल प्रशासन द्वारा पहनने के लिए दिए गए मिल के कपड़े को उन्होंने स्वीकार करने से इनकार कर दिया और खादी के कपड़े की मांग की। अपने सिद्धांतों पर कायम रहने के कारण उन्हें करीब एक महीने

तक केवल कंबल ओढ़कर रहना पड़ा। यह प्रसंग उनके दृढ़ राष्ट्रभाव, स्वदेशी के प्रति आस्था और स्वतंत्रता आंदोलन की विचारधारा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।आजादी के बाद स्वतंत्रता संग्राम में उनके सक्रिय योगदान के सम्मान में उन्हें ताम्रपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके संघर्ष और राष्ट्र के प्रति समर्पण की सरकारी मान्यता का प्रतीक रहा।

देशसेवा की भावना जेल की दीवारों से बाहर भी जारी रही

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संघर्ष करने वाले सरयू प्रसाद अग्रवाल का सेवाभाव आजादी के बाद भी कम नहीं हुआ। एलएलबी के छात्र रहते हुए वे बिहार में आए भूकंप के दौरान राहत कार्यों में शामिल होने के लिए पहुंच गए थे। इससे उनके व्यक्तित्व में छिपी मानवीय संवेदना और सेवा भावना का परिचय मिलता है।बाद में बालोद में वकालत करते हुए उन्होंने जमींदारी उन्मूलन आंदोलन में भी सक्रिय भागीदारी निभाई। उनका मानना था कि स्वतंत्र भारत में आम जनता को सामाजिक और आर्थिक रूप से मजबूत बनाना भी उतना ही जरूरी है, जितना देश को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराना था।

छात्र जीवन से ही राष्ट्रसेवा का संकल्प

स्व. दाऊ सरयू प्रसाद अग्रवाल का जन्म 1 जनवरी 1910 को दुर्ग (छत्तीसगढ़) में हुआ था। उनके पिता स्व. श्री बिहारीलाल अग्रवाल और माता स्व. श्रीमती दयावती अग्रवाल थीं। प्रारंभ से ही वे शिक्षा के प्रति गंभीर और सामाजिक सरोकारों से जुड़े हुए थे। उन्होंने गवर्नमेंट हाई स्कूल रायपुर से मैट्रिक की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद रॉबर्टसन कॉलेज, जबलपुर से बी.एससी. तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एलएलबी की शिक्षा पूरी की। रॉबर्टसन कॉलेज जबलपुर में अध्ययन के दौरान उन्हें सर्वोत्तम कॉलेज कंडक्ट के लिए पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उस दौर में यह एक प्रतिष्ठित सम्मान माना जाता था, जो उनके अनुशासन, व्यक्तित्व और उत्कृष्ट आचरण का परिचायक था।लेकिन उनका जीवन केवल शिक्षा और व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं रहा। छात्र जीवन से ही देश की गुलामी उन्हें बेचैन करती थी और वे स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे।

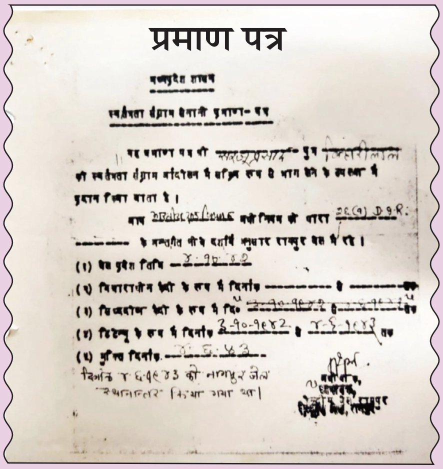

आजादी के आंदोलन में जेल गए, खादी के लिए अंग्रेजों से अड़े और समाजसेवा में जीवन समर्पित कर गए स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. दाऊ सरयू प्रसाद अग्रवाल

गांव–गांव घूमकर शिक्षा के लिए जुटाया सहयोग

स्व. दाऊ सरयू प्रसाद अग्रवाल का योगदान केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने बालोद में शिक्षा के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांव-गांव घूमकर 'छेरा-छेरा पुन्नी' के अवसर पर भिक्षा और सहयोग राशि एकत्रित कर बालोद में हाई स्कूल भवन निर्माण में योगदान दिया। उनका यह प्रयास बताता है कि वे शिक्षा को समाज के विकास का सबसे महत्वपूर्ण आधार मानते थे। उन्होंने बालोद के प्रसिद्ध महामाया मंदिर के निर्माण में भी सक्रिय भूमिका निभाई। समाज और जनहित से जुड़े इन कार्यों में उनकी भागीदारी ने उन्हें बालोद की सामाजिक स्मृतियों में एक विशिष्ट स्थान दिलाया।

सरयू प्रसाद स्टेडियम के पीछे भी है त्याग और समाजसेवा की कहानी

बालोद शहर के खेल और सामाजिक जीवन से जुड़ा सरयू प्रसाद स्टेडियम भी उनके परिवार द्वारा किए गए महत्वपूर्ण योगदान की स्मृति को संजोए हुए है।उनकी स्मृति में उनके परिवार द्वारा 19 जुलाई 1985 को गंजपारा, बालोद में स्टेडियम निर्माण के लिए करीब 5.5 एकड़ भूमि का भूमिदान किया गया। आज यही स्थान 'सरयू प्रसाद स्टेडियम' के नाम से जाना जाता है। यह भूमिदान केवल जमीन का दान नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए खेल, स्वास्थ्य और सामाजिक विकास का एक स्थायी उपहार है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में देश के लिए संघर्ष करने वाले सरयू प्रसाद अग्रवाल की स्मृति आज भी इस स्टेडियम के माध्यम से बालोद की नई पीढ़ी से जुड़ी हुई है।

परिवार भी शिक्षा और सेवा की परंपरा को आगे बढ़ाता रहा

स्व. दाऊ सरयू प्रसाद अग्रवाल का विवाह स्व. श्रीमती चंद्रकांता बाई अग्रवाल से हुआ था। उनके परिवार में भी शिक्षा और सेवा की परंपरा आगे बढ़ी। उनके दो पुत्र डॉ. सत्यप्रकाश अग्रवाल और डॉ. धरम प्रकाश अग्रवाल तथा पुत्री डॉ. आशा रमेश गुप्ता हैं। उनका निधन 9 जून 1971 को हुआ, लेकिन देश की आजादी के लिए उनका संघर्ष, समाजसेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और बालोद के विकास में उनका योगदान आज भी स्मरणीय है।

आजादी के अमृत काल में ऐसे नायकों को याद करना जरूरी

स्वतंत्रता दिवस केवल तिरंगा फहराने और राष्ट्रगान गाने का अवसर नहीं, बल्कि उन अनगिनत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद करने का दिन भी है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना वर्तमान कुर्बान कर आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित किया। स्व. दाऊ सरयू प्रसाद अग्रवाल की जीवन यात्रा हमें बताती है कि सच्ची देशभक्ति केवल स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने तक सीमित नहीं होती। देश के लिए संघर्ष करने के बाद समाज, शिक्षा, धर्म और जनहित के कार्यों में अपना योगदान देना भी राष्ट्रसेवा का ही एक रूप है। रायपुर की जेल से लेकर नागपुर जेल तक का संघर्ष, खादी के लिए अडिग रहना, बिहार के भूकंप पीड़ितों की सेवा, जमींदारी उन्मूलन आंदोलन में भागीदारी, बालोद में शिक्षा के लिए सहयोग जुटाना, महामाया मंदिर के निर्माण में योगदान और अंततः स्टेडियम के लिए भूमि दान—सरयू प्रसाद अग्रवाल का जीवन राष्ट्रभक्ति और समाजसेवा की ऐसी विरासत है, जिसे बालोद की नई पीढ़ी के सामने लाना और सहेजना आवश्यक है। आजादी के इस विशेष अवसर पर ऐसे अल्पज्ञात स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को स्मरण करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

साभार : तस्वीर के लिए
डॉ. राहुल कुमार अग्रवाल-पौत्र
किलकारी, सदर रोड बालोद (छत्तीसगढ़)

इन गांवों की मिट्टी ने देखी थी आजादी की लड़ाई

'गांधी गोरकापार' की कहानी : अंग्रेजों की नौकरी छोड़ स्वतंत्रता संग्राम में कूदे वली मुहम्मद, 'बापू के सपने' से जुड़ी रिहाई की कहानी ने बदल दिया गांव का नाम

बालोद/गुंडरदेही ✍दर्शन बालोद✍

भारत की आजादी का इतिहास केवल दिल्ली, मुंबई, कोलकाता या बड़े शहरों में लड़ी गई लड़ाइयों का इतिहास नहीं है। देश के गांवों और कस्बों की मिट्टी में भी स्वतंत्रता आंदोलन की ऐसी अनगिनत कहानियां दफन हैं, जिन्हें सामने लाना आज भी बाकी है। बालोद जिले के गुंडरदेही क्षेत्र के गोरकापार गांव की कहानी भी ऐसी ही है, जहां एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की देशभक्ति और महात्मा गांधी के प्रति उनकी आस्था ने गांव की पहचान ही बदल दी। आज इस गांव को 'गांधी गोरकापार' के नाम से जाना जाता है और इस नाम के पीछे छिपी कहानी करीब एक सदी पुरानी है। यह कहानी है स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वली मुहम्मद की, जो कभी अंग्रेजी शासन में अमीन पटवारी के पद पर कार्यरत थे, लेकिन देश की गुलामी और स्वतंत्रता आंदोलन की पुकार ने उन्हें ऐसा प्रभावित किया कि उन्होंने अंग्रेजों की नौकरी छोड़ दी और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। इसके बाद उन्होंने न केवल स्वयं स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई, बल्कि डौंडी लोहारा क्षेत्र में लोगों को संगठित कर आंदोलन को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी जिंदगी से जुड़ी सबसे रोचक घटना उनकी जेल यात्रा और रिहाई से जुड़ी है। 'बापू का सपना' उनकी रिहाई की वजह बना और इस घटना के बाद ग्रामीणों ने अपने गांव के नाम के आगे 'गांधी' जोड़ दिया। आज भी 'गांधी गोरकापार' नाम इस ऐतिहासिक घटना की स्मृति को जीवित रखे हुए है।

आज भी वंशजों के पास सुरक्षित है 15 अगस्त 1947 को मिला ताम्रपत्र, लेकिन छह दशक बाद भी स्वतंत्रता सेनानी की स्मृति को स्थायी पहचान मिलने का इंतजार

अंग्रेजों के मुलाजिम से बन गए गांधी के सिपाही

दस्तावेजों और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े प्रकाशित साहित्य के अनुसार, वर्ष 1920-21 के आसपास वली मुहम्मद गुंडरदेही क्षेत्र के गोरकापार में अमीन पटवारी के रूप में पदस्थ थे। इसी दौरान एक ऐसी घटना हुई, जिसने उनके जीवन की दिशा बदल दी। बताया जाता है कि एक आदिवासी की भैंस खो गई थी। वह अपनी भैंस की तलाश कर रहा था। इसी दौरान एक बूढ़े व्यक्ति ने उसे भैंस के बारे में जानकारी दी। आदिवासी उस बुजुर्ग को धन्यवाद देने के लिए खोजने लगा, तभी उसकी मुलाकात अमीन पटवारी वली मुहम्मद से हुई। संयोग से वली मुहम्मद की जेब में महात्मा गांधी की तस्वीर थी। जब आदिवासी की नजर उस तस्वीर पर पड़ी तो उसने उस तस्वीर में दिख रहे व्यक्ति को उसी बुजुर्ग के रूप में पहचान लिया, जिसने उसे भैंस के बारे में बताया था। इस घटना ने वली मुहम्मद को गहरे तक प्रभावित किया। उन्होंने महात्मा गांधी को संत-महात्मा के रूप में देखा और गांधीजी के विचारों से प्रेरित होकर अंग्रेजी शासन की नौकरी छोड़ स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने का निर्णय लिया। इसके बाद उनका जीवन पूरी तरह देश की आजादी के संघर्ष को समर्पित हो गया।

'बापू का सपना' और जन्माष्टमी के दिन हुई रिहाई

वली मुहम्मद की पहली जेल यात्रा और उनकी रिहाई से जुड़ी कहानी भी बेहद रोचक और स्थानीय इतिहास में विशेष स्थान रखती है। असहयोग आंदोलन के दौरान उन्हें नागपुर जेल में बंद किया गया था, जहां से बाद में उन्हें गोंदिया जेल भेज दिया गया।

इसी दौरान उनके गांव गोरकापार की संत प्रवृत्ति की महिला महात्मा दाई से जुड़ी एक घटना सामने आती है। बताया जाता है कि

महात्मा दाई ने ग्रामीणों को कहा था कि वली मुहम्मद जन्माष्टमी के दिन जेल से रिहा होकर वापस आएंगे। उनके वंशजों और स्थानीय इतिहास से जुड़े विवरणों के अनुसार, बाद में ऐसा ही हुआ और वली मुहम्मद जन्माष्टमी के दिन अंग्रेजों की कैद से रिहा होकर गोरकापार पहुंचे। रिहाई के बाद जब वली मुहम्मद ने महात्मा दाई से मुलाकात की और उनसे इस भविष्यवाणी के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्हें स्वप्न में महात्मा गांधी के दर्शन हुए थे और बापू ने ही यह बात कही थी। इस घटना की चर्चा धीरे-धीरे आसपास के क्षेत्रों में फैलने लगी। स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े लोग महात्मा दाई और वली मुहम्मद से मिलने गोरकापार पहुंचने लगे। कहा जाता है कि इसी घटना और गांधीजी के प्रति ग्रामीणों की गहरी आस्था के कारण गांव का नाम 'गांधी गोरकापार' प्रचलित हो गया, जो आज भी कायम है।

डौंडी लोहारा बना कर्मभूमि, करीब 100 लोगों को आंदोलन से जोड़ा

स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के बाद वली मुहम्मद ने डौंडी लोहारा को अपना कर्मक्षेत्र बनाया। उपलब्ध दस्तावेजों के अनुसार, उन्होंने डौंडी लोहारा जमींदारी क्षेत्र में स्वतंत्रता आंदोलन के लिए लोगों को एकजुट किया। उनके प्रयासों से करीब 100 लोगों ने उनके साथ जेल यात्रा की। स्वतंत्रता आंदोलन में उनके प्रमुख सहयोगियों में बालोद के स्व. सरयू प्रसाद वकील का नाम भी उल्लेखित मिलता है। वहीं कुटेरा के स्व. कृष्णाराम ठाकुर और भेड़ी गांव के रामदयाल जैसे लोगों ने भी उनसे प्रेरणा लेकर जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। इस तरह वली मुहम्मद केवल स्वयं स्वतंत्रता आंदोलन के सेनानी नहीं रहे, बल्कि उन्होंने अपने आसपास के लोगों को भी राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ मुखर आवाज, कई बार गए जेल

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान वली मुहम्मद अंग्रेजी शासन के खिलाफ लगातार सक्रिय रहे। उनके वंशजों के पास सुरक्षित दस्तावेजों के

अनुसार, अंग्रेजी शासन के विरोध के चलते उन्हें 7 मार्च 1923 को गिरफ्तार कर नागपुर जेल भेजा गया। इसके बाद 23 जुलाई 1923 को उन्हें अकोला नागपुर स्थानांतरित किया गया। इसके अलावा 23 अक्टूबर 1939 से 24 नवंबर 1939 तक उन्हें रायपुर केंद्रीय जेल में रखा गया। स्वतंत्रता आंदोलन के अंतिम दौर में भी अंग्रेजी शासन ने उन्हें नहीं छोड़ा और वर्ष 1943 से 1945 तक करीब दो वर्षों तक नागपुर जेल में कैद रखा गया। इन जेल यात्राओं से स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान केवल प्रतीकात्मक नहीं था, बल्कि उन्होंने अंग्रेजी शासन के खिलाफ सक्रिय संघर्ष करते हुए लंबे समय तक जेल की यातनाएं सहीं।24 जुलाई 1957 को डौंडी लोहारा में उनका निधन हुआ।

ताम्रपत्र में दर्ज है बालोद की आजादी की कहानी

देश आजाद हुआ तो स्वतंत्रता संग्राम में वली मुहम्मद के योगदान को भी सम्मान मिला। 15 अगस्त 1947 को उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के लिए ताम्रपत्र प्रदान किया गया। इस ताम्रपत्र पर महाकौशल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी जबलपुर के सभापति सेठ गोविंददास के हस्ताक्षर होने की जानकारी दी गई है। आज यह ऐतिहासिक ताम्रपत्र उनके वंशजों के पास सुरक्षित है। यह केवल परिवार की धरोहर नहीं, बल्कि बालोद जिले और पूरे क्षेत्र के स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस

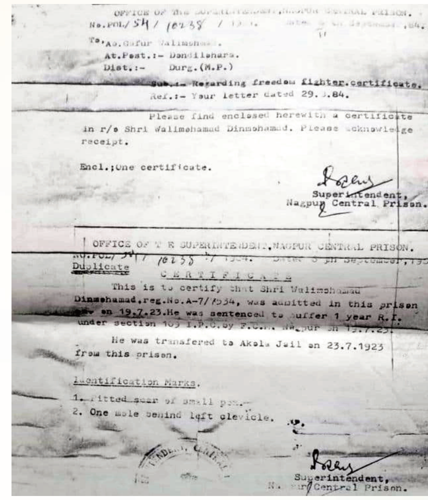

OFFICE OF THE [illegible] CENTRAL PRISON.
No.POL/54/10238/ [illegible] .84.

To, Ab.Gafur Walimohamad.
At.Post.:- Dondilohara.
Dist.:- Durg.(M.P.)

Sub.:- Regarding freedom fighter.certificate.
Ref.:- Your letter dated 29.[illegible].84.

Please find enclosed herewith a certificate in r/o Shri Walimohamad Dinmohamad. Please acknowledge receipt.

Encl.;One certificate.

Superintendent,
Nagpur Central Prison.

OFFICE OF THE SUPERINTENDENT,NAGPUR CENTRAL PRISON.
Duplicate

CERTIFICATE

This is to certify that Shri Walimohamad Dinmohamad,reg.No.A-7/1534, was admitted in this prison on 19.7.23.He was sentenced to suffer 1 year R.I. under section 109 I.P.C. by [illegible] Nagpur on 19.7.23.

He was transfered to Akola Jail on 23.7.1923 from this prison.

Identification Marks.
1. [illegible]
2. One mole behind left clevicle.

Superintendent,
[illegible] Central Prison.

ताम्रपत्र में दर्ज इतिहास उस दौर की याद दिलाता है, जब देश की आजादी के लिए गांवों से भी आवाज उठ रही थी और लोग अपने सुख-सुविधाओं को छोड़कर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे।

गांव का नाम आज भी सुनाता है आजादी की कहानी

'गांधी गोरकापार' केवल एक गांव का नाम नहीं है। यह नाम अपने भीतर करीब सौ साल पुरानी एक ऐसी कहानी समेटे हुए है, जिसमें एक अंग्रेजी हुकूमत का कर्मचारी गांधीजी के विचारों से प्रभावित होकर स्वतंत्रता आंदोलन का सिपाही बन गया। जिसने जेल की सलाखों के पीछे समय बिताया, लोगों को आंदोलन से जोड़ा और आजादी के बाद ताम्रपत्र से सम्मानित हुआ। आज जब स्वतंत्रता दिवस पर पूरा देश तिरंगे को सलाम करता है, तब 'गांधी गोरकापार' की मिट्टी हमें याद दिलाती है कि आजादी की लड़ाई केवल बड़े शहरों और प्रसिद्ध नेताओं की कहानी नहीं थी। इस लड़ाई में बालोद के गांवों की मिट्टी भी शामिल थी, जहां वली मुहम्मद जैसे वीरों ने अपना सब कुछ देश के नाम कर दिया था। ताम्रपत्र में दर्ज यह कहानी केवल एक परिवार की धरोहर नहीं, बल्कि बालोद की आजादी की अमर विरासत है। जरूरत है कि ऐसे दस्तावेजों को सुरक्षित किया जाए, इन सेनानियों के इतिहास को नई पीढ़ी तक पहुंचाया जाए और उनके नाम को आने वाली पीढ़ियों की स्मृति में जीवित रखा जाए।

शिक्षक बने देशभक्ति के प्रहरी, जंगलों में घूमकर जलाए आजादी के आंदोलन की लौ

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में कुछ ऐसे सेनानी भी रहे, जिन्होंने हाथ में हथियार नहीं, बल्कि शिक्षा, विचार और जनजागरण को अपना अस्त्र बनाया। उन्होंने अपने शिक्षकीय कर्तव्य को केवल नौकरी नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा की साधना माना। ऐसे ही कर्मयोगी थे लक्ष्मण प्रसाद दुबे, जिन्हें लोग स्नेह और सम्मान से 'गुरुजी' कहकर पुकारते थे। उनका संपूर्ण जीवन शिक्षकीय दायित्व निभाते हुए बीता, लेकिन इसके साथ ही उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन की अलख जगाने और युवाओं के मन में देशभक्ति की भावना पैदा करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।उन्होंने अपने जीवन में अनेक विद्यार्थियों को शिक्षा दी और उनके भीतर देशप्रेम की भावना जागृत की। इतना ही नहीं, उनके व्यक्तित्व से प्रेरित होकर कई लोगों ने आगे चलकर शिक्षकीय जीवन को अपनाया। नारी स्वतंत्रता और नारी शिक्षा के प्रबल पक्षधर लक्ष्मण प्रसाद दुबे का जन्म 9 जून 1909 को छत्तीसगढ़ के तत्कालीन दुर्ग जिले के दाढ़ी गांव में हुआ था। गांव में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने बेमेतरा से उच्चतर माध्यमिक शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा शिक्षकीय जीवन प्रारंभ किया।

लक्ष्मण प्रसाद दुबे 'गुरुजी' ने पढ़ाई के साथ स्वतंत्रता संग्राम की अलख जगाई, गिरफ्तारी से बचने 1942 से 1947 तक बिताया भूमिगत जीवन

1929 में भिलाई में शिक्षक बने, यहीं से स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव

लक्ष्मण प्रसाद दुबे की पहली नियमित पदस्थापना वर्ष 1929 में भिलाई के माध्यमिक स्कूल में हुई। उस समय दुर्ग अंचल में स्वतंत्रता आंदोलन की लहर तेजी से फैल रही थी। भिलाई में शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए उनका संपर्क जिले के वरिष्ठ सत्याग्रही नरसिंह प्रसाद अग्रवाल से हुआ। उस दौर में किशोरों और युवाओं के बीच अग्रवाल जी का विशेष प्रभाव था। उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा से लक्ष्मण प्रसाद दुबे ने अपने साथियों और विद्यार्थियों के साथ मिलकर मद्य निषेध आंदोलन और विदेशी वस्त्र बहिष्कार आंदोलन को आगे बढ़ाने का काम शुरू किया। इसी दौरान उन्होंने भिलाई में विदेशी वस्तुओं के साथ जार्ज पंचम का चित्र भी जलाया। अंग्रेजी शासन को इसकी भनक लगी तो अक्टूबर 1929 में भिलाई का मिडिल स्कूल बंद कर दिया गया और उनका स्थानांतरण बालोद मिडिल स्कूल कर दिया गया।

लेकिन यह स्थानांतरण उनके लिए एक नए अध्याय की शुरुआत बन गया, क्योंकि उनके प्रेरणास्रोत नरसिंह प्रसाद अग्रवाल बालोद के मूल निवासी थे। अब लक्ष्मण प्रसाद दुबे को अपने नेता और मार्गदर्शक के और करीब रहकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर मिला।

बालोद के पोड़ी गांव के जंगल सत्याग्रह की संभाली जिम्मेदारी

बालोद के ग्राम पोड़ी में हुए जंगल सत्याग्रह की पूरी रूपरेखा और उससे संबंधित दस्तावेज नरसिंह प्रसाद अग्रवाल ने लक्ष्मण प्रसाद दुबे को सौंपे थे। अंग्रेजी शासन की पुलिस और गुप्तचरों से इन दस्तावेजों को बचाते हुए वे जंगल सत्याग्रह और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी गतिविधियों का विवरण एक रजिस्टर में दर्ज करते रहे। नरसिंह प्रसाद अग्रवाल के जेल जाने के बाद भी लक्ष्मण प्रसाद दुबे ने जंगल सत्याग्रह की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे बताया करते थे कि उस दौर में सत्याग्रह की रैलियों और सभाओं में 8 से 10 महिलाएं भी चरखा लेकर शामिल होती थीं और आंदोलन में अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज कराती थीं। यह उस समय के सामाजिक बदलाव की भी तस्वीर थी,

जब स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ महिलाओं की भागीदारी और स्वदेशी की भावना भी ग्रामीण क्षेत्रों में मजबूत हो रही थी।

बालोद से दुर्ग और धमधा तक पैदल पहुंचाते रहे आंदोलन का संदेश

वर्ष 1930 में बालोद के सर्किल ऑफिसर नायडू से उनकी बहस हो गई। इसके बाद अग्रवाल परिवार की मध्यस्थता से उनका स्थानांतरण धमधा कर दिया गया। इसके बाद उनका आवागमन बालोद, दुर्ग, धमधा और दाढ़ी के बीच बना रहा। इस दौरान वे विश्वनाथ तामस्कर, रघुनंदन प्रसाद सिंगरौल और लक्ष्मण प्रसाद बैद जैसे स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं के साथ सक्रिय रहे। नरसिंह प्रसाद अग्रवाल के इस क्षेत्र में होने वाले दौरों की जिम्मेदारी भी काफी हद तक लक्ष्मण प्रसाद दुबे के पास रहती थी। वर्ष 1932 में अग्रवाल जी के दाढ़ी दौरे के दौरान भी वे उनके साथ सक्रिय रहे। नरसिंह प्रसाद अग्रवाल युवा सत्याग्रहियों को हमेशा समझाया करते थे कि 'जोश के साथ होश मत खोना।' उस समय अंग्रेजी शासन की नजर स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेताओं पर थी और लगातार गिरफ्तारियां हो रही थीं। ऐसे समय में आंदोलन को जीवित रखने के लिए दूसरी पंक्ति के कार्यकर्ताओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण थी। लक्ष्मण प्रसाद दुबे ने इसी जिम्मेदारी को गांधीवादी और संयमित तरीके से निभाया।

डौंडी–लोहारा के जंगलों में भी जारी रखा जनजागरण

वर्ष 1942 में उनका स्थानांतरण डौंडी-लोहारा कर दिया गया। जंगल सत्याग्रह की रणनीति और ग्रामीण जनजागरण में दक्ष लक्ष्मण प्रसाद दुबे के लिए यह क्षेत्र भी उनके कार्य का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। डौंडी-लोहारा के जंगलों और ग्रामीण अंचलों में वे अपने शिक्षकीय दायित्व के साथ-साथ पैदल गांव-गांव घूमते और लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन का संदेश देते रहे। इस दौरान भी उन्हें नरसिंह प्रसाद अग्रवाल का मार्गदर्शन मिलता रहा। लेकिन अंग्रेजी शासन उनकी गतिविधियों पर नजर रख रहा था।

1942 से 1947 तक खानाबदोश की तरह घूमते रहे

अंग्रेजी शासन की गिरफ्तारी से बचते हुए वर्ष 1942 से 1947 तक उन्होंने लगभग खानाबदोश जीवन व्यतीत किया। वे दुर्ग जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में पैदल घूम-घूमकर लोगों के बीच सत्याग्रह और स्वतंत्रता आंदोलन की शिक्षा का संदेश पहुंचाते रहे। उनकी सक्रियता और जनसंपर्क का ही परिणाम था कि वे लगातार अंग्रेजी पुलिस की नजर से बचते हुए आंदोलन की गतिविधियों को आगे बढ़ाते रहे। एक शिक्षक के रूप में उनका ज्ञान और एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उनका साहस, दोनों मिलकर उन्हें अपने समय का विशिष्ट व्यक्तित्व बनाते थे।

शिक्षक के साथ ज्योतिष और चिकित्सा के भी विद्वान

लक्ष्मण प्रसाद दुबे का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे ज्योतिष के विद्वान थे। उन्होंने यूनानी चिकित्सा और वैद विशारद की परीक्षाएं भी उत्तीर्ण की थीं। शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में भी कार्य किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्होंने जनपद पंचायत स्कूल में प्रधान पाठक के रूप में अपनी सेवाएं दीं। सेवानिवृत्ति के बाद भी उनका सार्वजनिक जीवन सक्रिय रहा और वे जनपद पंचायत बेमेतरा के सदस्य भी रहे।

कांग्रेस से जुड़े रहे, अंतिम समय तक निभाई सक्रिय भूमिका

लक्ष्मण प्रसाद दुबे ने वर्ष 1930 में दुर्ग जिला कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की थी। वर्ष 1942 से 1947 तक वे जिला कांग्रेस की कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में सक्रिय रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी उनका कांग्रेस और सार्वजनिक जीवन से जुड़ाव बना रहा और 23 जुलाई 1993 को अपने निधन तक वे जिला कांग्रेस के सक्रिय सदस्य रहे। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान देने के अनेक रास्ते थे। किसी ने जेल जाकर संघर्ष किया, किसी ने सत्याग्रह किया तो किसी ने गांव-गांव घूमकर जनजागरण किया।

लक्ष्मण प्रसाद दुबे ने शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका को ही स्वतंत्रता आंदोलन का माध्यम बना लिया था। उनकी कहानी हमें यह भी बताती है कि आजादी की लड़ाई में बालोद, दुर्ग और डौंडी-लोहारा जैसे अंचलों के शिक्षकों, विद्यार्थियों, महिलाओं और ग्रामीणों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ऐसे अल्पज्ञात स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के संघर्ष और योगदान को इतिहास के पन्नों में सुरक्षित रखना और नई पीढ़ी तक पहुंचाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

साभार : संजीव तिवारी, 'आरंभ छत्तीसगढ़ समग्र' के अंश से।

गिरफ्तारी का आदेश जारी हुआ तो स्कूल से इस्तीफा देकर हो गए भूमिगत

वर्ष 1942 में जमुना प्रसाद अग्रवाल अपने बड़े भाई नरसिंह प्रसाद अग्रवाल का संदेश लेकर लक्ष्मण प्रसाद दुबे के पास पहुंचे। उन्होंने उन्हें चेतावनी दी कि अंग्रेजी सरकार कभी भी उन्हें गिरफ्तार कर सकती है। जमुना प्रसाद अग्रवाल के बालोद लौटते ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसी रात लक्ष्मण प्रसाद दुबे को गिरफ्तार करने का आदेश डौंडी में भी जारी कर दिया गया। हालांकि गिरफ्तारी का आदेश लागू होने से पहले ही इसकी जानकारी एक सिपाही के माध्यम से लीक हो गई। स्थिति को भांपते हुए लक्ष्मण प्रसाद दुबे ने अपने स्कूल का त्यागपत्र मित्रों के हाथों सौंप दिया और वहां से निकलकर बालोद पहुंचे। इसके बाद वे भूमिगत हो गए। रायपुर के प्रमुख सक्रिय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. मोतीलाल त्रिपाठी से उनके पारिवारिक संबंधों का लाभ भी उन्हें मिला। इसके बाद उन्होंने दुर्ग जिले के दूरस्थ और घने जंगल क्षेत्रों में रहकर स्वतंत्रता आंदोलन की लौ को जलाए रखने का काम जारी रखा।

दुर्ग जिले के पहले गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी थे दाऊ ढालसिंह दिलीवार

गांधी चौक की सभा से अंग्रेजों ने किया था गिरफ्तार, 1941 से 1945 तक नागपुर, दमोह और जबलपुर की जेलों में रहे कैद,अब दाऊ ढालसिंह दिलीवार के नाम पर अलंकरण पुरस्कार की मांग

बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल बड़े शहरों और चर्चित नेताओं के संघर्ष तक सीमित नहीं है। गांवों और ग्रामीण अंचलों से भी अनेक ऐसे वीर सपूत निकले, जिन्होंने महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा और असहयोग के सिद्धांतों से प्रेरित होकर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष किया और देश की आजादी के लिए जेल की यातनाएं सहीं। ऐसे ही महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे दाऊ ढालसिंह दिलीवार, जिन्होंने अपना जीवन राष्ट्रसेवा और स्वतंत्रता आंदोलन के लिए समर्पित कर दिया। वरिष्ठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जमुना प्रसाद कासर ने अपनी पुस्तक में उन्हें दुर्ग जिले का पहला गांधीवादी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बताया है।

पिरिद गांव में जन्मे, अर्जुंदा और राजनांदगांव में हुई शिक्षा

दाऊ ढालसिंह दिलीवार का जन्म 27 नवंबर 1897 को तत्कालीन दुर्ग जिले के गुंडरदेही तहसील अंतर्गत ग्राम पिरिद में एक मालगुजार परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी मिडिल स्कूल की शिक्षा अर्जुंदा से तथा हाईस्कूल की शिक्षा राजनांदगांव से पूरी की। शिक्षा के दौरान ही वे देश की तत्कालीन परिस्थितियों और महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित हुए। सत्य, अहिंसा और असहयोग के गांधीवादी सिद्धांतों ने उनके जीवन की दिशा बदल दी और उन्होंने देश को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने के राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी का संकल्प लिया।

अंग्रेजी हुकूमत की आंखों में खटकने लगे थे दाऊ ढालसिंह

स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी बढ़ती सक्रियता और निर्भीक नेतृत्व अंग्रेजी शासन को रास नहीं आया। वे अंग्रेजी अधिकारियों की नजर में ऐसे प्रभावशाली नेता बन चुके थे, जो ग्रामीण जनता को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने और अंग्रेजी शासन के खिलाफ जनमत तैयार करने में सक्षम थे। वर्ष 1941 में गांधी चौक की एक सभा के दौरान अंग्रेजी शासन ने उन्हें बलपूर्वक गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद 12 मई 1941 को उन्हें नागपुर जेल भेजा गया। बाद में उन्हें अलग-अलग जेलों में स्थानांतरित किया गया और वे नागपुर, दमोह तथा जबलपुर की जेलों सहित वर्ष 1941 से 1945 तक करीब चार वर्षों तक कैद रहे। लंबे कारावास और अंग्रेजी शासन के दमन के बावजूद उनके भीतर देश की आजादी के प्रति समर्पण और गांधीवादी विचारों के प्रति आस्था कभी कमजोर नहीं हुई।

गांधी चौक की सभा से गिरफ्तारी का उल्लेख इतिहास में दर्ज

1926 में स्वतंत्रता आंदोलन में कूदे, गांव-गांव पहुंचाया राष्ट्रीय चेतना का संदेश

दाऊ ढालसिंह दिलीवार वर्ष 1926 में स्वतंत्रता आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़ गए। ग्रामीण अंचल की परिस्थितियों और आमजन के जीवन की उन्हें गहरी समझ थी। इसी कारण वे ग्रामीण क्षेत्रों में राष्ट्रीय चेतना जगाने और लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे। उनके व्यक्तित्व में निर्भीकता, नेतृत्व क्षमता और जनसेवा की भावना का अद्भुत समन्वय था। वर्ष 1935 में वे कांग्रेस सेवा दल से जुड़े और महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन से प्रेरणा लेकर स्वतंत्रता संग्राम में अपनी सक्रियता और तेज कर दी। उनके व्यापक जनसंपर्क और ग्रामीण क्षेत्रों की गहरी जानकारी को देखते हुए वर्ष 1937 में उन्हें प्रांतीय कांग्रेस समिति (एमपी कांग्रेस कमेटी) का सदस्य बनाया गया। इसी वर्ष उन्होंने दुर्ग जिला लोकल बोर्ड के अध्यक्ष का दायित्व भी संभाला।

वरिष्ठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जमुना प्रसाद कासर ने अपनी पुस्तक में दाऊ ढालसिंह दिलीवार की गिरफ्तारी की इस महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख किया है। उनके अनुसार, वर्ष 1941 में गांधी चौक में आयोजित सभा से दाऊ ढालसिंह को अंग्रेजी शासन द्वारा जबरन गिरफ्तार किया गया था। यह घटना उनके निर्भीक व्यक्तित्व और अंग्रेजी शासन के खिलाफ उनके मुखर संघर्ष का प्रमाण है। जमुना प्रसाद कासर ने उन्हें दुर्ग जिले का पहला गांधीवादी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बताते हुए उनके योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया है।

10 अगस्त 1969 को हुआ निधन, लेकिन संघर्ष की गाथा आज भी जीवंत

दाऊ ढालसिंह दिलीवार का निधन 10 अगस्त 1969 को हुआ, लेकिन देश की आजादी के लिए उनके संघर्ष और योगदान की स्मृति आज भी प्रेरणा देती है। ग्राम पिरिद से निकलकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी पहचान बनाने वाले इस गांधीवादी सेनानी ने सत्य, अहिंसा, जनसेवा और राष्ट्रभक्ति के मूल्यों को अपने जीवन में सर्वोच्च स्थान दिया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दाऊ ढालसिंह दिलीवार जैसे सेनानियों को याद करना इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत की आजादी केवल कुछ बड़े नेताओं के संघर्ष का परिणाम नहीं थी। गांव-गांव और कस्बे-कस्बे में रहने वाले असंख्य ज्ञात-अल्पज्ञात सेनानियों के त्याग, संघर्ष और जेल यात्राओं ने स्वतंत्रता की नींव को मजबूत किया था। ऐसे सेनानियों की गाथाओं को नई पीढ़ी तक पहुंचाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

दाऊ ढालसिंह दिलीवार के नाम पर अलंकरण पुरस्कार घोषित करने की मांग

छत्तीसगढ़ प्रदेश कुर्मी क्षत्रिय समाज के प्रदेश युवा अध्यक्ष योगेश्वर देशमुख ने कहा कि दाऊ ढालसिंह दिलीवार जैसे महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का योगदान समाज और प्रदेश के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने बताया कि समय-समय पर शासन-प्रशासन से स्वर्गीय दाऊ ढालसिंह दिलीवार के नाम पर अलंकरण पुरस्कार घोषित करने की मांग की जाती रही है। उनका कहना है कि ऐसे महान स्वतंत्रता सेनानी के नाम पर पुरस्कार की स्थापना होने से उनके योगदान को सम्मान मिलेगा और समाज में राष्ट्रसेवा, जनसेवा तथा देशभक्ति के लिए कार्य करने वाले लोगों को प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने कहा कि दाऊ ढालसिंह दिलीवार के नाम पर अलंकरण पुरस्कार की शुरुआत उनके संघर्ष और योगदान को चिरस्थायी सम्मान देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। इससे आने वाली पीढ़ियां भी उनके जीवन और स्वतंत्रता संग्राम में दिए गए योगदान से परिचित होंगी और उनके आदर्शों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र एवं समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आगे आएंगी। दाऊ ढालसिंह दिलीवार की कहानी केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं, बल्कि आज भी यह संदेश देती है कि सत्य, अहिंसा, साहस और राष्ट्रप्रेम के रास्ते पर चलकर एक सामान्य व्यक्ति भी देश के इतिहास में असाधारण योगदान दे सकता है।

योगेश्वर देशमुख

सादगी, ईमानदारी और न्यायप्रियता थी पहचान

दाऊ ढालसिंह दिलीवार का व्यक्तित्व केवल एक स्वतंत्रता सेनानी तक सीमित नहीं था। वे जीवंत, आदर्शवादी, ईमानदार, निष्पक्ष, न्यायप्रिय, उदार, मृदुभाषी और विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। उनमें असाधारण नेतृत्व क्षमता और प्रशासनिक दक्षता थी। उनकी सादगी और सहज व्यवहार ने उन्हें आम लोगों के बीच लोकप्रिय बनाया और वे अनेक लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बने। उनका संघर्ष केवल अंग्रेजी शासन के खिलाफ राजनीतिक लड़ाई तक सीमित नहीं था, बल्कि वे समाज में न्याय, समानता और जनहित के मूल्यों को मजबूत करने के भी पक्षधर थे। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि स्वतंत्रता आंदोलन में गांधीवादी विचारों को अपनाकर भी दृढ़ संकल्प और साहस के साथ अंग्रेजी शासन का मुकाबला किया जा सकता है।

धमतरी में गांधीजी को कंधे पर उठाकर मंच तक पहुंचाने वाले थे गुरूर के उमर सेठ

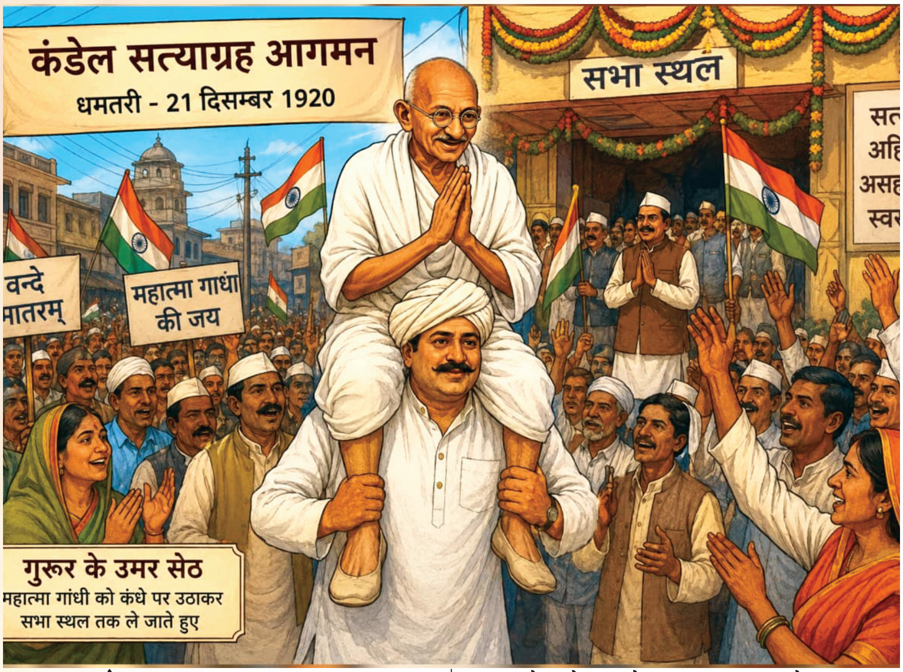

बालोद/गुरूर ✍दर्शन बालोद✍

स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल देश के बड़े नेताओं और चर्चित आंदोलनों तक सीमित नहीं है। आजादी की इस महान लड़ाई में देश के गांवों, कस्बों और छोटे-छोटे शहरों के अनगिनत लोगों ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इनमें से कई ऐसे नायक हैं, जिनका नाम इतिहास के बड़े पन्नों में भले ही बहुत अधिक चर्चित नहीं हुआ, लेकिन उनके साहस और राष्ट्रभक्ति से जुड़ी घटनाएं आज भी इतिहास के दस्तावेजों में सुरक्षित हैं। गुरूर के उमर सेठ भी ऐसे ही एक अल्पज्ञात स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, जिनका नाम महात्मा गांधी के वर्ष 1920 में धमतरी आगमन से जुड़ी एक बेहद रोचक और ऐतिहासिक घटना में दर्ज है। यह वह दौर था, जब देश में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन तेजी से जन आंदोलन का रूप ले रहा था। महात्मा गांधी देशभर में लोगों को सत्य, अहिंसा और असहयोग के रास्ते पर चलकर अंग्रेजी शासन के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरित कर रहे थे। इसी क्रम में 21 दिसंबर 1920 को महात्मा गांधी मौलाना शौकत अली के साथ रायपुर होते हुए धमतरी पहुंचे थे। गांधीजी के धमतरी आने की खबर पहले से ही लोगों तक पहुंच चुकी थी। उनके दर्शन करने और उनका भाषण सुनने के लिए धमतरी तहसील के गांव-गांव से बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुष नगर में उमड़ पड़े। गांधीजी के स्वागत में पूरा शहर राष्ट्रभक्ति के रंग में रंग गया था। 'वंदे मातरम्', 'भारत माता की जय' और 'महात्मा गांधी की जय' के नारों से धमतरी की सड़कें गूंज उठी थीं।

धमतरी में उमड़ा था जनसैलाब, गांधीजी का मंच तक पहुंचना हुआ मुश्किल

महात्मा गांधी के भाषण के लिए धमतरी के एक प्रमुख सेठ के विशाल बाड़े में सभा का आयोजन किया गया था। गांधीजी की खुली कार जब लोगों की भारी भीड़ को पार करती हुई सभा स्थल के पास पहुंची, तो वहां मौजूद जनसैलाब के कारण आगे बढ़ना बेहद मुश्किल हो गया। सभा स्थल का मुख्य द्वार भी लोगों से पूरी तरह भरा हुआ था। गांधीजी को मंच तक पहुंचाना उस समय एक बड़ी चुनौती बन गया। तभी गुरूर निवासी उमर सेठ आगे आए। ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, उमर सेठ एक कच्छी व्यापारी थे और गांधीजी के प्रति उनके मन में गहरी श्रद्धा थी। उन्होंने बिना किसी संकोच के महात्मा गांधी को अपने कंधों पर उठा लिया और भीड़ के बीच से गुजरते हुए उन्हें सभा के मंच तक पहुंचाया।गांधीजी के मंच पर पहुंचते ही वहां मौजूद लोगों में उत्साह की लहर दौड़ गई। हजारों की भीड़ अपने प्रिय नेता की एक झलक पाने और उनका संदेश सुनने के लिए आतुर थी। उस समय उमर सेठ द्वारा गांधीजी को कंधे पर उठाकर मंच तक पहुंचाने का यह प्रसंग स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्थानीय जनमानस में महात्मा गांधी के प्रति मौजूद गहरी आस्था और सम्मान का प्रतीक बन गया।

गुरूर के उमर सेठ की यह पहल बन गई इतिहास का हिस्सा

आजादी के आंदोलन के इतिहास में उमर सेठ का नाम भले ही व्यापक रूप से चर्चित नहीं है, लेकिन गांधीजी के धमतरी आगमन की इस घटना ने उन्हें इतिहास के एक महत्वपूर्ण प्रसंग से जोड़ दिया।

यह घटना बताती है कि स्वतंत्रता आंदोलन में स्थानीय स्तर पर सक्रिय लोगों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण थी।गुरूर के उमर सेठ ने उस समय गांधीजी को अपने कंधे पर उठाकर केवल एक व्यक्ति को मंच तक नहीं पहुंचाया था, बल्कि यह उस दौर में महात्मा गांधी और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति आम लोगों की गहरी

श्रद्धा और समर्पण का भी प्रतीक था।

डेढ़ मील लंबी सड़क पर गूंज रहे थे देशभक्ति के नारे

गांधीजी के स्वागत के लिए धमतरी की करीब डेढ़ मील लंबी सड़क के दोनों ओर लोग खड़े थे। गांवों से आए हजारों स्त्री-पुरुष गांधीजी के स्वागत के लिए घंटों से प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही गांधीजी का काफिला आगे बढ़ा, पूरा वातावरण वंदे मातरम् और भारत माता की जय के नारों से गूंज उठा। सभा के लिए बनाए गए मंच को तोरण-पताकाओं, देशभक्त नेताओं के चित्रों और देशभक्ति से जुड़े प्रेरणादायक संदेशों से सजाया गया था। गांधीजी के मंच पर पहुंचने के बाद नगरवासियों की ओर से उनका स्वागत किया गया और 501 रुपये की थैली भेंट की गई। उस समय यह राशि राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति स्थानीय लोगों के आर्थिक सहयोग और समर्पण का महत्वपूर्ण प्रतीक थी।

गांधीजी ने कंडेल नहर सत्याग्रह का किया उल्लेख

सभा को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी ने करीब एक घंटे तक देश की तत्कालीन परिस्थितियों और स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा पर चर्चा की। अपने भाषण में उन्होंने कंडेल गांव के नहर सत्याग्रह का उल्लेख किया और उससे जुड़े प्रमुख आंदोलनकारियों के योगदान को भी याद किया। गांधीजी ने पंडित सुंदरलाल शर्मा, पंडित नारायण राव मेघावाले, नत्थूजी जगताप और छोटेलाल बाबू सहित आंदोलन से जुड़े अन्य लोगों का उल्लेख करते हुए जनता को अन्याय और अत्याचार के खिलाफ संगठित होकर संघर्ष करने का संदेश दिया। उन्होंने सत्य, अहिंसा, दृढ़ता और शांतिपूर्ण आंदोलन को ही देश के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग बताया।गांधीजी का यह संदेश धमतरी ही नहीं, बल्कि आसपास के क्षेत्रों में भी स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना को मजबूत करने वाला साबित हुआ।

बालोद अंचल तक पहुंची थी स्वतंत्रता आंदोलन की लहर

महात्मा गांधी के छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियां रायपुर और धमतरी के साथ-साथ आसपास के अनेक क्षेत्रों में भी तेज हुईं। रायपुर, धमतरी, कुरूद, आरंग, गनौद, दुर्ग, महासमुंद, बालोद, राजिम, राजनांद-गांव, बिलासपुर, कांकेर, डौंडी, भानुप्रतापपुर और जगदलपुर सहित अनेक स्थानों पर राष्ट्रीय आंदोलन की गतिविधियों ने लोगों को जोड़ने का काम किया।स्थानीय कार्यकर्ताओं, मालगुजारों, व्यापारियों और ग्रामीणों ने गांव-गांव जाकर जनजागृति का कार्य किया। स्वतंत्रता आंदोलन के इन स्थानीय नायकों ने आम लोगों को अंग्रेजी शासन के खिलाफ एकजुट करने और राष्ट्रीय चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी व्यापक जनजागरण की कड़ी में गुरूर के उमर सेठ जैसे राष्ट्रभक्तों का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा, जिनकी भूमिका भले ही इतिहास के बड़े पन्नों में सीमित दिखाई देती हो, लेकिन उनकी कहानी स्वतंत्रता आंदोलन के स्थानीय इतिहास को समझने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

1920 में महात्मा गांधी के धमतरी आगमन की ऐतिहासिक घटना में दर्ज है बालोद अंचल के इस अल्पज्ञात स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का नाम

इतिहास के पन्नों से फिर सामने आना चाहिए गुरूर के उमर सेठ का नाम

आज स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जब हम देश की आजादी का उत्सव मनाते हैं, तब यह भी हमारा दायित्व है कि उन अल्पज्ञात और गुमनाम स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद करें, जिनके योगदान के बिना आजादी की कहानी अधूरी है। गुरूर के उमर सेठ की कहानी इसी भूले-बिसरे इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। वर्ष 1920 में धमतरी में जब महात्मा गांधी के स्वागत के लिए हजारों लोगों का जनसैलाब उमड़ा

था और बापू का मंच तक पहुंचना मुश्किल हो गया था, तब गुरूर के उमर सेठ ने उन्हें अपने कंधों पर उठाकर मंच तक पहुंचाया। यह घटना केवल एक ऐतिहासिक प्रसंग नहीं, बल्कि उस दौर की राष्ट्रभक्ति, जनआस्था और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति लोगों के समर्पण की जीवंत तस्वीर है। आज आवश्यकता है कि बालोद जिले और आसपास के अंचलों में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े ऐसे अल्पज्ञात नायकों की खोज की जाए। पुराने दस्तावेजों, सरकारी अभिलेखों, परिवारों के पास सुरक्षित प्रमाणों और स्थानीय इतिहास में दर्ज घटनाओं को संजोकर नई पीढ़ी तक पहुंचाया जाए, ताकि आजादी की लड़ाई में हमारे गांवों और कस्बों की भूमिका भी इतिहास के सामने पूरी मजबूती से आ सके। गुरूर के उमर सेठ जैसे नायक हमें याद दिलाते हैं कि भारत की आजादी केवल कुछ महान नेताओं के संघर्ष का परिणाम नहीं थी, बल्कि यह उन अनगिनत देशभक्तों के त्याग, समर्पण और साहस से हासिल हुई, जिनकी कहानियां आज भी हमारी मिट्टी में जीवित हैं। आजादी के इस पर्व पर ऐसे गुमनाम और अल्पज्ञात नायकों को नमन, जिन्होंने अपने समय में राष्ट्र के लिए जो किया, वही हमारी स्वतंत्रता की अमर विरासत है।

साभार : डॉ. प्रकाश पतंगीवार, 'गुरूर गौरव' संपादक शांति कॉलोनी रायपुर, डॉ कुबेर सिंग गुरुपंच, प्रोफेसर शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़।

जब शिक्षक ने अंग्रेजों के खिलाफ उठाई आवाज, नौकरी छोड़ी और जेल गए, आजादी के बाद नेहरू के आदेश पर उसी स्कूल में हुई पुनर्नियुक्ति

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. उमेंद्र सिंह कलिहारी : गांधी से प्रभावित होकर जीवनभर निभाया खादी और स्वदेशी का व्रत, आज भी भरदाकला में श्रद्धा से याद किए जाते हैं

बालोद/ अर्जुंदा ✍दर्शन बालोद✍

स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल बड़े नेताओं और महान आंदोलनों का इतिहास नहीं है, बल्कि यह उन अनगिनत लोगों के त्याग, संघर्ष और संकल्प की कहानी भी है, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत सुख और सुविधाओं को छोड़कर देश की आजादी के लिए संघर्ष किया। बालोद जिले की धरती ने भी ऐसे अनेक वीर सपूतों को जन्म दिया, जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के सामने झुकने से इनकार कर दिया। ऐसे ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे ग्राम भरदाकला के स्व. उमेंद्र सिंह कलिहारी, जिनका पूरा जीवन महात्मा गांधी के विचारों और आदर्शों से प्रेरित रहा। वे पेशे से शिक्षक थे, लेकिन जब देश की आजादी का आंदोलन तेज हुआ तो उन्होंने अंग्रेजी शासन के खिलाफ खुलकर आवाज उठाई। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण उन्हें अपनी शिक्षक की नौकरी तक छोड़नी पड़ी और अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें जेल में डाल दिया। लेकिन देश आजाद होने के बाद उनके संघर्ष और त्याग को सम्मान मिला। बताया जाता है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के विशेष आदेश के तहत उनकी उसी अर्जुंदा मिडिल स्कूल में पुनर्नियुक्ति की गई, जहां वे स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने से पहले सहायक शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की गाथाओं पर आधारित 'आजादी के दीवाने' पुस्तक, जिसका लेखन बदरुद्दीन कुरैशी ने किया है, उसमें भी स्व. उमेंद्र सिंह कलिहारी के संघर्ष और योगदान का उल्लेख मिलता है।

'जब तक देश आजाद नहीं होगा, पलंग पर आराम नहीं करूंगा'

उनके परपोते क्रांति भूषण साहू (वर्तमान सरपंच और जिला सरपंच संघ बालोद के अध्यक्ष) ने बताया कि महात्मा गांधी के विचारों

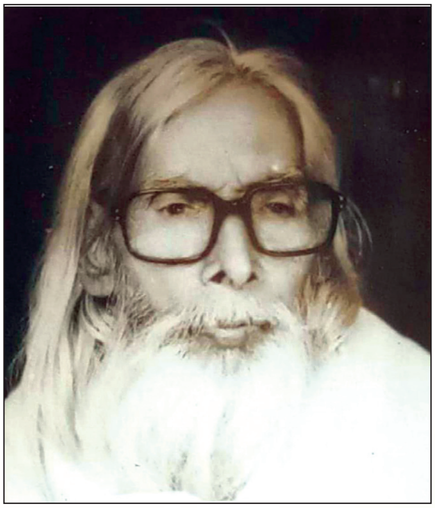

से गहरे प्रभावित स्व. उमेंद्र सिंह कलिहारी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक ऐसा संकल्प लिया था, जो उनके दृढ़ निश्चय और देशभक्ति को दर्शाता है। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक देश आजाद नहीं हो जाता, तब तक वे पलंग पर आराम नहीं करेंगे।उन्होंने पलंग का बहिष्कार किया और जमीन पर रहकर अपने संकल्प का पालन किया। उनके इस व्रत का प्रभाव परिवार के अन्य सदस्यों पर भी पड़ा और उन्होंने भी इस संकल्प का पालन किया। उनके लिए स्वतंत्रता केवल एक राजनीतिक लक्ष्य नहीं, बल्कि जीवन का सबसे बड़ा संकल्प बन चुकी थी।

1942 में 'करो या मरो' के नारे के साथ आंदोलन में कूद पड़े

स्व. उमेंद्र सिंह कलिहारी का जन्म 1 जुलाई 1905 को ग्राम भरदाकला, तत्कालीन दुर्ग जिले में हुआ था। उनके पिता अमोली राम संपन्न कृषक थे। उन्होंने कक्षा छठवीं तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद शिक्षकीय जीवन प्रारंभ किया और अर्जुंदा मिडिल स्कूल में सहायक शिक्षक के रूप में कार्य किया। वर्ष 1942 में महात्मा गांधी के 'करो या मरो' के आह्वान से प्रेरित होकर वे स्वतंत्रता संग्राम में पूरी तरह सक्रिय हो गए। शिक्षक होने के बावजूद उन्होंने अंग्रेजी शासन के खिलाफ लोगों को जागरूक करने का बीड़ा उठाया। वे गांव-गांव जाकर स्वतंत्रता आंदोलन का प्रचार करते और लोगों में देशभक्ति की भावना जगाते थे। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्होंने निर्भीकता से भाषण दिए और लोगों में आजादी के लिए जोश और जुनून पैदा किया। उनके नेतृत्व और प्रभाव से क्षेत्र के लोगों में राष्ट्रीय चेतना मजबूत होने लगी। अंग्रेजी शासन के खिलाफ उनकी सक्रियता को देखते हुए पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

नौ महीने रायपुर जेल में कैद रहे

स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण स्व. उमेंद्र सिंह कलिहारी को अंग्रेजी शासन की कार्रवाई का सामना करना पड़ा। उन्हें 22 अक्टूबर 1942 से 16 जून 1943 तक

हमारा इतिहास, हमारी पहचान
आदिवासी समाज का सम्मान
हम सबका अभिमान
छ ग गोंडवाना गोंड महासभा
एकता • अधिकार • सम्मान
विश्व आदिवासी दिवस
9 अगस्त
समस्त आदिवासी समाज को
विश्व आदिवासी दिवस
की हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाएं।
आदिवासी समाज
हमारी संस्कृति, हमारी शक्ति,
हमारी धरोहर है।
आइए, एकजुट होकर अपने
अधिकार, सम्मान और
अस्तित्व की रक्षा करें।
गैंदलाल खुरश्याम
सचिव, छ ग गोंडवाना गोंड महासभा
जिला बालोद
निवास- ग्राम हथौद
हमारी संस्कृति
हमारी पहचान
हमारा स्वाभिमान
हमारा अधिकार
हमारी एकता
हमारा भविष्य
जय आदिवासी | जय गोंडवाना | जय जोहार

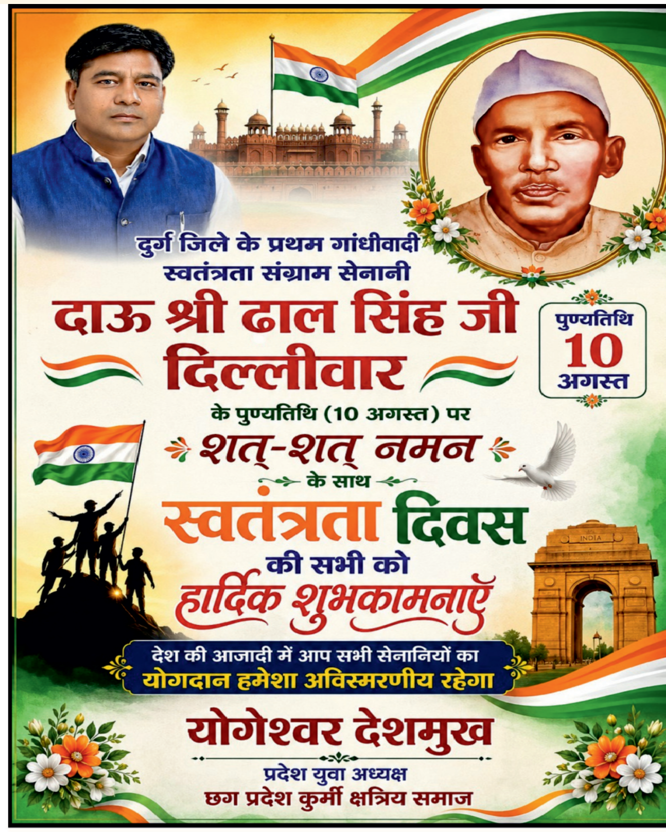
दुर्ग जिले के प्रथम गांधीवादी
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
दाऊ श्री ढाल सिंह जी
दिल्लीवार
पुण्यतिथि
10
अगस्त
के पुण्यतिथि (10 अगस्त) पर
शत्-शत् नमन
के साथ
स्वतंत्रता दिवस
की सभी को
हार्दिक शुभकामनाएँ
देश की आजादी में आप सभी सेनानियों का
योगदान हमेशा अविस्मरणीय रहेगा
योगेश्वर देशमुख
प्रदेश युवा अध्यक्ष
छग प्रदेश कुर्मी क्षत्रिय समाज

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
15TH OF AUGUST
INDEPENDENCE DAY
मंजू संजय बैस
जनपद सदस्य कुसुमकसा
संजय बैस
जनपद सदस्य कुसुमकसा
अध्यक्ष प्रगति पथ एजुकेशन सोसायटी
सदस्य, रेलवे सलाहकार समिति छ.ग.

15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
आजादी का यह पर्व
हम सभी के लिए गर्व,
एकता, अखंडता और
समर्पण का प्रतीक है!
आइए! मिलकर प्रण करें,
देश को विकसित, सशक्त
और आत्मनिर्भर बनाएं!
सूर्यकांत सिन्हा
व्यायाम शिक्षक,
शासकीय आदर्श कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
बालोद
जय हिन्द ! | वंदे मातरम् !! | भारत माता की जय !!!

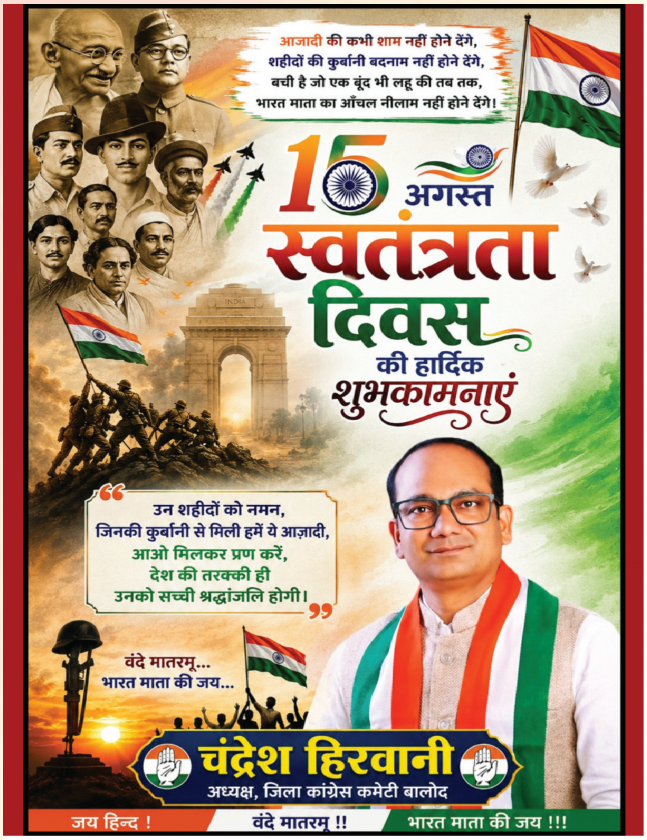
आजादी की कभी शाम नहीं होने देंगे,
शहीदों की कुर्बानी बदनाम नहीं होने देंगे,
बची है जो एक बूंद भी लहू की तब तक,
भारत माता का आँचल नीलाम नहीं होने देंगे।
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
उन शहीदों को नमन,
जिनकी कुर्बानी से मिली हमें ये आज़ादी,
आओ मिलकर प्रण करें,
देश की तरक्की ही
उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।
वंदे मातरम्...
भारत माता की जय...
चंद्रेश हिरवानी
अध्यक्ष, जिला कांग्रेस कमेटी बालोद
जय हिन्द !
वंदे मातरम् !!
भारत माता की जय !!!

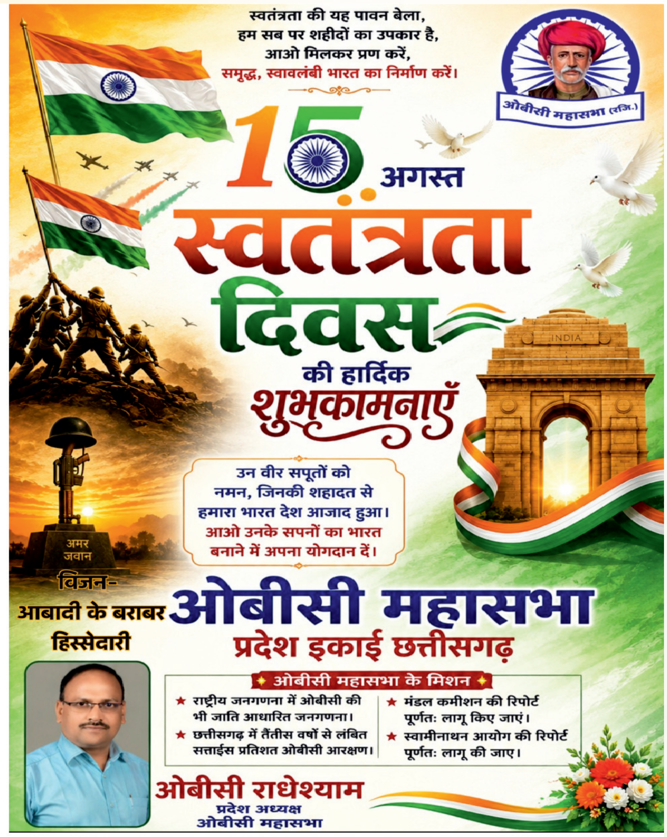
स्वतंत्रता की यह पावन बेला,
हम सब पर शहीदों का उपकार है,
आओ मिलकर प्रण करें,
समृद्ध, स्वावलंबी भारत का निर्माण करें।
ओबीसी महासभा (रजि.)
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ
उन वीर सपूतों को
नमन, जिनकी शहादत से
हमारा भारत देश आजाद हुआ।
आओ उनके सपनों का भारत
बनाने में अपना योगदान दें।
अमर जवान
विजन-
आबादी के बराबर
हिस्सेदारी
ओबीसी महासभा
प्रदेश इकाई छत्तीसगढ़
ओबीसी महासभा के मिशन
राष्ट्रीय जनगणना में ओबीसी की भी जाति आधारित जनगणना।
छत्तीसगढ़ में तैंतीस वर्षों से लंबित सत्ताईस प्रतिशत ओबीसी आरक्षण।
मंडल कमीशन की रिपोर्ट पूर्णतः लागू किए जाएं।
स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट पूर्णतः लागू की जाए।
ओबीसी राधेश्याम
प्रदेश अध्यक्ष
ओबीसी महासभा

आओ मिलकर प्रण करें,
देश की शान बढ़ाएं।
एक भारत, श्रेष्ठ भारत
का निर्माण करें॥
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
न ताज चाहिए, न तख्त चाहिए,
हमें तो सिर्फ ये वतन चाहिए,
सर कट जाए पर झुके ना सर,
ऐसा तिरंगा हर गगन चाहिए।
विवेक धुर्वे
व्याख्याता
शासकीय उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय सांकरा ज
जय हिन्द !
वन्दे मातरम् !!
भारत माता की जय !!!

शिवसेना
सहकार भारती
स्वतंत्रता हमें सिर्फ
एक अधिकार नहीं,
बल्कि एक
जिम्मेदारी भी देती है।
आओ मिलकर देश को
समृद्ध और सशक्त बनाएं।
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ
आइए! स्वतंत्रता के इस पावन पर्व पर
हम सब मिलकर शपथ लें कि
हमारा भारत हमेशा एकजुट,
सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर बने।
विजय पारख
शिव सेना नेता
खंड प्रमुख, सहकार भारती बालोद
जय हिन्द !
वंदे मातरम् !!
भारत माता की जय !!!

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊँचाईयों पर ले जाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
स्वतंत्रता हमें एकता का पाठ पढ़ाती है, यह विश्वास दिलाती है कि हम मिलकर असंभव को संभव बना सकते हैं ! आइए, अपने देश को प्रगति, शांति और समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ाएं !
वंदे मातरम् !
जय हिंन्द !
जय भारत !
ग्राम पंचायत कामता
विकास खंड - डौडी, जिला - बालोद (छ.ग.)
सरपंच
श्री बुधार सिंग भुआर्य
सचिव
कुशल सिंग बघेल
उप सरपंच
वीरेंद्र बढ़ाई
कंप्यूटर ऑपरेटर
प्रवीण बढ़ाई
रोजगार सहायक
अनिल कुमार बढ़ाई
पंचगण
गोपाल बढ़ाई, पार्वती रावटे, देवंतिन बाई यादव, किरण कुमार अंधारे, गिरजा अंधारे, गीताबाई भुआर्य, किशोर कुमार तारम, लालचंद चुरेंद्र, हुमन बाई रावटे, मंसीर कोसमा, रूपसिंह बढ़ाई, शामबाई कुलदीप, रागनी आंचला, दिलीप कुमार, आनेश्वरी घरत
भृत्य
कमलुराम बढ़ाई
वंदे मातरम्
जय हिंन्द !
जय भारत !
आप सभी ग्रामवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊँचाईयों पर ले जाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
स्वतंत्रता हमें एकता का पाठ पढ़ाती है, और यह विश्वास दिलाती है कि हम मिलकर असंभव को संभव बना सकते हैं! आइए, अपने देश को प्रगति, शांति और समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ाएं !
ग्राम पंचायत आड़ेझर
विकासखंड - डौडी, जिला - बालोद (छ.ग.)
सरपंच
श्रीमती माधुरी ठाकुर
सचिव
भारती साहू
उपसरपंच
सुरेश कोमरे
पंचगण
काशीराम, प्रभा दरों, अंजू, पुष्पांजलि, हरिश्चंद्र, देवंतीन बाई फ़हुतरी, केसर, उर्वशी, रोमन सहारे, देवधर
रोजगार सहायक
दिनेश पटेल
भृत्य
महेंद्र कुमार धुव
वंदे मातरम्
जय हिन्द !
जय भारत !

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊँचाईयों पर ले जाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
स्वतंत्रता हमें एकता का पाठ पढ़ाती है, यह विश्वास दिलाती है कि हम मिलकर असंभव को संभव बना सकते हैं ! आइए, अपने देश को प्रगति, शांति और समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ाएं !
वंदे मातरम् !
जय हिंन्द !
जय भारत !
ग्राम पंचायत अड़जाल
विकासखंड - डौडी, जिला - बालोद (छ.ग.)
सरपंच
श्रीमती गीता भंडारी
सचिव
किशुन पटेल
उप सरपंच
शिवराम सिंद्रामे
रोजगार सहायक
सोमबती साहू
भृत्य
भूपेश कुमार कुमेटी
पंचगण
परमानंद रावटे
देवकी बाई यादव
गायत्री आलापुरिया
महेंद्र कुमार मंडावी
तिहारु राम पटेल
शशि कला कुमेटी
प्रकाश सिंह सिंद्रामे
तुमेश्वर प्रसाद लटियारे
जय श्री पिस्द्रा
सुलोचना सिंद्रामे
सीमा लटियारे
शारदा रावटे
एक भारत श्रेष्ठ भारत
वंदे मातरम्
जय हिंन्द !
जय भारत !
आप सभी ग्रामवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊँचाईयों पर ले जाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रताा
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
स्वतंत्रता हमें एकता का पाठ पढ़ाती है, यह विश्वास दिलाती है कि हम मिलकर असंभव को संभव बना सकते हैं ! आइए, अपने देश को प्रगति, शांति और समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ाएं !
वंदे मातरम् !
जय हिंन्द !
जय भारत !
ग्राम पंचायत बिटाल
विकासखंड - डौडी, जिला - बालोद (छ.ग.)
सरपंच
श्रीमती पवन बाई चिराम
सचिव
सदाराम भण्डारी
उपसरपंच
जयप्रकाश धुवे
पंचगण
चंद्रिका बाई
रोशनी साहू
मीनाबाई
रीना बाई
शकुन बाई
चेतन कोठारी
ललिता
जानकी बाई
सतवंतिन बाई
परस
खेमलता
सरोज रंगारी
रतनी बाई
एक भारत श्रेष्ठ भारत
वंदे मातरम्
जय हिंन्द !
जय भारत !
आप सभी ग्रामवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !

स्वतंत्रता का सम्मान करें, देश की शान बढ़ाएं,
मिलकर भारत को विश्वगुरु बनाएं।
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ
एकता
अखंडता
स्वाभिमान
यही है हमारे देश की पहचान
स्वतंत्रता के ये पर्व पर, आओ मिलकर नया भारत गढ़ें, सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ें
ग्राम पंचायत बोरगांव
विकासखंड - डौंडी , जिला - बालोद
सरपंच - श्रीमती देवकी बाई कोटपरिया
उपसरपंच - जनक राम मरकाम
सचिव - सेउक राम देशमुख
पंचगण - कृष्ण कुमार तारम, देवनतीन रावटे, मगन बाई कोसरे, नौसिर बाई, कोमिन देहारी, सावित्री मसिया, ईश्वरलाल भुआर्य, सुनीता बाई, राम गुलाल, चंदन हिंडको, सातो बाई, विरम बाई गावड़े, हंसलता रावटे
आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊँचाईयों पर ले जाएं !
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ !
समस्त ग्रामवासी एवं पंचायत परिवार की ओर से
आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ !

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊंचाइयों पर ले जाएं !
वंदे मातरम् !
जय हिन्द !
जय भारत !
स्वतंत्रता हमें एकता का पाठ पढ़ाती है, यह विश्वास दिलाती है कि हम मिलकर असंभव को संभव बना सकते हैं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
ग्राम पंचायत भर्रीटोला (43)
विकासखंड - डौंडी, जिला - बालोद
सरपंच
राजकुमारी देहारी
सचिव
किशुन पटेल
उपसरपंच
नूतन कोठारी
पंचगण
• प्रदीप गुनेंद्र | • सिरमोतिन माहला • सहदेव राणा • गोदावरी बढ़ाई | • चतुर सिंग
• गुंजेश्वरी | • मीराबाई मसियारे | • मोनिका खरे | • ईश्वरी | • लक्ष्मीबाई
समस्त ग्रामवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !
जय हिन्द • जय भारत
वंदे मातरम
एकजुट ग्रामवासी - सशक्त पंचायत - समृद्ध भारत

15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ
आइए हम सब मिलकर अपने देश की स्वतंत्रता, एकता, अखंडता और समृद्धि के लिए सदैव समर्पित रहने का संकल्प लें।
जय हिन्द ! वन्दे मातरम् !
ग्राम पंचायत धुर्वाटोला
विकासखंड - डौंडी, जिला - बालोद
सरपंच - श्रीमती अंजू कोसमा
उपसरपंच - शंभू राम कोसमा
सचिव - सुखीत राम भूआर्य
पंचगण - कीर्तन राम, गौकरण, जंगलुराम, पीलू राम, ईश्वरी बाई, रजनी बाई, मान बाई, मंजू, सरस्वती, औंधी बाई, अधनी बाई, रितिका, फगनी बाई
रोजगार सहायक - दुर्गेश्वरी कौशल
कंप्यूटर ऑपरेटर - मधुर कुमार मसिया
समस्त ग्रामवासी एवं पंचायत परिवार की ओर से
आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ।

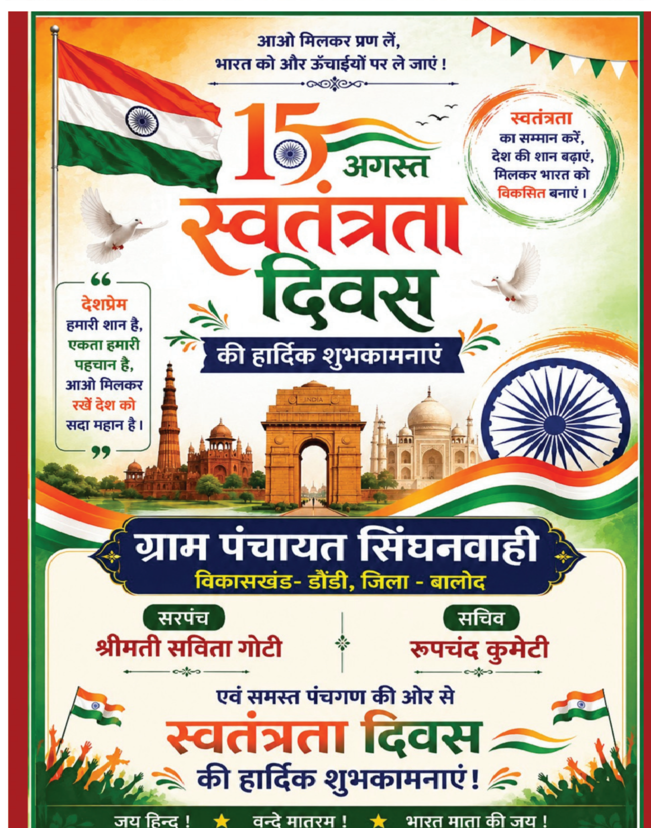
आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊँचाईयों पर ले जाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
स्वतंत्रता का सम्मान करें, देश की शान बढ़ाएं, मिलकर भारत को विकसित बनाएं।
देशप्रेम हमारी शान है, एकता हमारी पहचान है, आओ मिलकर रखें देश को सदा महान है।
ग्राम पंचायत सिंघनवाही
विकासखंड- डौंडी, जिला - बालोद
सरपंच
श्रीमती सविता गोटी
सचिव
रूपचंद कुमेटी
एवं समस्त पंचगण की ओर से
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं !
जय हिन्द ! ★ वन्दे मातरम् ! ★ भारत माता की जय !

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊंचाईयों पर ले जाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
स्वतंत्रता का यह पर्व हमें एकता, अखंडता और भाईचारे का संदेश देता है। आइए, राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दें।
ग्राम पंचायत लिमऊडीह
विकासखंड - डौंडी, जिला - बालोद (छ.ग.)
सरपंच
श्रीमती सत्यवती जाड़े
सचिव
माखन आर्य
एवं समस्त पंचगण की ओर से
आप सभी ग्रामवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ
आओ मिलकर देश को बेहतर बनाएं, हर दिल में देशभक्ति हर हाथ में निर्माण लाएं।
ना पूछो ज़माने को क्या हमारी कहानी है, हमारी पहचान तो बस इतनी है कि हम हिन्दुस्तानिा हैं।
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ
एकता ★ अखंडता ★ स्वाभिमान
हमारा देश, हमारी पहचान
ग्राम पंचायत पटेली
विकासखंड - डौंडी, जिला - बालोद (छ.ग.)
सरपंच - बाबूलाल सिहारे
उप सरपंच - मानकी तारम
सचिव - लेमन सिंह निर्मलकर
पंचगण - कोमल सिंह सिहारे, अंजनी बाई, चंद्रभान रावटे, कमलेश्वर सिंह यादव, सोन कुंवर पोया, बलदाऊं सिंह, संजय कुमार रावटे, कुमारी बाई साहू, संजय प्रसाद तिवारी, संतोषी कोसमा , कौशल्या बाई, भुनेश्वरी, लता, संतोषी नुरेटी, महेश कुमार कुमेटी, राजकुमार भुआर्य, देवकी मसियारे, देव कुमार निषाद, जुलोसिन रावटे
रोजगार सहायक - बीरेंद्र कुमार चौहान
कंप्यूटर ऑपरेटर - गजेंद्र दास
भृत्य - पूरन लाल
देशभक्ति हमारी शान है, तिरंगा हमारी पहचान है, आओ मिलकर शपथ लें, भारत को महान बनाना है।
हर दिल में हो देश प्रेम, हर घर में हो तिरंगा यही सपना, यही अरमान, सशक हो अपना हिन्दुस्तान।
त्याग, तपस्या, बलिदान की, याद दिलाता यह दिन महान, शहीदों के सपनों का भारत, हम सबका अभिमान।
चलो बनाएं ऐसा भारत, जहाँ हो खुशहाली, नई शुरुआत, साथ चले हम सब मिलकर, तभी होगा देश का विकास।
समस्त ग्रामवासी एवं पंचायत परिवार की ओर से
आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊंचाईयों पर ले जाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
स्वतंत्रता का यह पर्व हमें एकता, अखंडता और भाईचारे का संदेश देता है। आइए, राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दें।
वंदे मातरम् !
जय हिन्द !
जय भारत !
ग्राम पंचायत पचेड़ा
विकासखंड - डौंडी, जिला - बालोद (छ.ग.)
सरपंच बलराम कुमेटी
सचिव हीरासिंह भूपेंद्र
उपसरपंच मंगू राम गोयल
रोजगार सहायक दिनेश पटेल
पंचगण
मोहन निषाद, लताबाई पटेल, देविका मंडावी, ज्ञानेश्वरी कोठारी, सगाबती गावड़े, ललिता बाई निषाद, सरिता बाई जोशी, नरेंद्र पटेल, दुखुरम कोरेटी, आनंद सिंह कुमेटी, फूलबाई ध्रुवे, हलधर गावड़े, सुमरित बाई दरों
एक भारत श्रेष्ठ भारत
भृत्य
महेंद्र कुमार ध्रुव
ग्राम पंचायत की विशेष पहल
जल संरक्षण की दिशा में ग्राम पंचायत की और से विशेष पहल किया जा रहा है।
पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण कर ग्राम वासियों में जागरूकता फैलाया जा रहा है।
आइए ! मिलकर संकल्प लें,
स्वच्छ, जलयुक, हरित और समृद्ध ग्राम बनाएं !
जय हिंन्द ! जय भारत !

ग्राम पंचायत पेंड्री
विकासखंड- डौंडी, जिला-बालोद
श्री धनेश्वर कोमा सचिव
पंचगण -उपसरपंच, बसंती यादव, उत्तरा लाटिया, पामेश्वर कौर, नारद पुरामें, लीलाराम टेकाम, सुराज सिंह मंडावी , रोजगार सहायक रोमनलाल कोमर्रा, भृत्य तूवानिक लाटिया
अनेकता में एकता ही, हमारे प्यारे भारत की असली ताकत है- आप सभी को आजादी के इस उत्सव पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं
श्रीमती तीजन कृषाण
सरपंच

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊंचाइयों पर ले जाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
स्वतंत्रता केवल एक दिन का उत्सव नहीं, यह हमारे वीरों के बलिदान और कठोर परिश्रम का परिणाम है।
यह दिन हमें एकता, अखंडता, और भाईचारे की भावना को और भी मजबूत करने की प्रेरणा देता है।
वंदे मातरम् !
जय हिन्द !
जय भारत !
ग्राम पंचायत मरकाटोला
विकासखंड - डौंडी, जिला - बालोद (छ.ग.)
सरपंच
श्री पंकज हिडको
उप सरपंच
देवसिर कौड़ो
सचिव
गोविंद भुआर्य
पंचगण
दिलेश्वर चौरैया, मलखम घरत, श्री राम हिडको, खिलानंद आर्य,
बीर सिंग टेकाम, राकेश दरों, सविता कौड़ो, धनेश्वरी कौड़ो, सांवली बाई कुंजाम,
सतिमा नाग, ममता साहू, खेमिन बाई रावटे, संतोषी चुरेंद,
सुखबती खड़ांशु, रूपो बाई रावटे
रोजगार सहायक
कृष्णा साहू
कंप्यूटर ऑपरेटर
पूजा
भृत्य
देवराज
एकता में शक्ति है, स्वच्छता में प्रगति है, शिक्षा में उन्नति है,
और देशभक्ति में हमारी पहचान है।
आइए ! मिलकर मजबूत बनाएं अपना गाँव, अपना देश !

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊँचाइयों पर ले जाएँ !
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएँ
स्वतंत्रता का यह पर्व हमें एकता, अखंडता और भाईचारे का संदेश देता है। आइए, राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दें।
ग्राम पंचायत अवारी
विकासखंड- डौंडी, जिला - बालोद (छ.ग.)
सरपंच - श्रीमती अनीता मंडावी
उपसरपंच - बाल सिंग रावटे
सचिव - शोभित हिरवानी
पंचगण - कंचन उइके, पिंकी टांडिया, अर्चना ठाकुर, उत्तम टांडिया, अर्जुन निषाद, अजीत यादव, कुलेश्वरी निषाद, कौशल मानकर, रंजन परचापी, पेन बाई दरो, कस्तूरी पोया, संतु बाई पोया, मानबाई, देवकी बाई, भगवंतीन, सोनी बाई
रोजगार सहायक - शिव प्रसाद साहू
कंप्यूटर ऑपरेटर - दामिनी साहू
भृत्य - रामविलास
वंदे मातरम् !
जय हिन्द ! जय भारत !
समस्त ग्रामवासी एवं पंचायत परिवार की ओर से
आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ !

आओ मिलकर देश का मान बढ़ाएं,
एकता, अखंडता और समृद्धि का दीप जलाएं।
जय हिंद !
वंदे मातरम् !
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
शहीदों के बलिदान से ही हम आज़ाद हैं, उनके सपनों का भारत बनाना हमारा कर्तव्य है।
अमर जवान
ग्राम पंचायत कोपेडेरा
विकासखंड-डौंडी, जिला - बालोद
सरपंच
मुकेश कुमार तेता
सचिव
लीला दास कुलदीप
उपसरपंच
मन्नुराम कोराम
रोजगार सहायक
नरेंद्र कुमार मंडावी
पंचगण
मानक लाल गावड़े
शांतिलाल तेता
पुष्पा गावड़े
देवली बाई दुग्गा
शबनम सोरी
बिरसो नेताम
सरिता दुग्गा
तामेश्वरी नूरेटी
भृत्य
सोहद्रा गोटा
आइए, हम सब मिलकर देश की एकता, अखंडता और प्रगति के लिए
संकल्प लें और अपने कर्तव्यों का पालन करें।
समस्त ग्रामवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं!

15 अगस्त
आजादी हमें अनमोल मिली है,
आओ मिलकर इसका मान बढ़ाएँ।
स्वच्छ, शिक्षित, सशक्त गांव बनाकर
देश का सम्मान और अभिमान बढ़ाएँ॥
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
प्लास्टिक मुक्त गांव बनाए.
प्लास्टिक का उपयोग घटाएं,
कपड़ा/जूट के थैले अपनाएं,
धरती को स्वच्छ और सुरक्षित बनाएं।
प्लास्टिक छोड़ें, स्वच्छ और स्वस्थ जीवन जोड़ें।
गांव में स्वच्छता बनाए रखें
कूड़ा-कचरा इधर-उधर न फेंके
गीला-सूखा कचरा अलग करें
शौचालय का उपयोग करें
गांव को स्वच्छ, सुंदर और स्वस्थ बनाएं
स्वच्छ गांव, स्वस्थ परिवार, खुशहाल हमारा भविष्य।
बाल विवाह एक सामाजिक अपराध...
बाल विवाह न करें, न होने दें, बेटी और बेटे को पढ़ने दें।
शिक्षित होंगे बच्चे, तभी तो बढ़ेगा देश और समाज।
बाल विवाह रोकें, उज्ज्वल भविष्य संवारें।
ग्राम पंचायत धोबनी (ब)
विकासखंड- डौंडी, जिला-बालोद (छ.ग.)
सरपंच
महेश्वरी बाई तुमरेकी
उपसरपंच
प्रदीप कुमार नूरूटी
सचिव
दुर्गेश कुमार सोनी
पंचगण
ईश्वर लाल ठाकुर, रमाबाई ध्रुवे, यामिनी बाई, हिराबती,
विनीता बाई निषाद, लताबाई, मांगीलाल देवांगन, जयसिंह,
ब्रह्मा राम भूआर्य, दीपक सिंह गौतम, जयंत्री बाई महला,
यशोदा सिंग्रामे, तामेश्वर, राजकुमारी पदमाकर
ग्राम रोजगार सहायक
श्रीमती पुष्पा निषाद
कम्प्यूटर ऑपरेटर
रवि बघेल
भृत्य
श्याम सिंह निषाद
एवं समस्त ग्रामवासी
आओ मिलकर प्रण करें, स्वच्छ, शिक्षित और समृद्ध भारत का निर्माण करें।
जय हिन्द! वंदे मातरम्! भारत माता की जय!

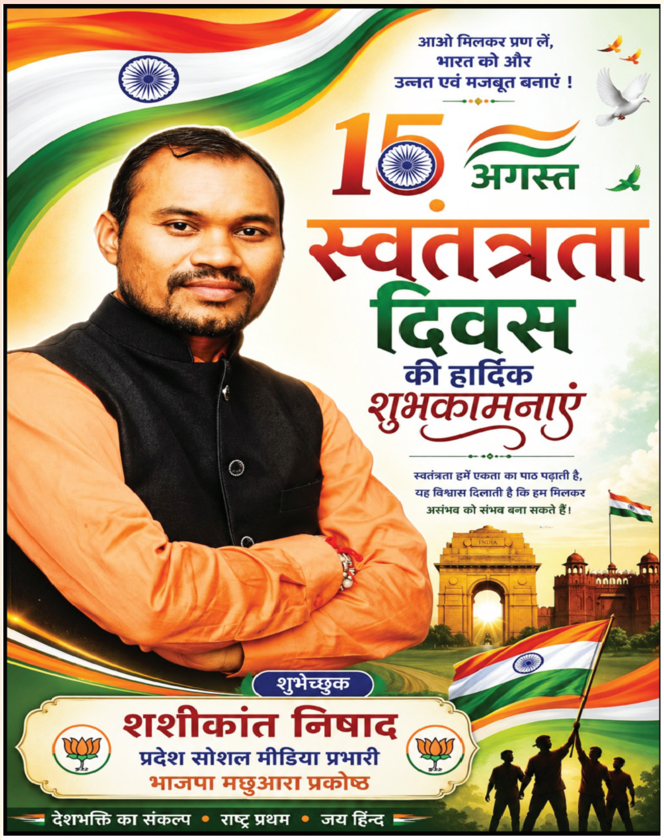
आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और
उन्नत एवं मजबूत बनाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
स्वतंत्रता हमें एकता का पाठ पढ़ाती है,
यह विश्वास दिलाती है कि हम मिलकर
असंभव को संभव बना सकते हैं।
शुभेच्छुक
शशीकांत निषाद
प्रदेश सोशल मीडिया प्रभारी
भाजपा मछुआरा प्रकोष्ठ
देशभक्ति का संकल्प • राष्ट्र प्रथम • जय हिंद

स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
लीला राम डड़सेना
अध्यक्ष
ग्राम विकास समिति करहीभदर
पूर्व सरपंच
लोकेश डड़सेना
सदस्य
जनपद पंचायत बालोद

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊंचाइयों पर ले जाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
स्वतंत्रता का अर्थ केवल स्वतंत्र होना नहीं, बल्कि सही कार्य करने की स्वतंत्रता होना है।
वंदे मातरम् !
जय हिन्द !
जय भारत !
ग्राम पंचायत धोबेदंड
विकासखंड- डौंडी, जिला- बालोद (छ.ग.)
सरपंच
श्री संत राम रावटे
सचिव
अर्चना जाधव
उप सरपंच
मीराबाई दर्रो
समस्त पंचगण
ग्राम पंचायत धोबेदंड के समस्त पंचगण एवं ग्रामवासियों की ओर से आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।
एकता में शक्ति है, स्वच्छता में प्रगति है, शिक्षा में उन्नति है, और देशभक्ति में हमारी पहचान है।
आइए ! मिलकर मजबूत बनाएं अपना गाँव, अपना देश !

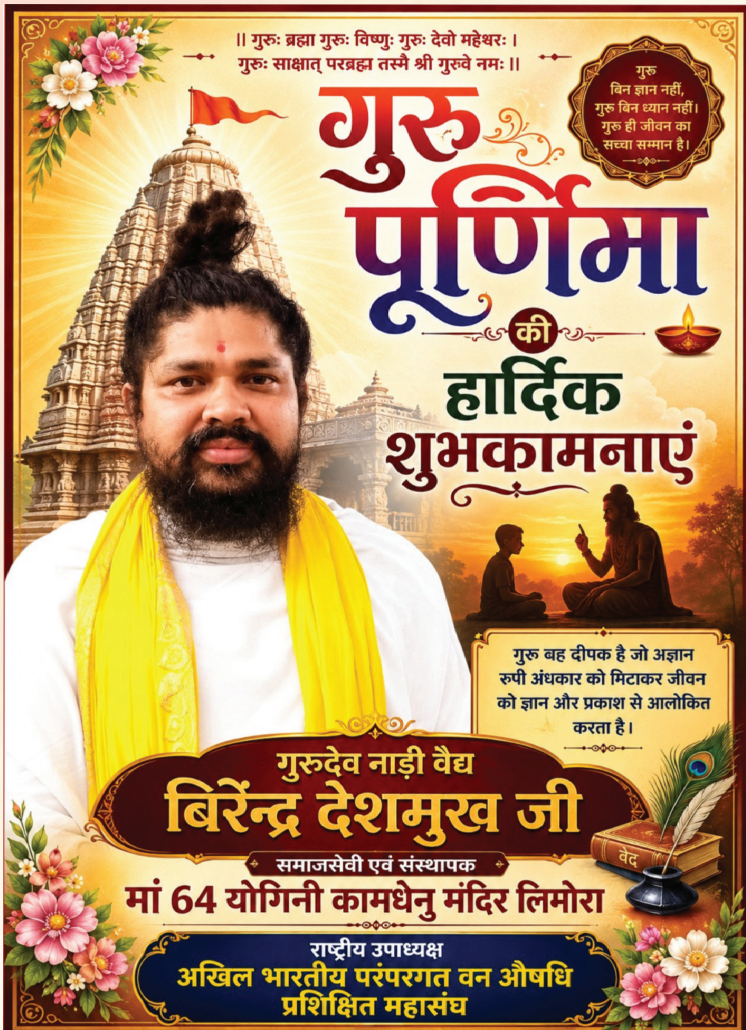
|| गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुः देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ||
गुरु
बिन ज्ञान नहीं,
गुरु बिन ध्यान नहीं।
गुरु ही जीवन का
सच्चा सम्मान है।
गुरु पूर्णिमा
की
हार्दिक
शुभकामनाएं
गुरु बह दीपक है जो अज्ञान रुपी अंधकार को मिटाकर जीवन को ज्ञान और प्रकाश से आलोकित करता है।
गुरुदेव नाड़ी वैद्य
बिरेंन्द्र देशमुख जी
समाजसेवी एवं संस्थापक
मां 64 योगिनी कामधेनु मंदिर लिमोरा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अखिल भारतीय परंपरगत वन औषधि प्रशिक्षित महासंघ
वेद

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊंचाईयों पर ले जाएं !
वंदे मातरम् !
जय हिन्द !
जय भारत !
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
गुंजा डेविड
दल्लीराजहरा
मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव
दर्शन बालोद मासिक पत्रिका
समस्त पाठकों, विज्ञापनदाताओं, शुभचिंतकों, पंचायत प्रतिनिधियों और जनप्रतिनिधियों को
आज़ादी के इस पावन पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं !

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा ।
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
जय हिन्द !
एक भारत
श्रेष्ठ भारत
सशक्त भारत
सनी जायसवाल
दल्लीराजहरा
बालोद जिला अध्यक्ष, इंटक कांग्रेस

आओ मिलकर देश का मान बढ़ाएं,
एकता, अखंडता और समृद्धि का दीप जलाएं !
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएँ
कमरौद वासियों को मिली
आज़ादी के इस उत्सव पर
बड़ी सौगात
गुंडरदेही विधायक
कुंवर सिंह निषाद जी
के प्रयासों से
तांदुला नदी में
22 करोड़ 14 लाख
की लागत से
हाई लेवल पुल निर्माण
की मिली स्वीकृति
विधायक जी का
बहुत-बहुत
आभार
स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं के साथ
पूर्व जिलाध्यक्ष
केश कुमार ठाकुर
आदिवासी कंवर पैकरा समाज जिला बालोद

आओ मिलकर देश को
स्वच्छ, सशक्त, समृद्ध और
आत्मनिर्भर बनाएं!
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
जय हिन्द!
वंदे मातरम्!
मधुकान्त यदु
सक्रिय सदस्य भाजपा
वार्ड 2 संजय नगर, बालोद
ममता मधुकान्त यदु
SBI Life मित्र
9174954567
चार टाईम
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

आओ मिलकर देश को
स्वच्छ, सशक्त, समृद्ध और
आत्मनिर्भर बनाएं!
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
जय हिन्द!
वंदे मातरम्!
तामेश्वर प्रसाद कौशल
प्रधानपाठक
शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय डोंगीतराई
विकासखंड - गुंडरदेही, जिला बालोद
जिला अध्यक्ष
छत्तीसगढ़ प्रदेश शिक्षक संघ बालोद
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
नरेंद्र सिन्हा
अध्यक्ष
ब्लॉक कांग्रेस कमेटी बालोद
धनेश्वरी सिन्हा
पूर्व सदस्य
जिला पंचायत बालोद

ANGEL TEACHER'S
TRAINING INSTITUTE
Great Opportunity to Become a Teacher
COURSES
NTT (2 Years) / YOGA
BAL VATIKA
Specially for
Bal-Vatika (KV)
Atmanand and all
Private School
Special Attention
Personality Development • Spoken English
• Live Teaching Practices • Activity • Interview Process
Facility To Pay
In Installment
Online & Offline
Classes
ADMISSION HELP LINE : 7067697310, 8583986724

करीब नौ महीने रायपुर जेल में रखा गया। जेल से लौटने के बाद भी उनके भीतर का संघर्ष और अधिक मजबूत हो गया। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के प्रचार-प्रसार को जारी रखा और अपने ओजस्वी भाषणों के माध्यम से लोगों को आजादी के आंदोलन से जोड़ते रहे। उनका जीवन अंग्रेजी शासन के विरुद्ध वैचारिक और सामाजिक संघर्ष का उदाहरण बन गया।

अर्जुंदा में जलाई विदेशी वस्त्रों की होली

महात्मा गांधी के स्वदेशी और खादी के विचारों का स्व. कलिहारी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने जीवनभर खादी पहनने का संकल्प लिया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उन्होंने ग्राम अर्जुंदा में विदेशी वस्त्रों की होली जलाकर लोगों को स्वदेशी खादी अपनाने के लिए प्रेरित किया। वे मानते थे कि देश की आजादी केवल अंग्रेजों को भारत से बाहर करने से पूरी नहीं होगी, बल्कि भारतीयों को स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और ग्राम स्वराज की दिशा में भी आगे बढ़ना होगा।

कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन में भी लिया भाग

स्व. उमेंद्र सिंह कलिहारी को अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए अंचल के प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ वर्ष 1930 में कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने का अवसर भी मिला। यह उनके राजनीतिक और सामाजिक सक्रिय जीवन का महत्वपूर्ण अध्याय था। उनका जीवन महात्मा गांधी के विचारों से लगातार प्रभावित रहा और वे गांधीवादी सिद्धांतों को केवल भाषणों तक सीमित रखने के बजाय अपने जीवन में उतारते रहे।

आजादी के बाद उसी स्कूल में हुई पुनर्नियुक्ति

देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद उनके संघर्ष और त्याग को सम्मान मिला। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के आदेश के तहत स्व. उमेंद्र सिंह कलिहारी की पुनर्नियुक्ति अर्जुंदा के उसी मिडिल स्कूल में सहायक शिक्षक के पद पर हुई, जहां से उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय होने के कारण नौकरी छोड़ी थी।स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के लिए शासन द्वारा उन्हें ताम्रपत्र देकर सम्मानित भी किया गया। यह सम्मान उनके संघर्ष की आधिकारिक पहचान और देश के प्रति उनके योगदान की स्मृति है।

आजादी के बाद भी जारी रहा ग्राम स्वराज का सपना

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी स्व. कलिहारी का संघर्ष समाप्त नहीं हुआ। वर्ष 1955 में वे संत विनोबा भावे के संपर्क में आए और उनके सर्वोदय कार्यक्रम से जुड़ गए। उन्होंने जनजागरण के लिए अनेक पदयात्राएं कीं और भूदान, ग्रामदान तथा ग्राम स्वराज आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।

उन्होंने ग्रामीण समाज को आत्मनिर्भर बनाने और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के लिए लगातार काम किया। वे दुर्ग जिला सर्वोदय संघ के अध्यक्ष रहे। इसके अलावा दुर्ग शिक्षक संघ के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने शिक्षकों की महत्वपूर्ण शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए भी प्रयास किए। उन्होंने अर्जुंदा परिक्षेत्र के कांग्रेस मंडलेश्वर के रूप में भी दायित्व निभाया।

विनोबा भावे की हीरक जयंती के अवसर पर उन्होंने दुर्ग जिले से करीब 50 हजार रुपये की लक्ष्य राशि का संग्रहण कर उन्हें सौंपा। उनका सार्वजनिक जीवन समाजसेवा, स्वदेशी, ग्राम स्वराज और गांधीवादी विचारधारा के प्रति समर्पित रहा।

जीवनभर निभाया स्वदेशी और अहिंसा का व्रत

महात्मा गांधी के आदर्शों का प्रभाव उनके जीवन के अंतिम पड़ाव तक दिखाई देता रहा। उन्होंने अहिंसा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखी और समय-समय पर विभिन्न संकल्पों का पालन किया।

महात्मा गांधी के जन्मशती वर्ष के दौरान उन्होंने स्वदेशी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत करते हुए मशीन से तैयार आटा और चावल ग्रहण नहीं करने की शपथ ली। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा और ग्राम स्वराज की अवधारणा से प्रभावित होकर उन्होंने शिक्षकीय जीवन से ही चरखे से सूत कातना भी प्रारंभ कर दिया था। महात्मा गांधी से उनकी भेंट उनके जीवन के सबसे सुखद और अविस्मरणीय क्षणों में से एक रही। गांधीजी के विचारों को उन्होंने अपने जीवन में जिस तरह आत्मसात किया, वह उन्हें एक विशिष्ट गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में पहचान देता है।

स्वतंत्रता सेनानी के साथ कवि भी थे कलिहारी

स्व. उमेंद्र सिंह कलिहारी केवल स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और शिक्षक ही नहीं, बल्कि एक संवेदनशील कवि और लेखक भी थे। वे डायरी लिखते थे, जिसमें उनके जीवन की अनेक भूली-बिसरी यादों के साथ-साथ उनके साहित्यिक विचार और रचनाएं भी दर्ज थीं। उनकी लेखनी में आजादी, समाज और तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों की झलक मिलती थी। देश की आजादी के अवसर पर उन्होंने 'भारत वैभव की झांकी' शीर्षक से कविता लिखी, जिसमें स्वतंत्रता के उस ऐतिहासिक क्षण की भावनाओं को अभिव्यक्त किया गया।

उनकी यह रचना बताती है कि वे केवल आजादी के आंदोलन के सक्रिय सेनानी ही नहीं थे, बल्कि अपने समय और समाज को गहराई से देखने और उसे शब्दों में व्यक्त करने वाले संवेदनशील साहित्यकार भी थे।

90 वर्ष की उम्र में हुआ निधन, लेकिन आज भी जीवित है उनकी स्मृति

लंबी बीमारी के बाद 28 अगस्त 1994 को 90 वर्ष की आयु में स्व. उमेंद्र सिंह कलिहारी का निधन हो गया।

लेकिन उनके विचार, संघर्ष और त्याग आज भी ग्राम भरदाकला और आसपास के क्षेत्र में लोगों की स्मृतियों में जीवित हैं। भरदाकला के लोग आज भी उन्हें 'बाबा उमेंद्र कलिहारी' के रूप में आत्मगौरव और श्रद्धा के साथ याद करते हैं। उनके योगदान के कारण उनका गांव 'गौरव ग्राम' के रूप में भी पहचान बना चुका है।

दुर्ग में जन्मे घनश्याम सिंह गुप्त ने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर संविधान निर्माण तक निभाई ऐतिहासिक भूमिका, आज बालोद में उनके नाम पर स्थापित महाविद्यालय नई पीढ़ी को दे रहा राष्ट्रसेवा की प्रेरणा

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

भारत के स्वतंत्रता संग्राम और संविधान निर्माण के इतिहास में छत्तीसगढ़ की धरती का योगदान अत्यंत गौरवपूर्ण रहा है। इस गौरवशाली विरासत में घनश्याम सिंह गुप्त का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी, ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष, अनेक बार जेल यात्रा, विधायी कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका और भारतीय संविधान के हिंदी रूपांतरण में योगदान—घनश्याम सिंह गुप्त का पूरा जीवन राष्ट्रसेवा और जनहित के लिए समर्पित रहा। बालोद जिला मुख्यालय स्थित लीड कॉलेज का नामकरण उनके सम्मान में शासकीय घनश्याम सिंह गुप्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय किया जाना उनके योगदान को सम्मान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। आज यह महाविद्यालय शिक्षा के साथ-साथ जिले की युवा पीढ़ी को उनके संघर्ष और राष्ट्रनिर्माण की प्रेरणा भी देता है।

दुर्ग में जन्म, शिक्षा के दौरान ही जागा राष्ट्रप्रेम

घनश्याम सिंह गुप्त का जन्म 22 दिसंबर 1885 को दुर्ग में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री गैंदसिंह और माता का नाम श्रीमती भानुमति था। उन्होंने रायपुर, जबलपुर और इलाहाबाद में विधि की शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन में ही उनमें नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रप्रेम की भावना विकसित होने लगी थी। इसी दौरान वे देश के प्रमुख नेता पंडित मदनमोहन मालवीय के संपर्क में आए, जिससे उनकी रुचि देश की राजनीति और स्वतंत्रता आंदोलन की ओर और गहरी हुई। बंगाल विभाजन के विरोध में उन्होंने महाविद्यालय में हड़ताल का नेतृत्व भी किया।

जलियांवाला बाग कांड के विरोध से स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रियता

वर्ष 1919 में वे कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए। वहां से लौटने के बाद उन्होंने जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में सभा आयोजित कर अंग्रेजी शासन के खिलाफ जनभावना को मजबूत किया। वर्ष 1920 में कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में उन्होंने दुर्ग के प्रतिनिधियों का नेतृत्व किया। महात्मा गांधी के आह्वान पर उन्होंने विधान परिषद के चुनाव से अपना नाम

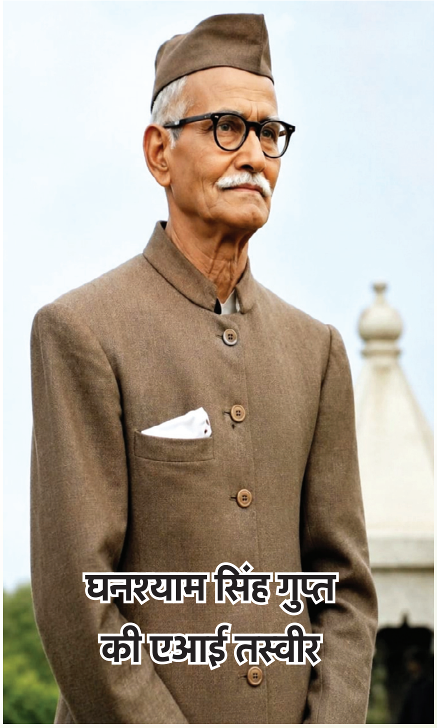

घनश्याम सिंह गुप्त की एआई तस्वीर

वापस लेकर स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की।

कांग्रेस संगठन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी

मई 1921 में मध्यप्रांत की प्रांतीय राजनीतिक परिषद ने घनश्याम सिंह गुप्त को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रांत की ओर से भाग लेने के लिए स्थायी सदस्य के रूप में चुना। वे कई वर्षों तक इस जिम्मेदारी का निर्वहन करते रहे। वर्ष 1923 में दुर्ग जिला राजनीतिक परिषद में वे मुख्य वक्ता रहे और इसी वर्ष दुर्ग से विधान परिषद के लिए निर्वाचित हुए। इसके बाद वे लगातार विभिन्न चुनावों में निर्वाचित होते रहे। वर्ष 1925 में वे दुर्ग नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष भी चुने गए।

अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष और जेल यात्रा

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान घनश्याम सिंह गुप्त अंग्रेजी शासन के खिलाफ लगातार मुखर रहे। जून 1930 में उन्होंने पंडित रविशंकर शुक्ल की गिरफ्तारी की आलोचना की। जंगल कानून तोड़ने के आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण उन्हें अगस्त 1930 में गिरफ्तार किया गया और छह माह के कारावास तथा 50 रुपये जुर्माने की सजा सुनाई गई। जुर्माना नहीं भरने पर उन्हें एक माह की अतिरिक्त सजा भी भुगतनी पड़ी। उन्होंने 31 दिसंबर 1932 को गांधी चौक में झंडा फहराकर भी राष्ट्रभक्ति का संदेश दिया। उस समय मध्यप्रांत में कांग्रेस की विभिन्न क्षेत्रीय समितियों को एकीकृत कर संयुक्त संगठन बनाने की जिम्मेदारी भी उन्हें सौंपी गई थी। ब्रिटिश शासन ने इस गतिविधि को रोकने के लिए 28 मई 1932 को कामठी में उन्हें गिरफ्तार किया और उन पर 1500 रुपये का जुर्माना लगाया।

जुर्माना नहीं भर पाने के कारण उनकी पुस्तकें तक बेच दी गईं।

जब महात्मा गांधी दुर्ग आए और घनश्याम सिंह गुप्त के घर ठहरे

घनश्याम सिंह गुप्त के जीवन का एक गौरवपूर्ण प्रसंग नवंबर 1933 में महात्मा गांधी की छत्तीसगढ़ यात्रा से जुड़ा है। गांधीजी जब दुर्ग पहुंचे तो वे घनश्याम सिंह गुप्त के घर पर ही ठहरे। इसके बाद दुर्ग जिला हरिजन सेवा संघ का गठन हुआ और घनश्याम सिंह गुप्त को उसका अध्यक्ष बनाया गया। वे दुर्ग के खादी उद्योग केंद्र से भी जुड़े रहे, जिसकी स्थापना वर्ष 1936 में हुई थी। आर्य समाज से जुड़े रहते हुए उन्होंने सामाजिक सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किए।

बालोद से विधानसभा तक पहुंची ऐतिहासिक राजनीतिक यात्रा

वर्ष 1934 में वे केंद्रीय धारा सभा के लिए कांग्रेस की ओर से चुने गए। इसके बाद वर्ष 1937 में बालोद क्षेत्र से प्रांतीय धारा सभा के लिए निर्वाचित हुए और मध्यप्रांत एवं बरार विधानसभा के अध्यक्ष बने। ब्रिटिश शासनकाल में गठित सरकारों के दौर में भी उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष के रूप में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई। बाद में वर्ष 1946 में भी वे प्रांतीय विधानसभा के लिए निर्वाचित हुए और मध्यप्रांत एवं बरार विधानसभा के अध्यक्ष बनाए गए। बालोद क्षेत्र से उनका यह जुड़ाव आज भी ऐतिहासिक महत्व रखता है। यही कारण है कि बालोद में उनके नाम पर स्थापित महाविद्यालय उनके सार्वजनिक जीवन और राष्ट्रनिर्माण में योगदान की स्मृति को जीवित रखता है।

युद्ध विरोधी भाषण के कारण फिर हुई गिरफ्तारी

वर्ष 1939 में विधान परिषद भंग होने के बाद ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध युद्ध विरोधी भाषण देने के कारण घनश्याम सिंह गुप्त को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी गई। वे 29 नवंबर 1940 से 10 सितंबर 1941 तक नागपुर जेल में रहे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उनकी जेल यात्राएं इस बात का प्रमाण हैं कि उन्होंने अपने सिद्धांतों और राष्ट्रहित से कभी समझौता नहीं किया।

संविधान के हिंदी रूपांतरण में निभाई ऐतिहासिक भूमिका

स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण के दौर में भी घनश्याम सिंह गुप्त ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे संविधान के हिंदी रूपांतरण से जुड़ी समिति के सदस्य और हिंदी अनुवाद कार्य से जुड़े प्रमुख व्यक्तित्वों में शामिल रहे। उन्होंने संविधान की जटिल विधिक भाषा को हिंदी में सहज रूप देने के प्रयास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। संविधान को हिंदी भाषी जनमानस तक पहुंचाने के इस कार्य में उनका योगदान छत्तीसगढ़ के लिए विशेष गौरव का विषय है।

राष्ट्रसेवा, समाज सुधार और शिक्षा के लिए समर्पित रहा जीवन

घनश्याम सिंह गुप्त ने स्वतंत्रता आंदोलन और राजनीति के साथ-साथ आर्य समाज के माध्यम से समाज सुधार और शिक्षा के विकास के लिए भी काम किया। वे सामाजिक कुरीतियों के विरोधी और शिक्षा के समर्थक थे। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि एक व्यक्ति स्वतंत्रता सेनानी, विधिवेत्ता, जनप्रतिनिधि, विधानसभा अध्यक्ष और समाज सुधारक के रूप में अलग-अलग क्षेत्रों में योगदान देते हुए राष्ट्रनिर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बालोद के युवाओं के लिए आज भी प्रेरणा हैं घनश्याम सिंह गुप्त

घनश्याम सिंह गुप्त का निधन 13 जून 1976 को हुआ, लेकिन उनका योगदान आज भी जीवित है। स्वतंत्रता आंदोलन में संघर्ष से लेकर संविधान के हिंदी रूपांतरण तक उनकी यात्रा नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। बालोद में उनके नाम पर स्थापित शासकीय घनश्याम सिंह गुप्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि उस महान व्यक्तित्व की स्मृति और राष्ट्रसेवा की विरासत का प्रतीक भी है। आज जब बालोद के विद्यार्थी इसी महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर अपने भविष्य का निर्माण कर रहे हैं, तब उनके लिए यह जानना भी प्रेरणादायी है कि इसी क्षेत्र से जुड़े एक महान व्यक्तित्व ने देश की आजादी के लिए जेल यातनाएं सहीं, लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत किया और संविधान को आम जनता की भाषा में समझने योग्य बनाने में योगदान दिया। घनश्याम सिंह गुप्त का जीवन हमें यही संदेश देता है कि शिक्षा और ज्ञान का सर्वोच्च उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि राष्ट्र और समाज के निर्माण में योगदान देना है।

साभार : तस्वीर के लिए संजीव तिवारी
'विधान पुरुष : घनश्याम सिंह गुप्त'
नामक पुस्तक के लेखक

कंगला मांझी: बालोद की धरती से उठी वह आवाज, जिसने जल-जंगल-जमीन के अधिकार और आदिवासी स्वाभिमान की लड़ाई को देशभर में पहुंचाया

बघमार में आज भी जिंदा है कंगला मांझी की विरासत, तीन दिनों तक सैन्य अनुशासन में जुटते हैं देशभर के मांझी सरकार के सैनिक

बालोद/ डौंडीलोहारा ✍दर्शन बालोद ✍

छत्तीसगढ़ के बालोद जिले के डौंडीलोहारा विकासखंड का बघमार गांव सामान्य गांवों से बिल्कुल अलग पहचान रखता है। घने जंगलों के बीच बसा यह गांव हर वर्ष दिसंबर में तीन दिनों के लिए देशभर से आने वाले आदिवासी समाज के लोगों और मांझी सरकार के सैनिकों की मौजूदगी से जीवंत हो उठता है। खाकी वर्दी पहने सैकड़ों पुरुष-महिलाएं अनुशासन-बद्ध तरीके से यहां पहुंचते हैं। तंबू लगते हैं, अस्थायी बाजार सजते हैं और गांव का वातावरण किसी सैन्य शिविर जैसा दिखाई देने लगता है। यह आयोजन उस महान व्यक्तित्व की स्मृति से जुड़ा है, जिन्हें आदिवासी समाज कंगला मांझी के नाम से याद करता है।

कौन थे कंगला मांझी, क्यों बना बघमार उनकी कर्मभूमि-कंगला मांझी का वास्तविक नाम हीरा सिंह देव मांझी बताया जाता है।

कंगला मांझी की मूल तस्वीर

उनका जन्म बस्तर क्षेत्र के तेलावट गांव में हुआ था। आदिवासी समाज के अधिकारों, जल-जंगल-जमीन के संरक्षण और अंग्रेजी शासन के अन्याय के खिलाफ उन्होंने कम उम्र से ही संघर्ष का रास्ता अपनाया। वर्ष 1913 से वे स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े और बाद में बालोद जिले के डौंडीलोहारा क्षेत्र के बघमार गांव को अपनी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बनाया। उन्होंने आदिवासी समाज को संगठित करने और उनके भीतर अधिकारों तथा स्वाभिमान की भावना जगाने का काम किया। उनके आंदोलन से प्रभावित होकर देश के विभिन्न हिस्सों में उनके अनुयायी और मांझी सरकार के सैनिक तैयार हुए।

अंग्रेजों के खिलाफ आवाज से लेकर आदिवासी अधिकारों की लड़ाई तक

कंगला मांझी का संघर्ष केवल अंग्रेजी शासन के विरोध तक सीमित नहीं था। वे आदिवासियों को उनके जल, जंगल और जमीन पर अधिकार तथा सामाजिक सम्मान दिलाने के लिए भी लगातार आवाज उठाते रहे। उनका मानना था कि आदिवासी समाज की संस्कृति, परंपरा और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के बिना वास्तविक विकास संभव नहीं है। इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए आज भी मांझी सरकार से जुड़े लोग समाज को संगठित करने और आदिवासी हितों के मुद्दों पर सक्रिय रहने का दावा करते हैं।

महात्मा गांधी से मुलाकात और राष्ट्रीय नेताओं से संपर्क का दावा

कंगला मांझी के आंदोलन से जुड़े लोगों के अनुसार, स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उनका संपर्क राष्ट्रीय नेताओं से भी रहा। बताया जाता है कि 1920 में कोलकाता में उनकी महात्मा

गांधी से मुलाकात हुई, जिसके बाद उनके आंदोलन को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष की विचारधारा से और अधिक प्रेरणा मिली। उनके अनुयायी यह भी बताते हैं कि कंगला मांझी ने गांधीजी के सत्य, अहिंसा और स्वावलंबन के विचारों से प्रेरणा लेते हुए आदिवासी समाज को संगठित किया।

नेहरू से जुड़ी स्मृतियां और राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत

कंगला मांझी से जुड़े लोगों के अनुसार, उनके आंदोलन को देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का भी समर्थन और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था। बताया जाता है कि वर्ष 1951 में नेहरू द्वारा उन्हें एक बिल्ला प्रदान किया गया था। वर्ष 1956 में उन्हें दुर्ग जिले की कचहरी में तिरंगा फहराने का गौरव प्राप्त होने का भी उल्लेख मिलता है। ये प्रसंग कंगला मांझी की स्मृति से जुड़े महत्वपूर्ण दावे हैं, जिन्हें उपलब्ध दस्तावेजों के आधार पर और अधिक प्रमाणित एवं संरक्षित किए जाने की आवश्यकता है।

इंदिरा गांधी से मुलाकात की तस्वीर भी बनी ऐतिहासिक स्मृति

कंगला मांझी की विरासत से जुड़े परिवार और संगठन के पास उपलब्ध पुरानी तस्वीरों में 31 सितंबर 1984 की एक तस्वीर को अंतरराष्ट्रीय प्रधानमंत्री भेंट के रूप में दर्शाया गया है, जिसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ कंगला मांझी से जुड़े प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात दिखाई देती है। यह तस्वीर आज उनके आंदोलन और राष्ट्रीय स्तर पर बनी पहचान से जुड़े महत्वपूर्ण स्मृति दस्तावेज के रूप में सामने आती है। हालांकि, इस तस्वीर से संबंधित कार्यक्रम का आधिकारिक विवरण और मुलाकात का सटीक संदर्भ स्वतंत्र रूप से प्रमाणित किए जाने की आवश्यकता है, इसलिए इसे ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में संरक्षित करना और इसके संदर्भ की पुष्टि करना महत्वपूर्ण होगा।

तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी के साथ कंगला मांझी (मूल तस्वीर का एआई रूपांतरण)

बघमार में हर वर्ष लगता है कंगला मांझी स्मृति का अनूठा जमावड़ा

कंगला मांझी की स्मृति में प्रत्येक वर्ष दिसंबर में बघमार में तीन दिवसीय आयोजन होता है। देश के विभिन्न राज्यों से मांझी सरकार के सैनिक और अनुयायी यहां पहुंचते हैं। सर्द रातों में कई लोग तंबुओं और पेड़ों के नीचे रुककर आयोजन में शामिल होते हैं। तीन दिनों तक जल, जंगल, जमीन, शिक्षा, सामाजिक विकास और आदिवासी समाज से जुड़े विभिन्न विषयों पर चिंतन-मनन किया जाता है। कंगला मांझी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके संघर्षों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया जाता है।

अनुशासन बना मांझी सैनिकों की पहचान

बघमार पहुंचने वाले मांझी सरकार के सैनिकों की सबसे अलग पहचान उनका अनुशासन है। दूर-दराज के राज्यों से आने वाले लोग निर्धारित वेशभूषा में रहते हैं और पूरे आयोजन के दौरान एक अनुशासित व्यवस्था का पालन करते हैं। गांव में कुछ अस्थायी दुकानें भी सजती हैं, जहां वर्दी, जूते, बेल्ट, बैग और संगठन से जुड़े प्रतीक चिन्ह उपलब्ध होते हैं। तीन दिनों तक बघमार का माहौल आदिवासी परंपरा, सामाजिक चिंतन और संगठनात्मक अनुशासन का अनूठा संगम बन जाता है।

कंगला मांझी की शहादत और बघमार से जुड़ी अमर स्मृति

कंगला मांझी का निधन 5 दिसंबर 1984 को हुआ था। उनकी स्मृति में प्रत्येक वर्ष 5 दिसंबर को समाधि स्थल पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों से मांझी सरकार के सैनिक पहुंचते हैं और पारंपरिक तरीके से उन्हें सलामी देकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनकी स्मृति में आयोजित यह कार्यक्रम अब बघमार की विशिष्ट पहचान बन चुका है।

आज भी जीवित है कंगला मांझी का विचार

कंगला मांझी का जीवन आदिवासी समाज के अधिकार, स्वाभिमान और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की लड़ाई से जुड़ा हुआ है। उनके अनुयायियों के लिए बघमार केवल एक गांव नहीं, बल्कि संघर्ष, संगठन और सामाजिक चेतना की धरती है। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में कंगला मांझी जैसे व्यक्तित्वों की भूमिका पर गंभीर शोध और दस्तावेजीकरण की जरूरत है, ताकि आने वाली पीढ़ियां यह जान सकें कि देश की आजादी और सामाजिक अधिकारों की लड़ाई केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं थी, बल्कि जंगलों और गांवों के बीच भी अनेक लोगों ने अपने तरीके से संघर्ष की मशाल जलाए रखी थी। कंगला मांझी की कहानी आज भी यही संदेश देती है कि किसी भी समाज की असली ताकत उसकी एकता, स्वाभिमान और अपनी मिट्टी, संस्कृति एवं प्राकृतिक विरासत के प्रति जिम्मेदारी में निहित होती है। बघमार में हर वर्ष जुटने वाले मांझी सरकार के सैनिक इसी विरासत को जीवित रखने का प्रयास करते नजर आते हैं।

खादी का संदेश लेकर गांव-गांव जगाई आजादी की अलख, अंग्रेजों से लोहा लेने वाले हीरालाल सोनबोइर बने शिक्षक, विधायक और स्वतंत्रता सेनानी

डौंडीलोहारा के भरदा गांव से निकले उस जुझारू सेनानी की कहानी, जिन्हें राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने 1961 में उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में किया सम्मानित; तीन बार विधायक बनकर भी निभाई जनसेवा की जिम्मेदारी

बालोद/डौंडीलोहारा ✍दर्शन बालोद ✍

देश की आजादी की लड़ाई केवल बड़े शहरों और चर्चित नेताओं तक सीमित नहीं थी। छत्तीसगढ़ के गांव-गांव में भी ऐसे अनेक वीर सपूत हुए, जिन्होंने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष और जनजागरण में लगा दिया। डौंडीलोहारा विकासखंड के छोटे से ग्राम भरदा निवासी हीरालाल सोनबोइर भी ऐसे ही कर्मठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, जिन्होंने शिक्षक रहते हुए गांव-गांव में आजादी की अलख जगाई। अंग्रेजों के खिलाफ पर्चे बांटने से लेकर जेल जाने तक का संघर्ष करने वाले हीरालाल सोनबोइर ने आजादी के बाद शिक्षा के क्षेत्र में भी अपनी अमिट पहचान बनाई। वर्ष 1961 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा उन्हें उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में सम्मानित किया गया। बाद में वे राजनीति में आए और तीन बार विधायक चुने गए।

किसान परिवार में जन्मे नाम पड़ा हीरालाल

हीरालाल सोनबोइर का जन्म 1 जनवरी 1907 को ग्राम भरदा के एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता घनाराम साहू और माता ग्वालिन बाई थीं। उनके जन्म के समय एक केंवट ने उनकी मां से कहा था— "तोर बेटा हीरा कस चमकत हे।" बच्चे के उज्ज्वल भविष्य की इस बात ने परिवार को प्रभावित किया और उनका नाम हीरालाल रखा गया। आगे चलकर यही बालक अपने संघर्ष, शिक्षा और जनसेवा से क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल हुआ।

'कपड़ा पहनो खादी, जय बोलो महात्मा गांधी' ने मन में जलाई आजादी की चिंगारी

हीरालाल सोनबोइर जब महज सात-आठ वर्ष के थे, तब उन्होंने एक नारा सुना—"कपड़ा पहनो खादी के, जय बोलो महात्मा गांधी के।" यह नारा उनके बालमन पर ऐसा प्रभाव छोड़ गया कि उनके भीतर महात्मा गांधी और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति श्रद्धा पैदा हो गई। यही श्रद्धा धीरे-धीरे देश को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने के संकल्प में बदल गई। उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वर्ष 1924 में प्राथमिक शाला सोरर में शिक्षक के रूप में सेवाएं शुरू कीं। इसके बाद वर्ष 1928 में अर्जुंदा मिडिल स्कूल में शिक्षक बने। शिक्षक का दायित्व निभाते हुए भी उनके मन में देश को आजाद कराने का जुनून कम नहीं हुआ।

स्कूल की छुट्टी के बाद तिरंगा लेकर निकल पड़ते थे गांव-गांव

हीरालाल सोनबोइर केवल कक्षा में बच्चों को पढ़ाने वाले शिक्षक नहीं थे, बल्कि वे समाज में राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले जनशिक्षक भी बन गए थे। सप्ताह में कई दिन स्कूल की छुट्टी के बाद वे बच्चों और अन्य शिक्षकों को साथ लेकर कांदुल, परसतरई, मनकी, मटिया सहित आसपास के गांवों में जनजागरण के लिए निकल पड़ते थे। हाथों में तिरंगा होता और गांवों में चौपाल लगाकर लोगों को देश की आजादी के आंदोलन से जोड़ने का प्रयास किया जाता। चौपालों में ग्रामीणों की भीड़ जुटती और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े नेतृत्वकर्ता लोगों को अंग्रेजी शासन के खिलाफ एकजुट होने का संदेश देते। इस दौरान उमेंद सिंह कलिहारी और छोटेलाल सहित अन्य साथियों के साथ भी उन्होंने जुलूस और जनजागरण कार्यक्रमों में भाग लिया।

अंग्रेजों की आंखों में खटकने लगे, पर्चे बांटकर बढ़ाते रहे आंदोलन

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हीरालाल सोनबोइर का संघर्ष और अधिक तेज हो गया। पैरी (सिकोसा) में पदस्थ रहने के दौरान भी वे अंग्रेजी शासन के खिलाफ जनजागरण से जुड़े

रहे। शिक्षक होने के साथ वे डाकखाने का काम भी देखते थे। इसी दौरान वे अंग्रेजी शासन के खिलाफ लिखे गए पर्चों को लोगों तक पहुंचाने में सक्रिय रहे। बताया जाता है कि अंग्रेजों को जब इन पर्चों के वितरण की जानकारी मिली तो उन्होंने मामले की जांच के लिए सीआईडी हवलदार को पैरी भेजा। हीरालाल पूरे दिन सीआईडी के अधिकारी के साथ रहे, लेकिन पर्चे को सुरक्षित तरीके से एक किसान रामप्रसाद को सौंप दिया गया, जिसे पैरावट में छिपा दिया गया। अंग्रेजी अफसरों की तमाम कोशिशों के बावजूद उन्हें वह पर्चा नहीं मिल सका।इसके बाद अंग्रेजी शासन ने सीआईडी, थानेदार और पटवारी को मामले की जांच के लिए भेजा। हीरालाल ने उन्हें बताया कि पर्चे लोगों में बांटे जा चुके हैं और अब लोगों से ही उन्हें प्राप्त किया जा सकता है। अंग्रेजी शासन को यह गतिविधियां नागवार गुजरीं और आखिरकार उन्हें नौकरी से बर्खास्त कर जेल भेज दिया गया। देश की आजादी के लिए उनका यह संघर्ष उनके साहस और राष्ट्रभक्ति का प्रमाण बन गया।

आजादी की पहली सुबह डौंडीलोहारा में मनाया ऐतिहासिक जश्न

जब 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ, उस समय हीरालाल सोनबोइर डौंडीलोहारा में पदस्थ थे। आजादी की खबर ने पूरे क्षेत्र में उत्साह भर दिया। तत्कालीन दीवान मन्नाराम पांडेय, चंद्रिका प्रसाद पांडेय और पंडित राधेश्याम शर्मा की मौजूदगी में ग्रामीणों की बैठक हुई और स्वतंत्रता दिवस को ऐतिहासिक रूप से मनाने का निर्णय लिया गया। आजादी की खुशी में तत्काल विजय चबूतरे का निर्माण कराया गया। सुबह बच्चों का जुलूस निकाला गया और पूरा क्षेत्र देशभक्ति के रंग में रंग गया। जमींदारों द्वारा बच्चों को पेंट-शर्ट दिए गए, वहीं जरूरतमंद और गरीब लोगों को भोजन कराया गया तथा वस्त्र वितरित किए गए। यह दिन हीरालाल सोनबोइर और क्षेत्र के लोगों के लिए जीवनभर याद रहने वाला ऐतिहासिक अवसर बन गया।

राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने किया उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में सम्मान

स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने के बाद हीरालाल सोनबोइर ने शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके समर्पण और उत्कृष्ट सेवाओं को देखते हुए वर्ष 1961 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने उन्हें उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में सम्मानित किया। यह सम्मान पाने वाले वे क्षेत्र के पहले स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शिक्षक के रूप में भी याद किए जाते हैं। सम्मान प्राप्त कर लौटने पर लाटाबोड़ में उनका भव्य स्वागत किया गया।

60 वर्ष की उम्र में राजनीति में प्रवेश, तीन बार बने विधायक

हीरालाल सोनबोइर का सार्वजनिक जीवन केवल स्वतंत्रता संग्राम और शिक्षा तक सीमित नहीं रहा। करीब 60 वर्ष की उम्र में कांग्रेस ने उन्हें बालोद विधानसभा क्षेत्र से अपना प्रत्याशी बनाया। जनता के बीच उनकी लोकप्रियता और जनसेवा की भावना के कारण वे चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंचे। वे 1967, 1972 और 1980 में विधायक रहे और जनहित के मुद्दों को सदन तक पहुंचाते हुए क्षेत्र की सेवा की।

90 वर्ष की उम्र में विदा हुआ आजादी का वह सिपाही

एक साधारण किसान परिवार में जन्म लेकर स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक, राष्ट्रपति सम्मानित शिक्षक और तीन बार विधायक बनने तक का सफर तय करने वाले हीरालाल सोनबोइर ने अपना पूरा जीवन देश, समाज, शिक्षा और जनसेवा को समर्पित किया। 16 अप्रैल 1997 को 90 वर्ष की आयु में उन्होंने अंतिम सांस ली। हीरालाल सोनबोइर का जीवन आज भी नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा है। उन्होंने यह साबित किया कि देशभक्ति केवल रणभूमि में लड़ने का नाम नहीं, बल्कि अपने समय, ज्ञान और सामर्थ्य को राष्ट्र के लिए समर्पित करने का भी नाम है। शिक्षक बनकर उन्होंने बच्चों को शिक्षा दी, तिरंगा लेकर गांव-गांव राष्ट्रीय चेतना जगाई, अंग्रेजी शासन का विरोध किया, जेल की यातनाएं सहीं और आजादी के बाद भी शिक्षा तथा राजनीति के माध्यम से समाज की सेवा करते रहे। डौंडीलोहारा के भरदा गांव के इस सपूत की कहानी छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का वह गौरवशाली अध्याय है, जिसे नई पीढ़ी तक पहुंचाना और संजोकर रखना हम सभी की जिम्मेदारी है।

गुरु पूर्णिमा विशेष: सेवा, साधना और समर्पण की मिसाल हैं नाड़ी वैद्य गुरुदेव वीरेंद्र देशमुख

नाड़ी देखकर शरीर की समस्या पहचानने का दावा, वर्षों से जरूरतमंदों की निःशुल्क सेवा; शिक्षा, स्वास्थ्य और मानवता के लिए भी बढ़ाए मदद के हाथ

बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर उन व्यक्तित्वों को याद करना जरूरी है, जिन्होंने अपने जीवन को केवल स्वयं तक सीमित न रखते हुए समाज और मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। ऐसे ही प्रेरणादायी व्यक्तित्व हैं बालोद जिले के ग्राम भेंड़ी (सुरेगांव) निवासी गुरुदेव वीरेंद्र कुमार देशमुख, जो लंबे समय से नाड़ी वैद्य के रूप में लोगों की सेवा करने के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों और जरूरतमंदों की मदद के लिए भी सक्रिय हैं। उनका जीवन सेवा, परोपकार और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना का प्रेरक उदाहरण है।

8 मार्च 1987 को जन्मे गुरुदेव वीरेंद्र कुमार देशमुख, पिता श्री राम सिंह देशमुख के सुपुत्र हैं और अन्य पिछड़ा वर्ग के कुर्मी समाज से आते हैं। नाड़ी चिकित्सा के क्षेत्र में उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके पास दूर-दूर से लोग अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं लेकर पहुंचते हैं। वे नाड़ी परीक्षण के माध्यम से शरीर की स्थिति और संभावित समस्याओं को समझने का प्रयास करते हैं और इसके आधार पर आयुर्वेदिक औषधियों से उपचार करते हैं। उनके अनुसार कई बार मरीजों को अपनी समस्या समझने के लिए महंगी जांचों की आवश्यकता नहीं पड़ती और नाड़ी परीक्षण के माध्यम से शरीर की स्थिति का आकलन किया जा सकता है। हालांकि गंभीर बीमारी या आपात स्थिति में वे आधुनिक चिकित्सा जांच और विशेषज्ञ चिकित्सकीय परामर्श की आवश्यकता को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। गुरुदेव वीरेंद्र देशमुख का कहना है कि चिकित्सा सेवा उनके लिए केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि मानव सेवा का माध्यम है। वे उपचार के लिए अलग से कोई फीस नहीं लेते, बल्कि मरीजों से केवल आवश्यक दवाइयों की लागत ली जाती है। आर्थिक रूप से कमजोर और जरूरतमंद लोगों को कई बार निःशुल्क उपचार एवं सहायता भी प्रदान की जाती है। वर्ष 2005 से वे विभिन्न स्थानों पर नियमित रूप से नाड़ी परीक्षण एवं सेवा कार्य कर रहे हैं। प्रत्येक रविवार और गुरुवार को कामधेनु काली मंदिर, भेंड़ी-सुरेगांव, सोमवार को इंदिरा मार्केट दुर्ग, मंगलवार को कमला कॉलेज के पास राजनांदगांव, बुधवार को एलआईसी कार्यालय के पास बालोद तथा शनिवार को धनोरा-दुर्ग में लोगों को सेवा उपलब्ध कराते हैं। नाड़ी परीक्षण और आयुर्वेदिक उपचार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के कारण लकवा, वात संबंधी समस्या, अस्थमा सहित विभिन्न स्वास्थ्य परेशानियों से जूझ रहे लोग भी उनसे परामर्श लेने पहुंचते हैं। वे लोगों को अपनी स्वास्थ्य समस्या के संबंध में मार्गदर्शन देने के साथ आयुर्वेदिक औषधियों के माध्यम से उपचार उपलब्ध कराने का प्रयास करते हैं। उनके पास आने वाले कई मरीज उनके उपचार से लाभ मिलने की बात भी बताते हैं। हालांकि किसी भी गंभीर बीमारी के उपचार में योग्य चिकित्सक की सलाह और आवश्यक चिकित्सकीय जांच को प्राथमिकता देना जरूरी है।

इलाज के साथ जरूरतमंदों की मदद में भी आगे

गुरुदेव वीरेंद्र देशमुख की पहचान केवल नाड़ी वैद्य के रूप में ही नहीं, बल्कि एक संवेदनशील समाजसेवी के रूप में भी है। जरूरतमंद परिवारों की परेशानी सामने आने पर वे अपनी क्षमता के अनुसार आर्थिक और सामाजिक सहयोग करते रहते हैं। हाल ही में नवापारा राजिम में एक पीड़ित परिवार को उन्होंने 31 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की। इससे पहले भी वे कई जरूरतमंदों की मदद कर चुके हैं। उनका मानना है कि समाज में यदि सक्षम लोग अपने

आसपास के जरूरतमंद परिवारों का सहयोग करें तो कई कठिन परिस्थितियों को आसानी से कम किया जा सकता है।

शिक्षा के लिए 8 लाख रुपये का सहयोग, स्कूल निर्माण में निभाई महत्वपूर्ण भूमिका

सेवा की इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए गुरुदेव वीरेंद्र देशमुख ने नवागांव पुरदा क्षेत्र में स्कूल निर्माण के लिए 8 लाख रुपये का सहयोग प्रदान किया है। उन्होंने अपने खर्चे से दुर्ग जिले के ग्राम नवागांव (पुरदा) में स्कूल के लिए कमरे के निर्माण की पहल की और इसके भूमिपूजन में भी शामिल हुए। शिक्षा के क्षेत्र में उनका यह योगदान ग्रामीण बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। उनका मानना है कि समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है, जब स्वास्थ्य के साथ शिक्षा को भी मजबूत किया जाए।

भेंड़ी में कामधेनु मंदिर बना आस्था और सेवा का केंद्र

ग्राम भेंड़ी में उनके द्वारा निर्मित विशाल मंदिर परिसर भी उनकी धार्मिक आस्था और सेवा भावना का प्रतीक है। यहां कामधेनु की विशाल प्रतिमा के साथ मां काली की प्रतिमा विराजित है। मंदिर परिसर में ही लोगों को नाड़ी परीक्षण और स्वास्थ्य संबंधी मार्गदर्शन भी दिया जाता है। कामधेनु प्रतिमा के निर्माण में कोलकाता, जगन्नाथपुरी और इलाहाबाद सहित विभिन्न स्थानों से मिट्टी एवं बालू लाए जाने की जानकारी है। पेड़-पौधों की गुदा और विशेष पत्थरों से प्रतिमा निर्माण का कार्य किया गया है।

लिमोरा में बनवा रहे हैं 64 योगिनी कामधेनु मंदिर, मोक्ष धाम फाउंडेशन के संस्थापक भी हैं

गुरुदेव वीरेंद्र देशमुख सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। गुंडरदेही क्षेत्र के ग्राम लिमोरा में 64 योगिनी कामधेनु का भव्य मंदिर बनवा रहे है । मोक्ष धाम फाउंडेशन के माध्यम से संचालित गतिविधियों के नेतृत्व में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस फाउंडेशन के वे संस्थापक हैं। इस निर्माणाधीन मंदिर में माता काली और मां कामधेनु की भव्य मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होनी है। विशाल गुंबद का निर्माण जारी है। यह ऐसा मंदिर होगा जहां पर कोई दान पेटी नहीं होगी।

नाड़ी वैद्य महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी बने

उनकी सेवा और पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में सक्रियता को देखते हुए हाल ही में उन्हें अखिल भारतीय परंपरागत वन औषधि प्रशिक्षित वैद्य महासंघ, छत्तीसगढ़ का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उतई में हुए नियुक्ति और शपथ ग्रहण के आयोजन में देश और प्रदेश के विभिन्न राज्यों से आए वैद्यराजों एवं पदाधिकारियों की मौजूदगी रही।

गुरु पूर्णिमा पर प्रेरणा: सेवा को ही बनाया जीवन का उद्देश्य

गुरु पूर्णिमा केवल गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने का पर्व नहीं, बल्कि उन लोगों से प्रेरणा लेने का अवसर भी है, जिन्होंने अपने कर्मों से समाज को कुछ देने का प्रयास किया। गुरुदेव वीरेंद्र देशमुख का जीवन इसी भावना को दर्शाता है। एक ओर वे नाड़ी चिकित्सा और आयुर्वेदिक उपचार के माध्यम से लोगों की सेवा कर रहे हैं, तो दूसरी ओर शिक्षा, आर्थिक सहायता, धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से समाज के जरूरतमंद वर्ग तक पहुंचने का प्रयास कर रहे हैं। गुरुदेव वीरेंद्र देशमुख की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उन्होंने सेवा को किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रखा। स्वास्थ्य से लेकर शिक्षा और जरूरतमंद परिवारों की सहायता तक, वे अपनी क्षमता के अनुसार समाज के लिए योगदान देने का प्रयास कर रहे हैं। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उनका जीवन यह प्रेरणा देता है कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए बड़े पद या संसाधन से अधिक जरूरी है—सेवा की भावना, संवेदनशील सोच और दूसरों के लिए कुछ करने का संकल्प।

जीते जी चिकित्सा सेवा, जाते-जाते देहदान: डॉ. विनीता धुर्वे ने मानवता के नाम लिखी प्रेरणा की अनूठी मिसाल

17 हजार से अधिक प्रसव और 228 जुड़वां बच्चों की सुरक्षित डिलीवरी का उल्लेखनीय कीर्तिमान; गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ नाम, डॉक्टर्स डे पर देहदान का महासंकल्प

दुर्ग/बालोद ✍दर्शन बालोद✍

चिकित्सा सेवा को केवल पेशा नहीं, बल्कि मानवता की साधना मानकर अपना जीवन समर्पित करने वाली दुर्ग जिला अस्पताल की वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. विनीता धुर्वे ने सेवा, समर्पण और संवेदनशीलता की ऐसी मिसाल पेश की है, जो समाज के लिए लंबे समय तक प्रेरणा बनी रहेगी। हजारों माताओं को सुरक्षित प्रसव की सौगात देने और जटिल परिस्थितियों में नवजीवन की राह आसान बनाने वाली डॉ. विनीता धुर्वे का नाम 228 जुड़वां बच्चों की सफल एवं सुरक्षित डिलीवरी के उल्लेखनीय कीर्तिमान के साथ गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज होने की जानकारी सामने आई है। इसके साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय डॉक्टर्स डे के अवसर पर मृत्यु उपरांत देहदान का महासंकल्प लेकर यह संदेश दिया है कि मानव सेवा की भावना जीवन की अंतिम सांस के बाद भी समाज के काम आ सकती है।

गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ नाम

डॉ. विनीता धुर्वे की इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए उन्हें गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड का आधिकारिक प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। यह सम्मान उनके लिए ही नहीं, बल्कि दुर्ग जिला अस्पताल और पूरे छत्तीसगढ़ के लिए गौरव का विषय माना जा रहा है। इस उपलब्धि से चिकित्सा क्षेत्र में छत्तीसगढ़ की पहचान को भी नई मजबूती मिली है।

17 हजार से अधिक प्रसव और 228 जुड़वां बच्चों की सुरक्षित डिलीवरी

डॉ. विनीता धुर्वे की चिकित्सा यात्रा समर्पण और उपलब्धियों से भरी रही है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, उन्होंने अपने चिकित्सकीय सेवाकाल में 17 हजार से अधिक सफल एवं सुरक्षित प्रसव कराए हैं। इनमें 228 जुड़वां बच्चों की सुरक्षित डिलीवरी का अनोखा रिकॉर्ड भी शामिल है। बताया गया है कि पिछले कुछ वर्षों में ही उन्होंने बड़ी संख्या में ट्विन्स डिलीवरी कराकर चिकित्सा क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। यह उपलब्धि केवल एक रिकॉर्ड नहीं, बल्कि उन हजारों परिवारों की खुशियों से जुड़ी कहानी है, जिनके जीवन में डॉ. विनीता धुर्वे ने सुरक्षित मातृत्व और नवजात शिशुओं के रूप में नई उम्मीद जगाई। जुड़वां गर्भधारण जैसे मामलों में विशेष चिकित्सकीय सतर्कता और देखभाल की आवश्यकता होती है। ऐसे मामलों में लगातार सेवाएं देकर उन्होंने अपने समर्पण और कार्यकुशलता का परिचय दिया है।

हाई-रिस्क मामलों में भी सेवा का जज्बा

डॉ. विनीता धुर्वे की पहचान कठिन और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी मरीजों के साथ खड़े रहने वाली चिकित्सक के रूप में बनी है। जिला अस्पताल में एचआईवी और हेपेटाइटिस-बी जैसे हाई-रिस्क मामलों में गर्भवती महिलाओं की चिकित्सा देखभाल और सुरक्षित प्रसव के दौरान विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। ऐसे मामलों में भी उन्होंने जिम्मेदारी के साथ अपनी सेवाएं दी हैं। जटिल

से जटिल परिस्थितियों में धैर्य और संवेदनशीलता के साथ मरीजों का उपचार करना उनके चिकित्सकीय जीवन की महत्वपूर्ण विशेषता रही है।

डॉक्टर्स डे पर लिया जीवन का सबसे बड़ा 'महादान' का संकल्प

रिकॉर्ड और सम्मान की ऊंचाइयों तक पहुंचने के बावजूद डॉ. विनीता धुर्वे ने मानव सेवा को अपने जीवन का मूल उद्देश्य बनाए रखा। राष्ट्रीय डॉक्टर्स डे के अवसर पर उन्होंने मृत्यु उपरांत देहदान का संकल्प लेते हुए देहदान की वसीयत सौंपी। इस अवसर पर अस्पताल परिसर में आयोजित विशेष कार्यक्रम में सिविल सर्जन डॉ. आशीष मिंज, डॉ. जे.पी. मेश्राम एवं नवदृष्टि फाउंडेशन के सदस्यों की उपस्थिति रही। डॉ. विनीता धुर्वे ने बताया कि जब वह मेडिकल की पढ़ाई कर रही थीं, तभी से उनके मन में समाज और चिकित्सा शिक्षा के विकास के लिए देहदान करने का संकल्प था। डॉक्टर्स डे पर इसे औपचारिक रूप देकर उन्होंने अपने जीवन के इस महत्वपूर्ण संकल्प को पूरा किया। देहदान के माध्यम से चिकित्सा विद्यार्थियों को अध्ययन, शोध और व्यावहारिक प्रशिक्षण में सहायता मिल सकती है, जिससे भविष्य में चिकित्सा के क्षेत्र में नई पीढ़ी को बेहतर प्रशिक्षण प्राप्त होगा।

भाई विवेक धुर्वे ने कहा—बहन की सेवा भावना हम सभी के लिए प्रेरणा

डॉ. विनीता धुर्वे के इस निस्वार्थ और प्रेरणादायी निर्णय पर उनके भाई श्री विवेक धुर्वे (व्याख्याता) सहित पूरे परिवार और चिकित्सा जगत ने गर्व व्यक्त किया है। विवेक धुर्वे ने कहा कि उनकी बहन ने अपने पूरे चिकित्सकीय जीवन में सेवा और समर्पण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। हजारों माताओं को सुरक्षित प्रसव की सुविधा देने से लेकर जुड़वां बच्चों की रिकॉर्ड संख्या में सफल डिलीवरी कराने तक उनका सफर अपने आप में प्रेरणादायी है। अब देहदान का संकल्प लेकर उन्होंने मानवता की सेवा को जीवन के बाद भी जारी रखने का जो निर्णय लिया है, वह पूरे परिवार के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि डॉ. विनीता का जीवन यह संदेश देता है कि चिकित्सा केवल उपचार का माध्यम नहीं, बल्कि मानवता की सेवा का सबसे बड़ा अवसर भी है। उनका यह महासंकल्प आने वाली पीढ़ियों को भी समाज और चिकित्सा के क्षेत्र में निस्वार्थ भाव से योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा।

सम्मान और रिकॉर्ड से बड़ी है सेवा की भावना

डॉ. विनीता धुर्वे की उपलब्धियों में वर्ल्ड रिकॉर्ड और हजारों सफल प्रसव निश्चित रूप से गौरव का विषय हैं, लेकिन उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि उन माताओं और परिवारों के चेहरों पर आई मुस्कान है, जिन्हें उन्होंने सुरक्षित चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराई। उनका कार्य यह साबित करता है कि किसी चिकित्सक की महानता केवल पुरस्कारों और रिकॉर्ड से नहीं, बल्कि उसके द्वारा बचाई गई जिंदगियों और समाज के प्रति उसके समर्पण से तय होती है। डॉ. विनीता धुर्वे की कहानी हमें यह सिखाती है कि सच्ची सेवा का कोई अंत नहीं होता। उन्होंने अपने चिकित्सकीय जीवन में हजारों परिवारों को खुशियां दीं और अब देहदान का संकल्प लेकर समाज को यह प्रेरणा दी है कि मानवता की सेवा जीवन के बाद भी जारी रह सकती है। 'जीते जी चिकित्सा सेवा, जाते-जाते देहदान'—डॉ. विनीता धुर्वे का यह महासंकल्प वास्तव में छत्तीसगढ़ की धरती से निकली मानवता, सेवा, समर्पण और त्याग की एक ऐसी प्रेरणादायी कहानी है, जिसे आने वाली पीढ़ियां भी याद रखेंगी।

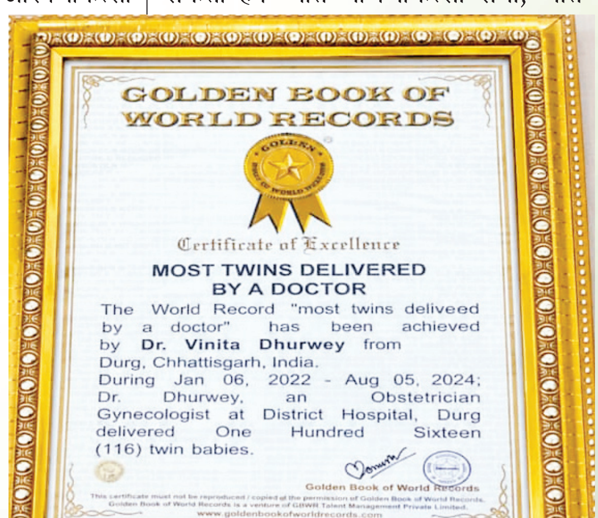

GOLDEN BOOK OF WORLD RECORDS

Certificate of Excellence

MOST TWINS DELIVERED BY A DOCTOR

The World Record "most twins deliveed by a doctor" has been achieved by **Dr. Vinita Dhurwey** from Durg, Chhattisgarh, India.
During Jan 06, 2022 - Aug 05, 2024; Dr. Dhurwey, an Obstetrician Gynecologist at District Hospital, Durg delivered One Hundred Sixteen (116) twin babies.

Golden Book of World Records

This certificate must not be reproduced / copied without the permission of Golden Book of World Records. Golden Book of World Records is a venture of GBWR Talent Management Private Limited.
www.goldenbookofworldrecords.com

समय पर जांच और सही उपचार से रोका जा सकता है हेपेटाइटिस का खतरा

हेपेटाइटिस को लेकर जागरूकता ही बचाव का सबसे प्रभावी माध्यम : महामारी विशेषज्ञ एवं फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. वीरेंद्र गंजीर

बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

विश्व हेपेटाइटिस दिवस के अवसर पर लोगों को हेपेटाइटिस जैसी गंभीर बीमारी के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है। हेपेटाइटिस मुख्य रूप से लिवर को प्रभावित करने वाली बीमारी है, जिसके कई प्रकार होते हैं। समय पर पहचान और उचित उपचार नहीं मिलने पर यह गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। ऐसे में बीमारी को लेकर जागरूकता, समय पर जांच और चिकित्सकीय सलाह बेहद महत्वपूर्ण है। महामारी विशेषज्ञ एवं फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. वीरेंद्र गंजीर ने बताया कि हेपेटाइटिस के कई प्रकार होते हैं और इनके फैलने के कारण भी अलग-अलग हो सकते हैं। हेपेटाइटिस ए और ई आमतौर पर दूषित भोजन और पानी के माध्यम से फैल सकते हैं, जबकि हेपेटाइटिस बी और सी संक्रमित रक्त तथा कुछ अन्य संक्रमित शारीरिक द्रवों के संपर्क से फैल सकते हैं। इसलिए स्वच्छता का ध्यान रखना, सुरक्षित पेयजल एवं भोजन का सेवन करना और संक्रमण से बचाव के लिए आवश्यक सावधानियां बरतना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि हेपेटाइटिस के कई मामलों में शुरुआत में स्पष्ट लक्षण दिखाई नहीं देते, जिसके कारण लोग बीमारी को गंभीरता से नहीं लेते। थकान, भूख कम लगना, मतली, पेट में असहजता, बुखार या आंखों और त्वचा का पीला पड़ना जैसे लक्षण दिखाई देने पर चिकित्सकीय सलाह लेना चाहिए। हालांकि, इन लक्षणों के अन्य कारण भी हो सकते हैं, इसलिए केवल लक्षणों के आधार पर निष्कर्ष निकालने के बजाय चिकित्सकीय जांच जरूरी है। डॉ. गंजीर

ने बताया कि हेपेटाइटिस बी से बचाव के लिए प्रभावी टीका उपलब्ध है, इसलिए पात्र लोगों को चिकित्सकीय सलाह के अनुसार टीकाकरण कराना चाहिए। वहीं हेपेटाइटिस सी का इलाज आधुनिक दवाओं से संभव है। उन्होंने लोगों से अपील की कि बिना चिकित्सकीय सलाह के दवा न लें और यदि किसी व्यक्ति में हेपेटाइटिस की पुष्टि होती है तो विशेषज्ञ चिकित्सक की सलाह के अनुसार पूरा उपचार कराएं। उन्होंने कहा कि हेपेटाइटिस से बचाव के लिए सुरक्षित रक्त एवं रक्त उत्पादों का उपयोग, व्यक्तिगत स्वच्छता, सुरक्षित स्वास्थ्य प्रक्रियाएं और संक्रमण की रोकथाम के उपाय महत्वपूर्ण हैं। लोगों को हेपेटाइटिस से संक्रमित व्यक्ति के प्रति भेदभाव करने के बजाय उसका सहयोग करना चाहिए, क्योंकि जागरूकता और सही जानकारी ही बीमारी से बचाव का मजबूत माध्यम है।

विश्व हेपेटाइटिस दिवस (28 जुलाई) पर डॉ. वीरेंद्र गंजीर ने संदेश दिया कि लिवर की सेहत को नजरअंदाज न करें। समय पर जांच कराएं, चिकित्सकीय सलाह लें और हेपेटाइटिस के प्रति स्वयं जागरूक होने के साथ अपने परिवार और समाज को भी जागरूक करें। वहीं चिकित्सा के क्षेत्र में कार्य कर रहे मेडिकल तथा पैरामेडिकल स्टाफ को वायरल हेपेटाइटिस बी से बचने हेतु प्रोफाइलेक्टिक टीकाकरण अवश्य कराना चाहिए जिसमें 0 दिवस 1 महीने पश्चात तथा 6 महीने के अंतराल में कुल 3 टीके लगा कर 20 से 25 साल तक के लिए सुरक्षा पाया जा सकता है। उसी प्रकार बच्चों को जन्म के समय लगने वाला हेपेटाइटिस बी टीकाकरण आजीवन सुरक्षा प्रदान करता है। सभी प्रकार के वायरल हेपेटाइटिस के रोकथाम बचाव व उपचार हेतु भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय वायरल हेपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है जिसमें रोग के त्वरित पहचान उपचार बचाओ तथा नियंत्रण के प्रयास किए जा रहे हैं। शासकीय चिकित्सालयों में उक्त जांच और उपचार निशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। हमेशा नए निडिल व सीरीज के इस्तेमाल, सेविंग करते समय हमेशा हमेशा नए रेजर ब्लेड के उपयोग तथा संयमित जीवन, टीकाकरण अपना कर वायरल हेपिटाइटिस संक्रमण से बचाव किया जा सकता है।

जन्मदिन पर जश्न नहीं, सेवा का संकल्प

बेटी हर्षिता के जन्मदिन पर बेनुराम साहू ने 500 से अधिक जरूरतमंदों को कराया भोजन

एम्स रायपुर में मरीजों और उनके परिजनों के बीच बांटी खुशियां, जन्मदिन को मानव सेवा से जोड़कर पेश की प्रेरणादायी मिसाल

रायपुर/बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

आज के दौर में जहां जन्मदिन का अवसर अक्सर उत्सव और भव्य आयोजनों तक सीमित रह जाता है, वहीं बालोद जिले के ग्राम नर्रा निवासी एवं वर्तमान में पदुम-नगर, भिलाई-3 निवासी बेनुराम साहू ने अपनी पुत्री हर्षिता साहू के जन्मदिन को मानव सेवा और जरूरतमंदों की मदद के लिए समर्पित कर एक प्रेरणादायी मिसाल पेश की। 17 जुलाई 2026 को हर्षिता साहू के जन्मदिन के अवसर पर एम्स अस्पताल रायपुर में दूरस्थ अंचलों से उपचार कराने पहुंचे मरीजों एवं उनके परिजनों के लिए 'ए मां भोजन सेवा समिति' के सहयोग से दोपहर के समय 500 से अधिक जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क भोजन कराया गया।

बेनुराम साहू, जो भारतीय रेलवे में सीनियर पैसेंजर ट्रेन मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं, लंबे समय से सामाजिक सेवा की गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि जन्मदिन जैसे विशेष अवसरों को केवल व्यक्तिगत खुशी तक सीमित रखने के बजाय जरूरतमंदों की सेवा से जोड़ने पर मिलने वाला संतोष और खुशी कहीं अधिक अनमोल होती है। किसी जरूरतमंद के चेहरे पर मुस्कान लाने और कठिन समय से गुजर रहे मरीजों तथा उनके परिजनों की मदद करने से बढ़कर जन्मदिन मनाने का इससे बेहतर तरीका और क्या हो सकता है।

उन्होंने बताया कि 'ए मां भोजन सेवा समिति' पिछले सात वर्षों से दानदाताओं के सहयोग से एम्स रायपुर में प्रतिदिन दोनों समय जरूरतमंद मरीजों एवं उनके परिजनों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराने का पुनीत कार्य कर रही है। इस सेवा का लाभ प्रतिदिन लगभग 1,200 से 1,500 मरीज एवं उनके परिजन प्राप्त करते हैं।

ऐसे सेवाभावी कार्य में सहभागी बनना अपने आप में सौभाग्य की बात है और इस माध्यम से जरूरतमंदों की सेवा करने का अवसर मिलना ईश्वर की विशेष कृपा के समान है। बेनुराम साहू ने कहा कि माता-पिता के पुण्य प्रताप और समाज के सहयोग से उन्हें सेवा कार्यों से जुड़ने की प्रेरणा मिली है। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि परिवार में आने वाले जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ और अन्य शुभ अवसरों को जरूरतमंदों की सेवा, भोजन वितरण और समाजहित के कार्यों से जोड़ना चाहिए। इससे न केवल किसी जरूरतमंद की मदद होती है, बल्कि नई पीढ़ी में भी सेवा, संवेदनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। बेटी हर्षिता साहू के जन्मदिन पर किया गया यह सेवा कार्य निश्चित रूप से एक ऐसा प्रेरणादायी उदाहरण है, जो यह संदेश देता है कि खुशियां तभी सार्थक होती हैं, जब उन्हें दूसरों के साथ बांटा जाए। बेनुराम साहू की इस पहल ने जन्मदिन को केवल एक पारिवारिक उत्सव न बनाकर मानवता की सेवा का अवसर बना दिया। एम्स जैसे अस्पताल में दूर-दराज से इलाज के लिए आने वाले जरूरतमंद मरीजों और उनके परिजनों के लिए भोजन की व्यवस्था करना संवेदनशील समाज की पहचान है। यह पहल लोगों को प्रेरित करती है कि वे भी अपने जीवन के महत्वपूर्ण अवसरों को सेवा और परोपकार से जोड़कर समाज में सकारात्मक बदलाव की दिशा में अपना योगदान दें।

घीना पंचायत की महिला सरपंच प्रणिका जैन ने विकास को बनाया मिशन, गांव को मूलभूत समस्याओं से दिला रहीं लगातार आजादी

बालोद/ अर्जुंदा ✍दर्शन बालोद✍

ग्रामीण विकास की असली तस्वीर तब सामने आती है, जब गांव की मूलभूत समस्याओं को समझकर उनके समाधान के लिए लगातार प्रयास किए जाएं। घीना ग्राम पंचायत की महिला सरपंच प्रणिका जैन इसी सोच के साथ अपने कार्यकाल में गांव के विकास को नई दिशा देने में जुटी हैं। सरपंच के रूप में अपने पहले कार्यकाल के शुरुआती दो वर्षों के भीतर ही उन्होंने गांव की वर्षों पुरानी मूलभूत समस्याओं के समाधान को प्राथमिकता देते हुए बिजली, सड़क, नाली और पंचायत भवन जैसे महत्वपूर्ण कार्यों को आगे बढ़ाने में सफलता हासिल की है।

बिजली व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

घीना पंचायत के कुछ मोहल्ले ऐसे थे, जहां अब तक बिजली विस्तार का कार्य पूरी तरह नहीं हो पाया था। इससे ग्रामीणों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। सरपंच प्रणिका जैन ने इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए लगातार प्रयास किया और ऐसे क्षेत्रों में बिजली पहुंचाने का कार्य कराया। इससे उन मोहल्लों के लोगों को भी बिजली जैसी महत्वपूर्ण मूलभूत सुविधा का लाभ मिल सका। ग्रामीणों का कहना है कि बिजली व्यवस्था में सुधार से गांव के लोगों को काफी राहत मिली है और दैनिक जीवन से लेकर बच्चों की पढ़ाई तक इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

नाली और सीसी रोड निर्माण से गांव की तस्वीर बदलने की कोशिश

गांव में बेहतर आवागमन और स्वच्छता व्यवस्था के लिए भी पंचायत स्तर पर लगातार काम किए जा रहे हैं। सरपंच प्रणिका जैन के प्रयासों से कुछ वार्डों में नाली निर्माण और सीसी रोड के कार्य पूरे किए गए हैं, जबकि शेष स्थानों पर आवश्यकतानुसार कार्य प्रस्तावित किए गए हैं। इन कार्यों का उद्देश्य बारिश के दिनों में जलभराव की समस्या को कम करने के साथ-साथ ग्रामीणों को बेहतर सड़क और

स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराना है।गांव के विकास को एक सतत प्रक्रिया मानते हुए सरपंच द्वारा उन वार्डों और मोहल्लों में भी विकास कार्यों की योजना बनाई जा रही है, जहां अभी मूलभूत सुविधाओं की आवश्यकता है। इससे आने वाले समय में पंचायत क्षेत्र में विकास कार्यों का दायरा और बढ़ने की उम्मीद है।

जर्जर पंचायत भवन के लिए लंबे प्रयास के बाद मिली स्वीकृति

घीना पंचायत का पंचायत भवन काफी समय से जर्जर स्थिति में था। ऐसे में पंचायत के कामकाज और ग्रामीणों से जुड़े प्रशासनिक कार्यों के संचालन में भी परेशानी होती थी। सरपंच प्रणिका जैन ने पंचायत भवन की स्थिति को देखते हुए इसके नए निर्माण के लिए लगातार प्रयास किए। उनके प्रयासों का परिणाम यह रहा कि नए पंचायत भवन के निर्माण की स्वीकृति प्राप्त हो गई है और भूमि पूजन भी संपन्न हो चुका है। अब जल्द ही निर्माण कार्य शुरू होने की उम्मीद है। नया पंचायत भवन बनने के बाद ग्रामीणों को पंचायत से संबंधित कार्यों के लिए बेहतर सुविधा मिलेगी और पंचायत के प्रशासनिक कामकाज को भी व्यवस्थित रूप से संचालित करने में मदद मिलेगी।

जर्जर पीडीएस भवन के लिए भी प्रयास जारी

पंचायत क्षेत्र में पीडीएस भवन भी वर्तमान में जर्जर भवन में संचालित हो रहा है। इस समस्या को भी सरपंच प्रणिका जैन ने गंभीरता से लिया है। उन्होंने पीडीएस भवन के लिए प्रशासनिक स्वीकृति प्राप्त करने की दिशा में प्रयास किए हैं और अब उनका प्रयास है कि जल्द से जल्द नए भवन का निर्माण शुरू हो, ताकि ग्रामीणों को राशन वितरण की सुविधा सुरक्षित और व्यवस्थित तरीके से मिल सके।

महिला नेतृत्व में विकास की नई उम्मीद

सरपंच प्रणिका जैन का मानना है कि गांव का विकास केवल बड़े निर्माण कार्यों से नहीं, बल्कि हर परिवार तक मूलभूत सुविधाएं पहुंचाने से होता है। इसी सोच के साथ वे पंचायत क्षेत्र की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर हल कराने का प्रयास कर रही हैं। बिजली से वंचित मोहल्लों तक बिजली पहुंचाने से लेकर सड़क और नाली निर्माण, पंचायत भवन के पुनर्निर्माण तथा पीडीएस भवन की समस्या के समाधान की दिशा में किए जा रहे प्रयास उनके विकास के प्रति समर्पण को दर्शाते हैं। घीना पंचायत में महिला नेतृत्व के रूप में प्रणिका जैन का यह प्रयास ग्रामीण विकास की उस तस्वीर को सामने लाता है, जहां समस्याओं को केवल गिनाया नहीं जाता, बल्कि उनके समाधान के लिए लगातार प्रयास किए जाते हैं।

बालोद के विकास की आवाज बने यशवंत जैन, जनहित के मुद्दों को दिला रहे नई दिशा

प्रदेश भाजपा महामंत्री की सक्रिय पहल से शहर को मिल रही विकास परियोजनाओं की सौगात, बस स्टैंड की जलभराव समस्या के स्थायी समाधान से लेकर ऑडिटोरियम, रेलवे ओवरब्रिज और सौंदर्यीकरण कार्यों तक लगातार प्रयास

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

विकास केवल बड़ी-बड़ी योजनाओं और घोषणाओं का नाम नहीं, बल्कि आम जनता की समस्याओं को समझकर उनके समाधान के लिए लगातार प्रयास करने का नाम है। प्रदेश भाजपा महामंत्री यशवंत जैन बालोद जिले के विकास से जुड़े मुद्दों को लेकर इसी सोच के साथ लगातार सक्रिय नजर आ रहे हैं। शहर की वर्षों पुरानी समस्याओं से लेकर भविष्य की बड़ी विकास परियोजनाओं तक, वे विभिन्न विषयों को शासन के समक्ष प्रभावी ढंग से उठाते रहे हैं। उनके प्रयासों से बालोद को अधोसंरचना विकास, सड़क सौंदर्यीकरण, जनसुविधाओं और शहरी विकास से जुड़ी कई महत्वपूर्ण सौगातें मिल रही हैं।

वर्षों पुरानी समस्या के समाधान की ओर बढ़ा बस स्टैंड

बालोद के नए बस स्टैंड में लंबे समय से बारिश के दौरान होने वाले जलभराव की समस्या यात्रियों, व्यापारियों और आम नागरिकों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई थी। इस समस्या के स्थायी समाधान के लिए किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप 23 लाख रुपये की लागत से नाली निर्माण की स्वीकृति मिली है। कार्य का भूमि पूजन भी हो चुका है। नाली निर्माण पूरा होने के बाद बस स्टैंड क्षेत्र में जलभराव की समस्या से स्थायी राहत मिलने की उम्मीद है। यह पहल इस मायने में महत्वपूर्ण है कि एक ओर शहर के विकास के लिए बड़ी परियोजनाओं पर काम हो रहा है, वहीं दूसरी ओर आम नागरिकों की रोजमर्रा की परेशानियों को दूर करने वाले छोटे लेकिन जरूरी कार्यों को भी प्राथमिकता दी जा रही है।

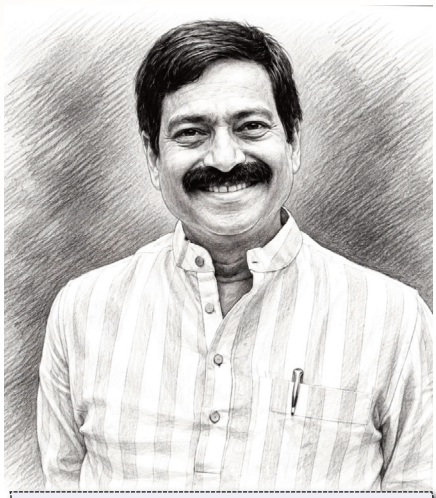

करोड़ों के विकास कार्यों से निखर रहा बालोद शहर

बालोद शहर में प्रदेश सरकार और लोक निर्माण विभाग के माध्यम से 8 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विभिन्न विकास एवं सौंदर्यीकरण कार्य कराए गए हैं। इनमें दल्ली चौक से पाररास तक लगभग 5.92 करोड़ रुपये की लागत से सड़क सौंदर्यीकरण एवं मार्ग विभाजन कार्य तथा तांदुला पुल से कॉलेज तक लगभग 1.65 करोड़ रुपये की लागत से डिवाइडर, स्ट्रीट लाइट और सौंदर्यीकरण कार्य प्रमुख हैं। इन कार्यों से शहर की सड़कों का स्वरूप बेहतर होने के साथ यातायात व्यवस्था और नागरिक सुविधाओं में भी सुधार हुआ है। प्रमुख मार्गों के सौंदर्यीकरण से बालोद शहर को एक व्यवस्थित और आकर्षक स्वरूप देने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम बढ़ा है।

बालोद की तस्वीर बदलने वाली परियोजनाओं पर जोर

बालोद शहर की लंबे समय से लंबित ऑडिटोरियम निर्माण और रेलवे ओवरब्रिज जैसी महत्वपूर्ण मांगों को लेकर भी यशवंत जैन ने सक्रिय पहल की है। उन्होंने रायपुर में लोक निर्माण मंत्री अरुण साव से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपते हुए इन परियोजनाओं को जल्द गति देने का आग्रह किया। भूमि अधिग्रहण सहित आवश्यक प्रक्रियाओं में तेजी लाकर निर्माण कार्य शीघ्र शुरू कराने की मांग रखी गई है। ऑडिटोरियम बनने से शहर में सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक आयोजनों के लिए बेहतर मंच उपलब्ध होगा, जबकि रेलवे ओवरब्रिज के निर्माण से यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने में मदद मिलने की उम्मीद है। दोनों परियोजनाएं बालोद शहर के भविष्य के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जा रही हैं।

'सुघ्घर छत्तीसगढ़' में बालोद को मिली नई पहचान

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में शुरू किए गए 'सुघ्घर छत्तीसगढ़ अभियान' में बालोद जिले को शामिल किए जाने पर यशवंत जैन ने मुख्यमंत्री के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा कि यह अभियान सुशासन, पारदर्शिता और जनकल्याण की दिशा में

महत्वपूर्ण पहल है। इसके माध्यम से शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ गरीब, किसान, मजदूर, महिलाओं और आम नागरिकों तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचाने में मदद मिलेगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि तकनीक आधारित निगरानी और जवाबदेह प्रशासनिक व्यवस्था से योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन होगा तथा बालोद जिले को इसका सीधा लाभ मिलेगा।

जनता की जरूरतों को विकास की प्राथमिकता से जोड़ने का प्रयास

यशवंत जैन की सक्रियता को केवल राजनीतिक गतिविधियों तक सीमित नहीं देखा जा सकता। बस स्टैंड की जलभराव समस्या, शहर की यातायात व्यवस्था, रेलवे ओवरब्रिज, ऑडिटोरियम और सौंदर्यीकरण जैसे विषयों को लगातार उठाना यह दर्शाता है कि वे बालोद के विकास को व्यापक दृष्टिकोण से आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं।उनका मानना है कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में प्रदेश सरकार विकास कार्यों को तेजी से आगे बढ़ा रही है और बालोद जिले को भी इसका लाभ मिल रहा है। आने वाले समय में अधोसंरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य और जनसुविधाओं के क्षेत्र में जिले को और नई परियोजनाओं की सौगात मिलने की उम्मीद है।

विकास की राह पर बालोद, सक्रिय पहल से बढ़ रही उम्मीद

बालोद के विकास से जुड़े मुद्दों को शासन तक पहुंचाने और उन्हें प्राथमिकता दिलाने के प्रयासों के बीच यह उम्मीद बढ़ी है कि आने वाले समय में जिले को कई महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं का लाभ मिलेगा। बड़ी परियोजनाओं के साथ स्थानीय समस्याओं के समाधान पर भी ध्यान दिया जाए, तो विकास का वास्तविक लाभ आम नागरिकों तक पहुंचता है। प्रदेश भाजपा महामंत्री यशवंत जैन का कहना है कि वे बालोद के विकास से जुड़े हर महत्वपूर्ण विषय को आगे भी राज्य सरकार के समक्ष मजबूती से उठाते रहेंगे। उनका प्रयास है कि बालोद शहर और जिले के नागरिकों को बेहतर सुविधाएं मिलें, विकास कार्यों को गति मिले और जिला अधोसंरचना के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक पहुंचे।

बस स्टैंड की जलभराव समस्या के समाधान से लेकर करोड़ों रुपये के सौंदर्यीकरण कार्यों और भविष्य की बड़ी परियोजनाओं तक—बालोद के विकास की दिशा में जारी ये प्रयास आने वाले वर्षों में शहर की तस्वीर और नागरिक सुविधाओं को नई पहचान देने की उम्मीद जगा रहे हैं।

सौहार्दपूर्ण भेंट

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के पूर्व सदस्य श्रीमान यशवंत जैन को संपादक माधुरी दीपक यादव ने दर्शन बालोद की एक प्रति भेंट की वहीं शादी के 11 वी वर्षगांठ के अवसर पर श्री जैन ने बधाई देते हुए भारत माता की छवि भेंट की।

बालोद में नई पुलिसिंग की नई पहचानः एसपी किरण गंगाराम चव्हाण के नेतृत्व में 'मिशन नवचेतना' से नशे के खिलाफ निर्णायक अभियान

सुकमा के चुनौतीपूर्ण मोर्चे से बालोद तक—अनुभवी आईपीएस अधिकारी की कार्यशैली में अपराध नियंत्रण के साथ जनविश्वास और अनुशासन पर जोर

बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

जिले की पुलिसिंग में जुलाई 2026 से एक नया अध्याय शुरू हुआ है। नवपदस्थ पुलिस अधीक्षक श्री किरण गंगाराम चव्हाण (भा.पु.से.) ने 16 जुलाई 2026 को बालोद जिले की कमान संभाली और पदभार ग्रहण करने के साथ ही कानून-व्यवस्था को मजबूत करने, अपराध नियंत्रण को प्रभावी बनाने तथा आमजन में सुरक्षा का विश्वास और अधिक मजबूत करने की दिशा में अपनी प्राथमिकताएं स्पष्ट कर दीं। उनके नेतृत्व में 'मिशन नवचेतना' के तहत नशे के अवैध कारोबार और अन्य गैरकानूनी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में लगातार कार्रवाई की जा रही है। एसपी चव्हाण की कार्यशैली का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे पुलिसिंग को केवल कार्रवाई तक सीमित रखने के बजाय अनुशासन, फिटनेस, प्रोफेशनल पुलिसिंग, जनसहभागिता और बेहतर थाना स्तर के समन्वय से जोड़कर देखते हैं। बालोद में पदभार संभालने के बाद आयोजित साप्ताहिक जनरल परेड के निरीक्षण के दौरान उन्होंने पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों की ड्रिल, अनुशासन, वर्दी टर्नआउट और शारीरिक फिटनेस पर विशेष जोर दिया। उन्होंने पुलिस वाहनों की स्थिति और रखरखाव का भी निरीक्षण किया, ताकि जरूरत के समय पुलिस बल त्वरित और प्रभावी ढंग से कार्रवाई कर सके।

'मिशन नवचेतना' से नशे के खिलाफ लगातार कार्रवाई

बालोद पुलिस द्वारा चलाए जा रहे 'मिशन नवचेतना' का उद्देश्य जिले में नशे से जुड़ी अवैध गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करना है। अभियान के तहत पुलिस द्वारा अवैध शराब के निर्माण, परिवहन और बिक्री सहित नशे से संबंधित गतिविधियों के विरुद्ध लगातार कार्रवाई की जा रही है। हालिया कार्रवाई में जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में आबकारी अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज किए गए और अवैध शराब बिक्री तथा सार्वजनिक स्थानों पर शराब सेवन के मामलों में वैधानिक कार्रवाई की गई। यह अभियान इस बात का संकेत है कि बालोद पुलिस नशे के कारोबार को लेकर 'जीरो टॉलरेंस' की नीति के साथ आगे बढ़ रही है। एसपी चव्हाण के नेतृत्व में पुलिस की प्राथमिकता केवल अपराधियों पर कार्रवाई करना ही नहीं, बल्कि युवाओं और आम नागरिकों को नशे के दुष्प्रभावों से बचाने के लिए जागरूकता और सामाजिक सहभागिता को भी बढ़ावा देना है। मिशन नवचेतना इसी व्यापक सोच का हिस्सा बनकर सामने आ रहा है, जिसमें पुलिस की कार्रवाई के साथ समाज की भागीदारी को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

सुकमा के धुर नक्सल प्रभावित क्षेत्र से बालोद तक का अनुभव

किरण गंगाराम चव्हाण 2018 बैच के भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी हैं। पुलिस सेवा में आने के बाद उन्होंने छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में जिम्मेदारियां संभालीं। उपलब्ध प्रकाशित जानकारी के अनुसार, उनके सेवाकाल में बिलासपुर में प्रारंभिक पुलिस जिम्मेदारियों के बाद उन्होंने जगदलपुर में नगर पुलिस अधीक्षक (सीएसपी) के रूप में कार्य किया। इसके बाद वे सुकमा जैसे अत्यंत संवेदनशील नक्सल प्रभावित जिले में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (नक्सल ऑपरेशन) रहे और बाद में सुकमा के पुलिस अधीक्षक की जिम्मेदारी भी संभाली। सुकमा में उनके कार्यकाल का अनुभव बालोद की पुलिसिंग के लिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा

है। नक्सल प्रभावित क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखने, सुरक्षा बलों के बीच समन्वय, जनसहभागिता बढ़ाने तथा मादक पदार्थों की तस्करी के विरुद्ध कार्रवाई जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में काम करने का अनुभव उन्हें जमीनी पुलिसिंग की व्यापक समझ देता है। उनके कार्यों के लिए वर्ष 2024 में FICCI Best Performing Officer सम्मान से सम्मानित किए जाने की जानकारी भी प्रकाशित हुई है।

अनुभव से निकली पुलिसिंग, बालोद के लिए नई उम्मीद

बालोद अपेक्षाकृत शांत जिला माना जाता है, लेकिन बदलते समय के साथ साइबर अपराध, नशे का प्रसार, अवैध गतिविधियां, यातायात व्यवस्था और युवाओं से जुड़े अपराध जैसी चुनौतियां पुलिस के सामने लगातार बनी रहती हैं।

ऐसे समय में चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में काम कर चुके अनुभवी पुलिस अधिकारी का नेतृत्व जिले के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। एसपी किरण चव्हाण की प्राथमिकताओं में अपराध नियंत्रण के साथ पुलिस बल की कार्यक्षमता बढ़ाना, थाना स्तर पर बेहतर समन्वय, प्रभावी गश्त, त्वरित कार्रवाई और आम जनता के साथ सकारात्मक संवाद शामिल दिखाई दे रहे हैं। उनकी कार्यशैली में अनुशासन और आधुनिक पुलिसिंग के साथ मानवीय दृष्टिकोण का समन्वय नजर आता है।

पदभार के शुरुआती दिनों में ही दिखने लगा एक्शन मोड

16 जुलाई को पदभार संभालने के बाद से ही पुलिस विभाग की गतिविधियों में सक्रियता दिखाई दे रही है। 'मिशन नवचेतना' के तहत अवैध शराब और नशे से जुड़ी गतिविधियों पर कार्रवाई, साप्ताहिक जनरल परेड में अनुशासन एवं फिटनेस पर जोर और पुलिस संसाधनों के निरीक्षण जैसे कदम यह दर्शाते हैं कि नए पुलिस कप्तान व्यवस्था को भीतर से मजबूत करने के साथ-साथ अपराध नियंत्रण को जमीनी स्तर पर प्रभावी बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। बालोद पुलिस की यह नई कार्यशैली आने वाले समय में किस तरह परिणाम देती है, यह तो समय बताएगा, लेकिन शुरुआती संकेत सकारात्मक हैं। यदि पुलिस की कार्रवाई के साथ समाज, अभिभावकों, शिक्षण संस्थानों और युवाओं की सक्रिय सहभागिता भी जुड़ती है, तो 'मिशन नवचेतना' नशे के खिलाफ केवल पुलिस अभियान नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का अभियान बन सकता है।

एक अधिकारी, एक अनुभव और एक नई उम्मीद

सुकमा के कठिन और संवेदनशील पुलिसिंग अनुभव से गुजरकर बालोद की कमान संभालने वाले एसपी किरण गंगाराम चव्हाण के सामने अब चुनौती है कि वे जिले की स्थानीय जरूरतों को समझते हुए पुलिसिंग को और अधिक प्रभावी बनाएं। उनकी शुरुआती सक्रियता से यह उम्मीद जगी है कि बालोद में कानून-व्यवस्था के साथ जनविश्वास, अनुशासन और नशामुक्त समाज की दिशा में भी ठोस पहल आगे बढ़ेगी। 'सुरक्षित बालोद—सजग बालोद' की भावना को मजबूत करते हुए यदि पुलिस और जनता मिलकर आगे बढ़ते हैं, तो 'मिशन नवचेतना' निश्चित रूप से बालोद जिले में सकारात्मक बदलाव की एक प्रेरणादायक कहानी लिख सकता है।

भाजपा सक्रिय सदस्य मधुकान्त यदु ने छत्तीसगढ़ के विकास और जनहित से जुड़े तीन महत्वपूर्ण मुद्दों को लेकर सौंपे ज्ञापन

रावघाट-बैलाडीला के लौह अयस्क से स्टील प्लांट, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की भर्ती तथा जगदलपुर संभाग में एम्स शुरू करने की मांग

बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

भाजपा के सक्रिय सदस्य एवं बालोद के संजय नगर निवासी मधुकान्त यदु ने छत्तीसगढ़ के विकास, रोजगार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों को लेकर केंद्र एवं राज्य सरकार के जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों और संबंधित मंत्रियों को ज्ञापन सौंपकर आवश्यक कार्रवाई की मांग की है।

उन्होंने अपने ज्ञापनों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाने, शिक्षा विभाग के रिक्त पदों को भरने तथा बस्तर क्षेत्र में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में ठोस पहल करने का आग्रह किया है। मधुकान्त यदु ने अपने पहले ज्ञापन में बचेली, किरंदुल, बैलाडीला जिला दंतेवाड़ा एवं रावघाट जिला कांकेर से प्राप्त लौह अयस्क का उपयोग कर भारतीय इस्पात प्राधिकरण (सेल) के माध्यम से छत्तीसगढ़ में स्टील प्लांट स्थापित करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ के खनिज संसाधनों का उपयोग राज्य के विकास के लिए किया जाना चाहिए। स्टील प्लांट की स्थापना होने से स्थानीय अनुसूचित जनजाति सहित हजारों बेरोजगार युवाओं को रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। उन्होंने स्टील प्लांट में रेल पटरी, चादर, रॉड एवं पाइप जैसे इस्पात उत्पादों के निर्माण की दिशा में पहल करने का भी आग्रह किया है। दूसरे ज्ञापन में उन्होंने शिक्षा विभाग में रिक्त पदों पर पदोन्नति एवं सीधी भर्ती की मांग उठाई है। उन्होंने हाई कोर्ट बिलासपुर, छत्तीसगढ़ के आदेश एवं वरिष्ठता के आधार पर संयुक्त संचालक, जिला शिक्षा अधिकारी, विकासखंड शिक्षा अधिकारी एवं प्राचार्य के रिक्त पदों पर पदोन्नति आदेश जारी करने का आग्रह किया। इसके साथ ही भाजपा के वर्ष 2023 के घोषणा पत्र में किए गए वादे के अनुसार 57 हजार शिक्षकों एवं एक लाख कर्मचारियों के रिक्त पदों पर तत्काल सीधी भर्ती करने तथा सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारियों के रिक्त पदों पर भी भर्ती प्रक्रिया शुरू करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि रिक्त पदों पर भर्ती एवं पदोन्नति होने से शिक्षा व्यवस्था को मजबूती मिलेगी और युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। वहीं, तीसरे ज्ञापन के माध्यम से मधुकान्त यदु ने जगदलपुर संभाग में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) प्रारंभ करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ के बस्तर एवं जगदलपुर संभाग में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की आवश्यकता है। यदि इस क्षेत्र में एम्स की स्थापना होती है तो लगभग 700 किलोमीटर के क्षेत्र में निवासरत अनुसूचित जनजाति एवं स्थानीय निवासियों को अत्याधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा। उन्होंने केंद्र एवं राज्य सरकार से जगदलपुर संभाग में जल्द से जल्द एम्स प्रारंभ करने की स्वीकृति प्रदान करने का आग्रह किया है। मधुकान्त यदु ने इन तीनों मांगों को छत्तीसगढ़ के विकास, रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य से सीधे जुड़ा महत्वपूर्ण विषय बताते हुए केंद्र एवं राज्य सरकार से इन पर गंभीरता-पूर्वक विचार कर शीघ्र आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की है।

शिक्षकों की कमी दूर करने पदोन्नति प्रक्रिया शीघ्र पूरी करने, संविदा शिक्षकों को नियमित करने और अनुकंपा नियुक्ति पर लगे प्रतिबंध हटाने की मांग-स्कूल शिक्षा विभाग में शिक्षकों एवं कर्मचारियों की कमी को दूर करने तथा शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए भाजपा वरिष्ठ नेता मधुकांत यादव, जयराम निर्मलकर, श्री भंडारी एवं जोगेंद्र योगी ने छत्तीसगढ़ शासन से विभिन्न मांगों को शीघ्र पूरा करने का भी आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा के वर्ष 2023 के घोषणा पत्र एवं मोदी की गारंटी के अनुरूप 57 हजार शिक्षकों तथा एक लाख कर्मचारियों की भर्ती की जानी चाहिए, ताकि प्रदेश में शिक्षा सहित अन्य विभागों में रिक्त पदों को भरा जा सके। भाजपा

नेताओं ने कहा कि स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में कार्यरत संविदा शिक्षकों को भी नियमित करने की दिशा में शासन द्वारा पहल की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि घोषणा पत्र में किए गए वादों के अनुरूप कर्मचारियों के हित में आवश्यक निर्णय लिए जाने से प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि सेटअप वर्ष 2008 के अनुसार प्राथमिक, माध्यमिक, हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी स्कूलों में पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की भर्ती किया जाना आवश्यक है। वर्तमान में प्रदेश के अधिकांश स्कूलों में शिक्षकों की कमी के कारण अध्यापन व्यवस्था प्रभावित हो रही है और कई स्थानों पर स्कूलों में तालाबंदी जैसी स्थिति निर्मित हो रही है। पर्याप्त शिक्षकों की नियुक्ति होने से विद्यार्थियों की पढ़ाई सुचारु रूप से संचालित हो सकेगी।भाजपा नेताओं ने स्कूल शिक्षा विभाग में संयुक्त संचालक, उप संचालक, जिला शिक्षा अधिकारी, व्याख्याता, प्रधान पाठक माध्यमिक एवं प्रधान पाठक प्राथमिक के रिक्त पदों पर पदोन्नति की प्रक्रिया तत्काल पूर्ण

करने की मांग की है। उनका कहना है कि समय पर पदोन्नति होने से विभाग में रिक्त पदों की संख्या बढ़ेगी और पात्र शिक्षकों को पदोन्नति का लाभ मिलने के साथ ही स्कूलों में शिक्षकों की कमी दूर करने में भी मदद मिलेगी।

इसी तरह सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी के लगभग 250 रिक्त पदों पर सीधी भर्ती करने तथा ग्रंथपाल के रिक्त पदों पर पदोन्नति एवं सीधी भर्ती की प्रक्रिया भी शीघ्र शुरू करने की मांग की गई है। भाजपा नेताओं ने अनुकंपा नियुक्ति की लंबित प्रक्रिया को भी शीघ्र पूरा करने की मांग की। उन्होंने कहा कि विगत दो वर्षों से अनुकंपा नियुक्ति की प्रक्रिया लंबित होने के कारण दिवंगत कर्मचारियों के परिवारों को आर्थिक एवं अन्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने मांग की कि अनुकंपा नियुक्ति में वर्ष 2013 से लगाए गए समस्त प्रतिबंधों को समाप्त करते हुए मृत्यु के बाद पात्र आश्रितों को पूर्व की भांति रिक्त पदों पर बिना शर्त अनुकंपा नियुक्ति प्रदान की जाए। भाजपा नेताओं ने कहा कि शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए रिक्त पदों पर भर्ती, समयबद्ध पदोन्नति और लंबित अनुकंपा नियुक्ति जैसे विषयों पर शासन को शीघ्र निर्णय लेना चाहिए। इन मांगों को लेकर मुख्यमंत्री एवं विभागीय मंत्री को भी आवेदन पत्र जिलाधीश के माध्यम से भेजा जा चुका है। उन्होंने शासन से मांग की है कि जनहित एवं कर्मचारी हित से जुड़े इन सभी विषयों पर शीघ्र सकारात्मक निर्णय लेकर आवश्यक कार्रवाई की जाए।

राष्ट्रगान से राष्ट्रभावना की अलख जगा रहा डौंडीलोहारा, सात वर्षों से रोज सुबह गूंजता है "जन गण मन"

डौंडीलोहारा ✍दर्शन बालोद✍

बदलते दौर में जहां राष्ट्रभक्ति से जुड़े कई संस्कार धीरे-धीरे कमजोर पड़ते जा रहे हैं, वहीं बालोद जिले के डौंडीलोहारा में प्रतिदिन सुबह होने वाला राष्ट्रगान लोगों के लिए प्रेरणा का केंद्र बना हुआ है। वर्ष 2018 से अटल चौक (पुराना बस स्टैंड) स्थित काली मंदिर परिसर के पास प्रतिदिन सुबह 7:30 बजे नियमित रूप से राष्ट्रगान ₹जन गण मन₹ का सामूहिक आयोजन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य देशभक्ति की भावना को मजबूत करना और नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय मूल्यों से जोड़ना है। इस अनूठी पहल की शुरुआत स्थानीय बुद्धिजीवियों और जागरूक नागरिकों ने मिलकर की थी। समिति में लगभग 15 लोग जुड़े हैं, जिनमें शिक्षक, चिकित्सक, किसान, समाजसेवी, जनप्रतिनिधि और आम नागरिक शामिल हैं। विशेष बात यह है कि इस समिति में किसी को कोई पद नहीं दिया गया है और सभी सदस्य समान भाव से राष्ट्रसेवा के उद्देश्य से कार्य करते हैं। प्रतिदिन राष्ट्रगान का संचालन डॉ. बी.एल. साहसी द्वारा किया जाता है। यह मंच केवल राष्ट्रगान तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय पर्वों और महापुरुषों की जयंती-पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि, विचार गोष्ठी, ध्वजारोहण और प्रसाद वितरण जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर यहां विशेष आयोजन होते हैं, जिनमें बड़ी संख्या में नागरिक भाग लेते हैं। समिति का मानना है कि राष्ट्रभक्ति केवल राष्ट्रीय पर्वों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना आवश्यक है। इसी सोच के साथ पिछले सात वर्षों से यह अभियान बिना किसी व्यक्तिगत स्वार्थ और प्रचार-प्रसार के लगातार जारी है। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर डौंडीलोहारा की यह पहल पूरे जिले के लिए प्रेरणास्रोत है। यह संदेश देती है कि यदि समाज संगठित होकर छोटे-छोटे प्रयास करे, तो राष्ट्रप्रेम की भावना को आने वाली पीढ़ियों तक सहज रूप से पहुंचाया जा सकता है।

संकल्प, संवेदनशीलता और सुशासन की नई मिसाल: कलेक्टर दिव्या उमेश मिश्रा के नेतृत्व में नई ऊंचाइयों को छूता बालोद

माधुरी दीपक यादव, संपादक

बालोद। किसी भी जिले की पहचान केवल उसके भूगोल से नहीं, बल्कि वहां के विकास, सुशासन और जनकल्याण के कार्यों से होती है। आज बालोद जिला उसी पहचान के साथ प्रदेश ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है। कलेक्टर दिव्या उमेश मिश्रा के नेतृत्व में प्रशासन ने जनभागीदारी, नवाचार, पारदर्शिता और संवेदनशील कार्यशैली के माध्यम से विकास का ऐसा मॉडल प्रस्तुत किया है, जो अन्य जिलों के लिए भी प्रेरणा बनता जा रहा है।

देश के सर्वश्रेष्ठ जिला मजिस्ट्रेटों में मिली जगह

मई 2026 में फेम इंडिया एवं एशिया पोस्ट एजेंसी के राष्ट्रीय सर्वेक्षण में कलेक्टर दिव्या उमेश मिश्रा को देश के लगभग 800 जिलों में शीर्ष 100 सर्वश्रेष्ठ जिला मजिस्ट्रेटों की सूची में स्थान मिला। उन्होंने छत्तीसगढ़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। बेहतर प्रशासन, सुशासन, संकट प्रबंधन, त्वरित निर्णय क्षमता, नवाचार और जनसंपर्क जैसे विभिन्न मानकों पर उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर यह सम्मान मिला।

जल संरक्षण में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान

बालोद ने 'जल संचयन–जन भागीदारी अभियान' में देशभर में प्रथम स्थान प्राप्त कर नया इतिहास रचा। जिले में एक लाख से अधिक नई जल संरक्षण एवं जल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण किया गया। यह उपलब्धि केवल प्रशासन की नहीं, बल्कि जनभागीदारी की शक्ति का भी उत्कृष्ट उदाहरण है।

बाल विवाह मुक्त अभियान बना देश के लिए मिसाल

सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी बालोद ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। बाल विवाह जैसी कुप्रथा के विरुद्ध व्यापक जनजागरूकता अभियान चलाकर जिले ने बाल विवाह मुक्त

जिला बनने की दिशा में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की। बच्चों के अधिकारों की रक्षा और सामाजिक जागरूकता के लिए किए गए इन प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान भी मिला।

'एक पेड़ मां के नाम' से हरियाली का नया इतिहास

पर्यावरण संरक्षण को जनआंदोलन बनाने के उद्देश्य से शुरू किए गए 'महतारी वंदन वृक्षारोपण अभियान – एक पेड़ मां के नाम' के अंतर्गत जिले में एक ही दिन में ढाई लाख से अधिक पौधों का रोपण किया गया। महिलाओं, विद्यार्थियों, जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, कर्मचारियों और आम नागरिकों की सहभागिता ने इस अभियान को ऐतिहासिक बना दिया।

सुव्यवस्थित और विकसित बालोद की ओर बढ़ते कदम

शहर को स्वच्छ, सुंदर और व्यवस्थित बनाने, अतिक्रमण हटाने, जल संरक्षण, ग्रामीण विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और जनसुनवाई जैसी व्यवस्थाओं को मजबूत करने की दिशा में भी जिला प्रशासन लगातार सक्रिय रहा है। प्रशासन की त्वरित निर्णय क्षमता और मैदानी कार्यशैली ने आम जनता का विश्वास और मजबूत किया है।

जनभागीदारी से विकास का नया मॉडल

आज बालोद में विकास केवल सरकारी योजनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जनभागीदारी का अभियान बन चुका है। पंचायतों, स्वयं सहायता समूहों, विद्यार्थियों, युवाओं और आम नागरिकों की सहभागिता ने जिले को नई पहचान दिलाई है।

संपादकीय दृष्टि

किसी भी प्रशासनिक अधिकारी की सबसे बड़ी पहचान उसके पद से नहीं, बल्कि उसके कार्यों से बनती है। जब योजनाएं धरातल पर उतरती हैं, जनता की भागीदारी बढ़ती है और विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचता है, तभी सुशासन की वास्तविक तस्वीर दिखाई देती है। बालोद जिले में पिछले समय में हुए अनेक नवाचार और उपलब्धियां इसी सकारात्मक सोच का परिणाम हैं। यह आवश्यक है कि विकास की यह गति निरंतर बनी रहे और प्रशासन तथा जनता मिलकर जिले को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएं। आज बालोद केवल एक जिला नहीं, बल्कि सुशासन, सामाजिक सुधार, जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण और जनभागीदारी आधारित विकास का एक प्रेरणादायी मॉडल बनकर उभर रहा है।

आओ मिलकर प्रण लें,
भारत को और ऊँचाईयों पर ले जाएँ !
वंदे मातरम् !
जय हिन्द !
जय भारत !
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
ग्राम पंचायत घीना
जिला - बालोद (छ.ग.)
सचिव
बसंत सिन्हा
सरपंच
श्रीमती प्राणिका जैन
वार्ड पंचगण
1 मोतीलाल तारम
2 मानिक पुरी मैडम
3 गीता तारम
4 कांशी राम सिन्हा
5 शांति बाई तारम
6 रोहणी देवहारी
7 गीता तिवारी
8 तारिका तारम
9 जमुना रावटे
10 जितेंद्र तारम
11 सरोज पुजेरी
12 श्री मान डाल चंद जैन
13 श्रीमान कैलाश सिन्हा
14 अंकालू राम भुआर्य
एक भारत
श्रेष्ठ भारत
आप सभी ग्रामवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ !

पूनम साहू
सरपंच, ग्राम पंचायत
कुरदी
संजय कुमार साहू
पूर्व सरपंच, ग्राम पंचायत कुरदी
उपाध्यक्ष, अर्जुंदा मंडल भाजपा
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
राजकुमार कश्यप
उपसरपंच, ग्राम पंचायत कुरदी
राजेन्द्र कुमार पिपरिया सचिव
ग्राम पंचायत कुरदी
ग्राम पंचायत कुरदी

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
15TH OF AUGUST
INDEPENDENCE DAY
ग्राम पंचायत जगन्नाथपुर
श्रीमती देवकुंवर कोसिमा
सरपंच
श्री खिलेश कुमार सोनबोईर
सचिव
श्री मनोज कुमार शुकतेल
उपसरपंच
पंचगण - ठाकुर राम देशमुख, श्रीमती बिंदु बाई हिरवानी, खेमलता महार, दानेश्वरी देशमुख, मंजू यादव, हेमलता कोसिमा, हरिराम साहू, श्रीमती भोज बाई देशमुख, पद्मिनी देशमुख, टामेश्वरी देशमुख, मोनिका साहू, राधा ठाकुर, शशिकला मिश्रा, यशवंत कुमार गायकवाड़, अरूण कुमार साहू, घनश्याम ठाकुर, कंप्यूटर ऑपरेटर- हिना साहू, भृत्य - संजीव गायकवाड़ एवं समस्त ग्रामवासी

आओ मिलकर प्रण करें,
देश को स्वच्छ, सशक्त और समृद्ध बनाएं,
देश की एकता, अखंडता और
स्वाभिमान को सदैव बनाए रखें।
15 अगस्त
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
ना पूछो जमाने को
क्या हमारी कहानी है,
हमारी पहचान तो बस इतनी है कि
हम भारतीय हैं और
हमारा अभिमान है तिरंगा!
श्रीमती दमयंती सुभाष हरदेल
सभापति जल जतन एवं स्वच्छता समिति
सदस्य, जनपद पंचायत बालोद

जिला सरपंच संघ बालोद

श्री कांतिभूषण साहू
अध्यक्ष, जिला सरपंच संघ (भरदाकला)

श्रीमती अर्चना मरकाम,
उपाध्यक्ष, कोटागांव

श्रीमती सीमा साहू
उपाध्यक्ष(सोहपुर)

श्री धर्मेन्द्र रामटेके
उपाध्यक्ष (तरौद)

श्री रुपेश कुमार सिन्हा,
उपाध्यक्ष,(नाहंदा)

श्रीमती प्रीति ग्वालियर,
उपाध्यक्ष,मुन्द्रेरा

श्री डेविड बारले,
कोषाध्यक्ष (रायपुरा)

श्री दिलीप कुमार
डहरे,सचिव(निपानी)

श्रीमती बीरन बाई नेताम,
सचिव(खड़बतर)

श्री तुलसी राम मरकाम,
सहसचिव, (कारुटोला)

श्रीमती ज्योति यादव,
सहसचिव(सुखरी)

श्री टेमन साहू
मीडिया प्रभारी (बिरेतरा)

मीडिया प्रभारी
श्री कवल कोलियारा(गिधाली)

कार्यकारिणी सदस्यगण

श्री लेखराम साहू
अध्यक्ष, सरपंच संघ
गुण्डरदेही (भोथीपार)

श्रीमती पुष्पलता बघेल
अध्यक्ष ,सरपंच संघ
डौण्डी लोहारा (हथौद)

श्री कृष्णा साहू
अध्यक्ष, सरपंच संघ
बालोद (पिपरछेड़ी)

श्रीमती ममता मण्डावी
अध्यक्ष, सरपंच संघ
डौण्डी (घोटिया)

श्री डाकेश साहू
अध्यक्ष, सरपंच संघ
गुरुर (भानपुरी)

श्रीमती निशा
मार्कण्डेय, रुदा

श्रीमती चित्रलेखा
अविनाश गंजीर,बोदल

श्री सुनील
बेलचंदन, सिब्दी

श्री किशोर कुमार साहू,
बेहाकुंआ

श्रीमती पुष्पा गोविन्द
सिन्हा कलंगपुर

श्रीमती गिलेश
कोसले,बंजारी

श्री जालम सिंह
पडोटी, लिमोरा

श्री खेमलाल देवांगन- अरकार, श्री राजेन्द्र साहू - बोहारडीह, श्री डोमन लाल गंगबेर- भूलनडबरी ,श्रीमती श्वेता पोर्ते - जुन्नापानी, श्रीमती निर्मला ठाकुर- खैरा, श्री लक्ष्मीनारायण भेलवा- कोरगुड़ा,श्री दिलीप बांडे - खपरी, श्री लालाराम सारथी- सु.परसाडीह, श्री चित्रकांत ठाकुर -भैंसबोड़, श्रीमती माधुरी ठाकुर- आडेझर ,श्रीमती चंद्रलेखा पायला- कांडे,श्रीमती ममता कोर्राम- सुअरबोड़, श्रीमती तारादेवी दर्रो- सुरडोंगर, श्रीमती धनेश्वरी निषाद- नेवारी कला, श्रीमती दीपमलिका साहू- चारवाही, श्री लुमन साहू- भेड़िया नवागांव, श्री रमेशर साहू- बघेली, श्रीमती पेमीन साहू- कुथरेल, श्रीमती राजेश्वरी पटोदी- सल्होनी, श्री कांशीराम साहू- चीचा, श्री पदुम लाल साहू- कान्दुल, श्रीमती मनीषा देवांगन- डुंडेली, श्रीमती सारिका देवांगन- भेंडी , श्री जितेन्द्र चन्द्राकर- कसौंदा, श्रीमती श्यामाबाई मार्कण्डेय-भोइनापार, श्रीमती संगीता नेताम-साल्हे, श्री शैलेन्द्र कुमार निषाद-तवेरा, श्रीमती जितेश्वरी ठाकुर -पेंड्री, श्रीमती वंदना ठाकुर- खैरवाही, श्रीमती पेमीन साहू- चिरईगोड़ी, श्री डिलेश्वर प्रसाद साहू- किलेपार

संरक्षकगण- श्रीमती लता कोर्राम - देवारभाट, श्री सेवत नेताम - बगईकोन्हा, श्री खोमन लाल सिन्हा- धानापुरी,श्री त्रिलोकी राम साहू- पेंडरवानी, श्री बालचंद टण्डन-कंवर, श्री रेवा रावटे- भर्रीटोला 36, श्री चन्द्रहास चापिरा- जेवरतला, श्री हेमन्त साहू- अर्जुनी, श्री दूषण साहू- भाठागांव बी., श्री टोमन लाल सोनबोईर- डांडेसरा, श्री डोमन देशमुख-दुनिया

आप सभी देश-वासियों को आजादी के इस पावन पर्व 15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं, जय-हिन्द, जय-भारत, जय-छत्तीसगढ़